हिन्दी साप्ताहिक समाचार पत्र | www.suryabulletin.com | suryabulletin@gmail.com

सूर्या बुलेटिन

सच जो दिल दहला दे...

वर्ष : 1 अंक : 32 | गाजियाबाद, बुधवार, 12 से 18 जून-2024 | Tital Code : UPHIN40005 | पृष्ठ : 8 | मूल्य : 2 रुपये

मोदी 3.0 कैबिनेट में जातीय समीकरण का रखा गया खास ध्यान

एनडीए में शामिल सभी दलों के नेताओं को मिली मंत्रिमंडल में जगह

सूर्या बुलेटिन

गाजियाबाद। नरेंद्र दामोदर दास मोदी ने तीसरी बात भारत के प्रधानमंत्री पद की शपथ ले ली है। इसके साथ ही 71 मंत्रियों ने भी पद और गोपनीयता की शपथ ली। नरेंद्र मोदी ने तीसरी बार प्रधानमंत्री पद की शपथ लेकर जवाहर लाल नेहरू के प्रधानमत्री बनने के रिकॉर्ड की बराबरी कर ली है। मोदी के साथ शपथ लेने वालों में 30 कैबिनेट मंत्री, 5 स्वतंत्र प्रभार और 36 राज्य मंत्री शामिल हैं. मोदी कैबिनेट में जातीय समीकरण का खास ध्यान रखा है।

मोदी कैबिनेट 3.0 में 28 जनरल, 27 ओबीसी, 10 अनुसूचित जाति और 5 अनुसूचित जनजाति के मंत्री बनाए गए हैं। सबसे ज्यादा ब्राह्मण समुदाय से मंत्री बनाए गए। नरेंद्र मोदी की कैबिनेट में पांच अल्पसंख्यकों को शामिल किया गया है, मगर इनमें कोई मुसलमान नहीं है। खास बात यह भी है कि बीजेपी और उसे समर्थन दे रहे दलों से कोई मुसलमान उम्मीदवार लोकसभा चुनाव ही नहीं जीता है।

अगर जाति की बात करें तो मोदी कैबिनेट में ब्राह्मण जाति से आने वाले 8 नेता कैबिनेट में शामिल किए गए हैं। 2 नेता भूमिहार (ललन सिंह और गिरिराज सिंह) को कैबिनेट में जगह मिली है। दोनों ही भूमिहार नेता बिहार से आते हैं। 3 राजपूतों को भी शामिल किया गया है. एक डोगरा राजपूत जितेंद्र सिंह को भी जगह दी है। इस बार दो कुर्मी मंत्री शामिल किया गया है। इसके

दल, जाति, राज्यों का भी रखा गया पूरा ख्याल

अलावा मोदी कैबिनेट मे 2 जाट और 2 सिख मंत्री शामिल किए गए हैं। यूपी के जयंत चौधरी जाट समुदाय से आते हैं। हरदीप सिंह पुरी और रवनीत सिंह बिट्टू सिख समुदाय से आते हैं। 2 मराठा, 2 वोकालिंगा और एक लिंगायत समुदाय से आने वाले मंत्री शामिल हैं। एक महादलित, एक निषाद, एक लोधी, दो यादव और एक मतुआ समुदाय से आने वाले मंत्रियों को नाम भी इस लिस्ट में है। साथ ही मोदी कैबिनेट में एक अहीर, अंक गुर्जर, एक खटिक, दो बनिया और एक पाटीदार को मौका मिला है।

महिलाओं का मोदी सरकार में कितना दबदबा

लोकसभा चुनाव 2024 में कुल 74 महिलाएं जीतकर संसद पहुंची हैं। ये सभी महिलाएं बीजेपी, कांग्रेस समेत 14 राजनीतिक पार्टियों के टिकट पर मैदान में थीं। इनमें से 43 पहली बार चुनाव जीती हैं। सबसे ज्यादा 31 महिलाओं ने बीजेपी के टिकट पर जीत हासिल की। इसके अलावा कांग्रेस से 13, टीएमसी से 11 और समाजवादी पार्टी की पांच महिला सांसद बनीं। यानी कि 18वीं लोकसभा में 13.6 प्रतिशत महिला सांसद हैं। मोदी कैबिनेट में कुल 7 महिलाओं को मंत्री बनाया गया है। ये महिला मंत्री हैं निर्मला सीतारमण, अन्नपूर्णा देवी, रक्षा खड़से, सावित्री ठाकुर, अनुप्रिया पटेल, नीमूबेन बंभानिया और शोभा करंदलाजे। इनमें से अनुप्रिया पटेल के अलावा सभी महिलाएं बीजेपी की सदस्य हैं। यानी कि बीजेपी ने अपनी 31 महिला सांसदों में से 6 को मंत्रिमंडल में जगह दी है। हालांकि 2014 और 2019 में 9-9 महिला सांसदों ने मोदी मंत्रिमंडल में शामिल हुई थी।

मोदी कैबिनेट में गठबंधन के कितने मंत्री

2014 और 2019 में भी एनडीए सरकार बनी थी, मगर तब दोनों चुनाव में बीजेपी ने अकेले दम पर बहुमत हासिल किया था। इस बार बीजेपी 240 (बहुमत से 32 सीट कम) सीट ही जीत सकी। 2014 और 2019 में सहयोगी दलों के 5 और 4 नेता मंत्री बनाए गए थे। 2024 में 13 सहयोगी पार्टियों के 11 नेताओं को मंत्रिमंडल में शामिल किया गया है। बीजेपी ने अपने 60 मंत्रियों को मंत्रिमंडल में जगह दी है। 30 कैबिनेट मंत्री में 25 बीजेपी से हैं और 5 सहयोगी दल के नेता। 5 राज्यमंत्री (स्वतंत्र प्रभार) में से तीन बीजेपी से हैं और दो सहयोगी दल से हैं। 36 राज्यमंत्री में से 32 बीजेपी और 4 सहयोगी दल से हैं। सहयोगी दल में टीडीपी, जेडीयू, एलजेपी (रामविलास), अपना दल (एस), एचएएम, जेडीएस, शिवसेना, आरएलडी, आरपीआईए के सांसदों को मौका मिला है। जेडीयू और टीडीपी को 2-2 मंत्री पद मिले. इनमें एक कैबिनेट मंत्री और एक राज्यमंत्री शामिल है।

किस राज्य से कितने मंत्री

मोदी सरकार में सबसे ज्यादा 11 मंत्री उत्तर प्रदेश से शामिल किए गए हैं। इसके बाद बिहार से आठ मंत्री और गुजरात से छह मंत्री हैं. महाराष्ट्र, मध्य प्रदेश और कर्नाटक से 5-5 मंत्री हैं। राजस्थान से 4 मंत्री मंत्रिमंडल में शामिल हुए हैं। हरियाणा, आंध्र प्रदेश, उड़ीसा के 3-3 नेताओं को जगह मिली है। असम, तेलंगाना, झारखंड, पश्चिम बंगाल से 2-2 मंत्री चुने गए हैं। वहीं पंजाब, दिल्ली, गोवा, तमिलनाडु, छत्तीसगढ़, अरुणाचल प्रदेश और उत्तराखंड से 1-1 नेता को ही मोदी मंत्रिमंडल में शामिल किया गया है। 2019 लोकसभा चुनाव में जीत हासिल करने के बाद मोदी सरकार में यूपी और महाराष्ट्र से सबसे ज्यादा 9-9 मंत्री शामिल हुए थे। बिहार, कर्नाटक, मध्य प्रदेश से 5-5 मंत्रियों को जगह दी थी। गुजरात, हरियाणा, राजस्थान के 3-3 नेता मंत्रिमंडल में चुने गए थे। पंजाब, झारखंड, पश्चिम बंगाल से 2-2 नेता आए। वहीं दिल्ली, उत्तराखंड, गोवा, जम्मू-कश्मीर, आंध्र प्रदेश, तेलंगाना, छत्तीसगढ़, असम, ओडिशा से एक-एक मंत्री को जगह मिली थी।

सबसे बड़ी मंत्रिपरिषद की शपथ

21वीं सदी में 5 बार लोकसभा चुनाव हो चुके हैं। 2024 में 18वीं लोकसभा के लिए प्रधानमंत्री समेत सबसे ज्यादा 72 नेताओं ने एक दिन में शपथ ली, ये 21वीं सदी में अब तक की सबसे बड़ी मंत्रिपरिषद है। इससे पहले 2004 में 68, 2009 में 60, 2014 में 46 और 2019 में 58 नेताओं का एक दिन में शपथग्रहण हुआ था।

देश की सबसे बड़ी पंचायत में प्रधानमंत्री और नेता प्रतिपक्ष एक ही राज्य से

सूर्या बुलेटिन

गाजियाबाद। केंद्र सरकार की कैबिनेट की शपथ के साथ ही लोकसभा में विपक्ष का चेहरा भी स्पष्ट हो गया है। कांग्रेस की ओर से राहुल गांधी को सदन में नेता प्रतिपक्ष चुना गया है। जिसके बाद राहुल गांधी अपने पिता और भूतपूर्व प्रधानमंत्री राजीव गांधी और भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस की पूर्व अध्यक्ष सोनिया गांधी के नक्शे कदम पर चलेंगे। साल 1952 के बाद से आज तक दो बार ऐसा हुआ है जब देश का प्रधानमंत्री और लोकसभा में नेता विपक्ष एक ही राज्य से हो। साल 1969 तक लोकसभा में नेता विपक्ष को आधिकारिक दर्जा नहीं दिया जाता था।

सदन में नेता प्रतिपक्ष की जिम्मेदारी रायबरेली से सांसद राहुल गांधी संभालेंगे

साल 1989 में ऐसा पहली बार हुआ जब देश के पीएम और लोकसभा में नेता विपक्ष एक ही राज्य से थे। जब 1989 के चुनाव में विश्वनाथ प्रताप सिंह ने देश के सातवें प्रधानमंत्री पद की शपथ ली। उस सरकार में वीपी सिंह की अगुवाई वाले

जनता दल को भारतीय जनता पार्टी और सीपीआईएम ने बाहर से समर्थन दिया। हालांकि कांग्रेस उस वक्त सबसे बड़ी पार्टी बनकर उभरी और उसे 197 सीटें मिलीं थीं लेकिन, तत्कालीन कांग्रेस नेता राजीव गांधी ने विपक्ष में रहने का फैसला किया। इतना ही नहीं वह खुद सदन में नेता विपक्ष रहे। राजीव गांधी 18 दिसंबर 1989 से 23 दिसंबर 1990 तक नेता विपक्ष रहे. एक ओर जहां वीपी सिंह यूपी के फतेहपुर से सांसद थे, तो राजीव गांधी अमेठी लोकसभा निर्वाचन क्षेत्र का प्रतिनिधित्व कर रहे थे।

दूसरी बार ऐसा 1999 में हुआ

इसके बाद साल 1999 के लोकसभा चुनाव में भारतीय जनता पार्टी की अगुवाई में एनडीए की सरकार आई तब यूपी के लखनऊ से सांसद चुने गए अटल बिहारी वाजपेयी देश के प्रधानमंत्री बने। दूसरी ओर अमेठी से चुनाव लड़कर संसद पहुंची सोनिया गांधी ने नेता विपक्ष का जिम्मा संभाला। सोनिया गांधी ने 31 अक्टूबर 1999 से 6 फरवरी 2004 तक नेता विपक्ष का जिम्मा संभाला। वह पूरे पांच साल तक लोकसभा में कांग्रेस का नेतृत्व करती रहीं।

विदेश मंत्री डॉ. एस जयशंकर प्रसाद ने बनाया रिकॉर्ड

गाजियाबाद (सूर्या बुलेटिन)। मोदी कैबिनेट में दूसरी बार विदेश मंत्री पद की शपथ लेकर डॉ. एस जयशंकर प्रसाद ने भी रिकॉर्ड बना दिया है। स्वतंत्र भारत में वह पहले ऐसे विदेश मंत्री बन गए हैं, जो लगातार दूसरी बार विदेश मंत्री बने हैं। डॉ. एस जयशंकर प्रसाद शपथ ग्रहण करते ही एक्शन मोड में आ गए। 10 जून से ही वह मंत्रालय पहुंचे और काम शुरू कर दिया। पूर्व प्रधानमंत्री पंडित जवाहर लाल नेहरू ने लगातार 16 साल विदेश मंत्रालय का कार्यभार भी संभाला. हालांकि, वह उसके साथ प्रधानमंत्री के पद पर भी थे इसलिए जयशंकर प्रसाद ऐसे पहले शख्स हैं, जिन्हें पांच साल का कार्यकाल पूरा करने के बाद फिर से विदेश मंत्री की जिम्मेदारी सौंपी गई है। पंडित जवाहर लाल नेहरू ने सितंबर, 1946 से मई, 1964 तक विदेश मंत्रालय संभाला। पूर्व में कई नेता ऐसे हैं, जो एक से ज्यादा बार विदेश मंत्री के पद पर रहे, लेकिन उनका यह कार्यकाल अलग-अलग समय पर था।

कब कौन रहा विदेश मंत्री

विदेश मंत्री	कार्यकाल	प्रधानमंत्री
जवाहर लाल नेहरू	2 सितंबर, 1946 से 27 मई 1964 तक	जवाहर लाल नेहरू
गुलजारीलाल नंदा	27 मई, 1964 से 9 जून, 1964	गुलजारीलाल नंदा (कार्यवाहक प्रधानमंत्री)
लाल बहादुर शास्त्री	9 जून, 1964 से 17 जुलाई, 1964	लाल बहादुर शास्त्री
स्वर्ण सिंह	18 जुलाई, 1964 से 14 नवंबर, 1966	लाल बहादुर शास्त्री, इंदिरा गांधी
एम. सी चगला	14 नवंबर, 1966 से 5 सितंबर, 1967	इंदिरा गांधी
इंदिरा गांधी	6 सितंबर, 1966 से 13 फरवरी, 1969	इंदिरा गांधी
दिनेश सिंह	14 फरवरी, 1969 से 27 जून, 1970	इंदिरा गांधी
स्वर्ण सिंह	17 जून, 1970 से 10 अक्टूबर, 1974	इंदिरा गांधी
यशवंत राव चावण	10 अक्टूबर, 1974 से 24 मार्च, 1977	इंदिरा गांधी
अटल बिहारी वाजपेयी	26 मार्च, 1977 से जुलाई, 1979	मोरारजी देसाई
श्याम नंदन प्रसाद मिश्रा	18 जुलाई, 1979 से 13 जनवरी, 1980	मोरारजी देसाई
पी. वी. नरसिम्हा राव	14 जनवरी, 1980 से 19 जुलाई, 1984	इंदिरा गांधी
इंदिरा गांधी	19 जुलाई, 1984 से 31 अक्टूबर, 1984	इंदिरा गांधी
राजीव गांधी	31 अक्टूबर, 1984 से 24 सितंबर, 1985	राजीव गांधी
बाली राम भगत	25 सितंबर, 1985 से 12 मई, 1986	राजीव गांधी
पी. शिव शंकर	12 मई, 1986 से 22 अक्टूबर, 1986	राजीव गांधी
एन. डी. तिवारी	22 अक्टूबर, 1986 से 25 जुलाई, 1987	राजीव गांधी
राजीव गांधी	25 जुलाई, 1987 से 25 जून, 1988	राजीव गांधी
पी. वी. नरसिम्हा राव	25 जून, 1988 से 2 दिसंबर, 1989	राजीव गांधी
वी. पी. सिंह	2 दिसंबर 1989 से 5 दिसंबर, 1989	वी. पी. सिंह
आई. के. गुजराल	5 दिसंबर, 1989 से 10 नवंबर, 1990	वी. पी. सिंह
विद्या चरण शुक्ला	21 नवंबर, 1990 से 20 फरवरी, 1991	चंद्र शेखर
माधवीसिंह सोलंकी	21 जून, 1991 से 31 मार्च, 1992	पी. वी. नरसिम्हा राव
पी. वी. नरसिम्हा राव	31 मार्च, 1992 से 18 जनवरी, 1993	पी. वी. नरसिम्हा राव
दिनेश सिंह	18 जनवरी, 1993 से 10 फरवरी, 1995	पी. वी. नरसिम्हा राव
प्रणब मुखर्जी	10 फरवरी, 1995 से 16 मई, 1996	पी. वी. नरसिम्हा राव
सिकंदर बख्त	21 मई, 1996 से 1 जून 1996	अटल बिहारी वायजपेयी
आई. के. गुजराल	1 जून 1996 से 18 मार्च, 1998	एच. डी. देवेगौड़ा और आई. के. गुजराल
अटल बिहारी वाजपेयी	19 मार्च, 1998 से 5 दिसंबर, 1998	अटल बिहारी वाजपेयी
जसवंत सिंह	5 दिसंबर, 1998 से 23 जून, 2002	अटल बिहारी वाजपेयी
यशवंत सिन्हा	1 जुलाई, 2002 से 22 मई, 2004	अटल बिहारी वाजपेयी
नटवर सिंह	22 मई, 2004 से 6 नवंबर, 2005	मनमोहन सिंह
मनमोहन सिंह	6 नवंबर, 2005 से 24 अक्टूबर, 2006	मनमोहन सिंह
प्रणब मुखर्जी	24 अक्टूबर, 2006 से 22 मई, 2009	मनमोहन सिंह
एस. एम. कृष्णा	22 मई, 2009 से 26 अक्टूबर, 2012	मनमोहन सिंह
सलमान खुर्शीद	28 अक्टूबर, 2012 से 26 मई, 2014	मनमोहन सिंह
सुषमा स्वराज	26 मई, 2014 से 30 मई, 2019	नरेंद्र मोदी
डॉ. सुब्रमण्यम जयशंकर	30 मई, 2019 से पदस्थ	नरेंद्र मोदी

गृह-रक्षा-विदेश मंत्रालय बीजेपी के पास

सूर्या बुलेटिन

गाजियाबाद। मोदी सरकार की कैबिनेट में प्रमुख विभागों की जिम्मेदारी भाजपा सांसदों को ही सौपी गई है। मोदी कैबिनेट की पहली बैठक के बाद बीजेपी ने गृह मंत्रालय, रक्षा मंत्रालय, विदेश मंत्रालय अपने पास रखे हैं। मोदी की तीसरी कैबिनेट में बहुत ज्यादा बदलाव देखने को नहीं मिला है। भाजपा के बड़े चेहरों को तीसरी कैबिनेट में भी वही जिम्मेदारी मिली है जो दूसरी कैबिनेट में थी। हालांकि तीसरी केबिनेट में गाजियाबाद के सांसद को स्थान नहीं मिला है। जबकि दूसरी कैबिनेट में गाजियाबाद के सांसद वीके सिंह को महत्वपूर्ण जिम्मेदारी दी गई है।

मोदी कैबिनेट में अमित शाह को फिर से गृह मंत्रालय तो राजनाथ सिंह को फिर से रक्षा मंत्रालय की जिम्मेदारी सौंपी गई है। विदेश मंत्रालय एस जयशंकर के पास ही है। वहीं नितिन गडकरी को फिर से सड़क परिवहन

मंत्रालय दिया गया है। अजय टम्टा, हर्ष मल्होत्रा को सड़क परिवहन राज्य मंत्री बनाया गया है। निर्मला सीतारमन को फिर से वित्त मंत्रालय की जिम्मेदारी दी गई है। अश्विनी वैष्णव को रेल मंत्रालय और सूचना एवं प्रसारण मंत्री बनाया गया। हरियाणा के पूर्व मुख्यमंत्री मनोहर लाल खट्टर को दो मंत्रालय दिए गए हैं। उन्हें ऊर्जा और शहरी विकास मंत्री बनाया गया। जीतन राम मांझी को एमएसमई (एमएसएई) मंत्रालय दिया गया है। शोभा करंदलाजे के एमएसएमई राज्य मंत्री होंगी। मध्य प्रदेश के पूर्व मुख्यमंत्री शिवराज सिंह चौहान को कृषि मंत्री बनाया गया है। धर्मेंद्र प्रधान को शिक्षा मंत्री बनाया गया है।

'मैं रुकने के लिए पैदा नहीं हुआ'

कैबिनेट की बैठक से पहले प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने पीएमओ के अधिकारियों के साथ बैठक की थी। इस दौरान उन्होंने कहा था कि जिस टीम ने मुझे 10 साल में इतना कुछ दिया, उसमें नया क्या किया जा सकता है। हम और बेहतर कैसे कर सकते हैं, हम और तेजी से कैसे कर सकते हैं, हम और बेहतर कैसे कर सकते हैं उन सभी पहलुओं पर ध्यान देना होगा। मैं एक नई ऊर्जा, एक नए साहस के साथ आगे बढ़ना चाहता हूं। मैं रुकने के लिए पैदा नहीं हुआ हूं।

किसके पास कौन सा मंत्रालय

नाम	मंत्रालय/विभाग
अमित शाह	गृह मंत्रालय
राजनाथ सिंह	रक्षा मंत्रालय
एस जयशंकर	विदेश मंत्रालय
नितिन गडकरी	सड़क परिवहन मंत्रालय
अश्विनी वैष्णव	सूचना एवं प्रसारण, रेल मंत्रालय
शिवराज सिंह चौहान	कृषि मंत्रालय
निर्मला सीतारमन	वित्त मंत्रालय
मनोहर लाल खट्टर	ऊर्जा, शहरी विकास मंत्रालय
सीआर पाटिल	जलशक्ति मंत्रालय
मनसुख मांडविया	श्रम मंत्रालय
जेपी नड्डा	स्वास्थ्य मंत्रालय
चिराग पासवान	खेल मंत्रालय
किरेन रिजिजू संसदीय	कार्यमंत्री मंत्री
अनुपूर्णा देवी	महिला एवं बाल विकास
राम मोहन	नायडू उड्डयन मंत्रालय
सवार्नंद सोनोवाल	पोर्ट शिपिंग मंत्रालय
शांतनु ढाकुर	पोर्ट शिपिंग मंत्रालय (MoS)
एचडी कुमारस्वामी	भारी उद्योग मंत्रालय

मुख्य सचिव ने जीरो एक्सीडेंट राज्य के विजन के साथ कार्य करने की दी हिदायत

हाईटेक होगी प्रदेश की ट्रैफिक व्यवस्था

देहरादून। मुख्य सचिव राधा रतूड़ी ने परिवहन विभाग से राज्य में सड़क दुर्घटनाओं के बाद हुए डेथ ऑडिट के फलस्वरूप उठाए गए सुधारात्मक कदमों की जानकारी मांगी है। उन्होंने फेसलेस चालान सिस्टम को लागू करने के निर्देश दिए हैं। मुख्य सचिव ने सम्पूर्ण राज्य सीमा एवं सभी मुख्य मार्गों पर एएनपीआर कैमरों के साथ शहरों में ड्रोन कैमरों से ट्रैफिक व्यवस्था की मॉनिटरिंग एवं चालान के निर्देश दिए हैं। शिक्षा विभाग को स्कूलों में सप्ताह में एक दिन बच्चों को सड़क सुरक्षा के सम्बन्ध में जागरूक करने को कहा है। साथ ही ट्रैफिक सिग्नल को एएनपीआर तथा आरएलवीडी सिस्टम से अपग्रेड करने के निर्देश दिए हैं।

सोमवार को सचिवालय में राज्य सड़क सुरक्षा कोष प्रबन्ध समिति की बैठक के दौरान राज्य में सड़क दुर्घटनाओं को न्यूनतम करने के दृष्टिगत मुख्य सचिव राधा रतूड़ी ने दोपहिया वाहनों पर पीछे बैठने वालों के लिए हेलमेट पहनने व चार पहिया वाहन में सभी के लिए सीट बेल्ट के नियम को सख्ती से लागू करने के निर्देश दिए हैं। रोड सेफ्टी बैठक में राज्य की ट्रैफिक व्यवस्था को हाईटेक एवं अपडेट करने के दृष्टिगत मुख्य सचिव ने सभी 13 जिलों में ड्रोन सेवाओं की व्यवस्था, ट्रैफिक सिग्नल को एएनपीआर तथा आरएलवीडी सिस्टम से इंटिग्रेट व अपडेट करने, हाईटेक मोटर बाइक, कैमरों के साथ राडार स्पीड साइन बोर्ड, डिजिटल स्पीड साइन बोर्ड व वेरिएबल मैसेज डिस्पले बोर्ड लगाने, ट्रैफिक पुलिस कर्मियों के लिए बॉडी वॉर्न कैमरा, एल्कोमीटर-ब्रीथ एनालाइजर, पोर्टेबल साउंड सिस्टम जैसे आधुनिकतम टेक्नॉलाजी सिस्टम को लागू करने की वित्तीय एवं सैद्धांतिक स्वीकृति दी।

राधा रतूड़ी ने परिवहन एवं पुलिस विभाग को सड़क सुरक्षा एवं यातायात जागरूकता के लिए अधिकाधिक सोशल मीडिया के माध्यम से जनजागरूकता के निर्देश दिए। जीरो एक्सीडेंट राज्य के विजन के साथ कार्य करने की सख्त हिदायत देते हुए मुख्य सचिव ने लोक निर्माण विभाग को वित्तीय वर्ष 2024-25 के लिए सुरक्षात्मक कार्यों के तहत क्रैश बैरियर लगाने, रोड डेलीनेटर व कैट आई, ब्लैक स्पॉट पर सुधारात्मक कार्य करने, पैरापिट एवं कॉशनरी साईन बोर्ड, रोड फर्नीचर रोड मार्किंग आदि कार्यों की वित्तीय एवं सैद्धांतिक स्वीकृति दी। मुख्य सचिव राधा रतूड़ी ने हिट एण्ड रन तथा गुड समेरिटन के व्यापक प्रचार-प्रसार के निर्देश दिए। उन्होंने राज्य की मागों पर वैज्ञानिक तरीके से गति सीमा के निर्धारण की कार्ययोजना पर तत्परता से कार्य करने के निर्देश दिए।

बैठक में जानकारी दी गई कि पिछले वर्ष 67 गुड समेरिटन को 10 लाख की धनराशि आवंटित की गई है। वर्ष 2024-25 में गुड़ समेरिटन योजना के लिए 10 लाख की धनराशि प्रस्तावित है। विदित है कि गुड समेरिटन को प्रोत्साहित करने के लिए उत्तराखंड में सड़क परिवहन और राजमार्ग मंत्रालय, भारत सरकार की गुड समेरिटन स्कीम को विभागीय स्तर पर लागू किया गया है। इसमें गुड समेरिटन को नकद इनाम और प्रशंसा पत्र दिया जाता है।

उत्तराखंड राज्य में भी विभागीय गुड समेरिटन पुरस्कार योजना प्रारम्भ की गई है। इसके अन्तर्गत यदि कोई व्यक्ति निम्नलिखित कार्यों में से कोई कार्य करता है तो उत्तराखंड पुलिस उसे नकद इनाम और प्रशंसा पत्र प्रदान करेगी। सड़क दुर्घटना में किसी व्यक्ति को प्राथमिक चिकित्सा प्रदान करना। सड़क दुर्घटना के शिकार व्यक्ति/व्यक्तियों का राहत एवं बचाव कार्य कर समय से अस्पताल पहुंचाना।

सड़क दुर्घटना में घायल व्यक्ति को एम्बुलेंस की उपलब्धता न होने की स्थिति में निजी वाहन से अस्पताल पहुंचाना। सड़क दुर्घटना में घायल व्यक्ति को आवश्यकता पड़ने पर रक्तदान करना या रक्तदान का प्रचार-प्रसार कर सम्बन्धित ब्लड ग्रुप वाले रक्तदाता की व्यवस्था करना। दुर्घटना में घायल व्यक्ति की आर्थिक रूप से सहायता करना आदि। सड़क दुर्घटना की रोकथाम के प्रयास में योगदान कराना। बैठक में पुलिस महानिदेशक अभिनव कुमार, प्रमुख सचिव रमेश कुमार सुधांशु, सचिव अरविन्द सिंह हयाकी, वी षणमुगम आदि थे।

अभाविप इविवि ने किया नीट परीक्षा में गड़बड़ी को लेकर विरोध प्रदर्शन

प्रयागराज। अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद (अभाविप) के कार्यकर्ताओं ने सोमवार को नीट परीक्षा परिणामों में हुई धांधली की सीबीआई जांच एवं दोषियों पर कार्रवाई के लिए छात्रसंघ भवन पर विरोध प्रदर्शन किया। अभाविप के प्रदेश मीडिया संयोजक अभिनव मिश्र ने कहा कि इस परीक्षा के आयोजन के दिन ही देश के अलग-अलग हिस्सों में गड़बड़ियां सामने आईं थी तथा अलग-अलग स्थानों पर सॉल्वर पकड़े गए। साथ ही कुछ स्थानों पर प्रश्न पत्र बांटने आदि में भी गड़बड़ी मिली। अभाविप,नीट परीक्षा के अभ्यर्थियों की उचित मांगों के साथ है।

उन्होंने कहा कि कई जगहों पर ऐसी गड़बड़ी होने से यह भी स्पष्ट हो गया कि राष्ट्रीय परीक्षा एजेंसी ने परीक्षा के आयोजन के लिए आवश्यक तैयारियां नहीं की थीं। नीट के परीक्षा परिणाम में एक ही सेंटर से कई टॉपर्स होने से इस वर्ष के परीक्षा परिणाम पर कई तरह से संदेह उत्पन्न हो रहे हैं। राष्ट्रीय परीक्षा एजेंसी पर पहले भी यूजीसी-नेट आदि परीक्षाओं के आयोजन के संदर्भ में सवाल खड़े हुए थे।

परीक्षा प्रकिया व परिणाम की शीघ्र सीबीआई जांच एवं दोषियों पर हो कार्रवाईः अभाविप

अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद इविवि के इकाई अध्यक्ष आलोक त्रिपाठी ने कहा कि नीट परीक्षा परिणाम आने के बाद विद्यार्थियों की आत्महत्या करने के मामले हुए हैं, यह अत्यंत दुखद है।

नीट जैसी महत्वपूर्ण परीक्षा जिसमें बड़ी संख्या में विद्यार्थी सम्मिलित होते हैं तथा इसकी तैयारी हेतु कड़ी मेहनत करते हैं। ऐसे में इस प्रकार के प्रकरण की गड़बड़ी बिल्कुल भी स्वीकार्य नहीं की जाएगी। इस मामले की सीबीआई जांच कराकर, दोषियों पर कठोरतम कार्रवाई करनी चाहिए। इसमें जो गड़बड़ियां हुईं हैं,उसके लिए इस पूरे विषय से सम्बद्ध ब्यूरोक्रेसी जिम्मेदार है।

इस दौरान काशी प्रांत सह मंत्री आंचल सिंह, इविवि इकाई उपाध्यक्ष अखिलेश कुशवाहा, कला संकाय अध्यक्ष आज़ाद वत्स, प्रकाश सिंह, पवन, हिमांशु आदि कार्यकर्ता मौजूद रहे।

'वैश्विक हिंदू राष्ट्र महोत्सव' में शामिल होंगे 1000 से अधिक हिंदू संगठन

वाराणसी। हिंदू जनजागृति समिति की पहल पर द्वादश 'अखिल भारतीय हिंदू राष्ट्र अधिवेशन' इस वर्ष 24 से 30 जून के बीच श्री विद्याधिराज सभागृह, श्री रामनाथ देवस्थान, बांदोडा, फोंडा, गोवा में आयोजित किया गया है। इस अधिवेशन में 25 राज्यों से 1000 से अधिक हिंदू संगठन भागीदारी करेंगे।

सोमवार को यह जानकारी महोत्सव के आयोजक प्रो. महावीर ने दी। उन्होंने बताया कि अब तक हुए 11 हिंदू अधिवेशनों को प्रति वर्ष मिलनेवाला प्रतिसाद बढ़ता ही जा रहा है। इन अधिवेशनों के कारण ही हिंदू संगठन संगठित हुए हैं। इन अधिवेशनों की विशेषता यह है कि नेपाल, श्रीलंका, मलेशिया, बांगलादेश एवं अन्य देशों से भी संत, हिन्दुत्वनिष्ठ संगठनों के प्रतिनिधि, विचारक आदि इनमें सम्मिलित हुए हैं। उन्होंने कहा कि भारत आज तीसरे क्रमांक की आर्थिक महासत्ता होने की दृष्टि से अग्रसर है। ऐसा होते हुए भी जगत में हिंदूओं पर हो रहे अत्याचार कम नहीं हुए। वरन उसमें वृद्धि ही हो रही है। हिंदू धर्म को 'डेंगू, मलेरिया', जैसे रोगों की उपमा देकर उसे समाप्त करने की भाषा बोली जा रही है। प्रति वर्ष लाखों हिंदूओं को धोखा देकर धर्मांतरण किया जा रहा है। कभी कला स्वतंत्रता के नाम पर फिल्म, धारावाहिक आदि के माध्यमों से हिंदूओं के देवताओं का अनादर किया जाता है, तो दूसरी ओर भारतीय अर्थव्यवस्था को खोखला करने के लिए 'हलाल अर्थव्यवस्था' खड़ी कर हिंदूओं को हलाल खाद्य पदार्थ लेने के लिए बाध्य किया जाता है।

सीबीआई अधिकारी बताकर अधिवक्ता की पत्नी से 4 लाख की ठगी

मुरादाबाद। महानगर के थाना मझोला क्षेत्र के मिलन विहार निवासी अधिवक्ता सत्यपाल सिंह यादव ने सोमवार को थाना मझोला पुलिस को तहरीर दी। इसमें उसने बताया कि उनका बेटा बांग्लादेश के ढाका में मल्टीनेशनल कंपनी में जॉब करता है। उनकी पत्नी सरोज यादव के पास रविवार को एक अंजान नंबर से कॉल आई। इस कॉल को इंटरनेट के माध्यम से किया गया था। इस कारण वह समझ नहीं पाई और बिना सोचे-समझे काल रिसीव कर लिया। ठग ने महिला से कहा कि वह सीबीआई अधिकारी बोल रहा है। आपका बेटा विदेश में पकड़ा गया है। अगर उसे बचाना चाहते हैं तो पांच लाख रुपये तुरंत ट्रांसफर कर दें। घबराहट में महिला ने आरोपित के बताए खाता संख्या में चार लाख रुपये ट्रांसफर कर दिए। एक लाख और ट्रांसफर करने के लिए उस नंबर पर फोन किया तो वह नम्बर लगा ही नहीं। इसके बाद जब उसने बेटे से बात की तो मामला ठगी का निकला तो महिला ने घटना के संबंध में पति को जानकारी दी। थाना मझोला प्रभारी केके वर्मा ने बताया कि मामले में अधिवक्ता की तहरीर मिल गई है। जांच के लिए थाना साइबर क्राइम को लगाया गया है, जल्द ही खुलासा किया जाएगा।

बाबा विश्वनाथ दरबार में काशीवासियों के दर्शन के लिए एक द्वार निर्धारित होः कांग्रेस

इंडी गठबंधन के कार्यकर्ताओं ने मैदागिन से मंदिर तक की पदयात्रा

वाराणसी। श्री काशी विश्वनाथ मंदिर में काशीवासियों के दर्शन के लिए एक गेट निर्धारित करने की मांग को लेकर सोमवार को इंडी गठबंधन के कार्यकर्ताओं ने पदयात्रा निकाली। मैदागिन चौराहे पर स्थित पूर्व प्रधानमंत्री राजीव गांधी की प्रतिमा के पास से बाबा विश्वनाथ मंदिर के गेट नंबर चार तक निकली पदयात्रा में कार्यकर्ता उज्जैन में महाकाल के दर्शन वाली व्यवस्था काशी में भी लागू करने की मांग की।

पदयात्रा में शामिल कांग्रेस के वाराणसी महानगर अध्यक्ष राघवेन्द्र चौबे ने कहा कि काशीवासियों के लिए बाबा विश्वनाथ के दर्शन के लिए सुगम एवं निःशुल्क व्यवस्था की मांग की गई है। इसमें मंदिर के किसी एक द्वार को चिन्हित करने के साथ काशीवासियों का कोई एक आईडी देख मंदिर में प्रवेश देने के लिए लम्बे समय से पार्टी मुखर है। उन्होंने कहा कि जिस तरह से उज्जैन में महाकाल के दर्शन करने वाले स्थानीय निवासियों के लिए मंदिर प्रबन्धन ने नई व्यवस्था बनाई है। वहीं व्यवस्था काशी में भी लागू होना चाहिए। उज्जैन महाकाल मंदिर में वहां के स्थानीय निवासियों के लिए मंदिर में प्रवेश करने के लिए स्थानीय आधार कार्ड या अन्य कोई आईडी दिखलाना होगा, तभी प्रवेश की अनुमति मिलेगी। ठीक उसी प्रकार से काशी में बाबा विश्वनाथ के दर्शन के लिए एक द्वार काशीवासियों के लिए भी सुनिश्चित की जाय, जहां काशीवासी अपना आधार कार्ड या अन्य कोई आईडी दिखा कर निःशुल्क दर्शन कर सकें।

उन्होंने बताया कि कांग्रेस इस कार्य के लिए काफी समय से प्रयासरत है। जानकारी प्राप्त हुई है कि वाराणसी मंडलायुक्त के अगुवाई में यहां के प्रशासनिक अधिकारियों के एक दल ने उज्जैन जाकर उस व्यवस्था को देखा भी है। लेकिन कहीं न कही कांग्रेस के लोगों को इसका श्रेय जाएगा, इस वजह से लगातार इसमें हीला-हवाली की जा रही है।

अस्पताल की इमारत का अवैध रूप से निर्माण

शास्त्रीनगर में बिना नक्शा पास करवाए बन रही इमारत

सूर्या बुलेटिन

गाजियाबाद। जीडीए की अनदेखी के चलते गाजियाबाद में लगातार अवैध निर्माण हो रहे हैं। जीडीए अधिकारियों की सांठगांठ के कारण इन अवैध निमार्णों के खिलाफ किसी तरह की कार्रवाई नहीं होती है। अब अवैध निर्माण का मामला शास्त्री नगर के एससी-1 में सामने आया है। रिहायशी इलाके में कॉमर्शियल एक्टिविटी के लिए इमारत का निर्माण नहीं किया जा सकता है। यहां, नियमों के विपरीत अस्पताल का निर्माण किया जा रहा है। यह निर्माण कार्य 60 फीसदी से ज्यादा पूरा हो चुका है और देखने से यह लगता है कि यह निर्माण बिना नक्शा पास करवाए किया जा रहा है।

शास्त्री नगर में हापुड़ चुंगी से थोड़ा आगे सिद्धी विनायक हार्ट केयर एंड मैटरनिटी अस्पताल का निर्माण कार्य चल रहा है। जिस प्रकार से निर्माण हो रहा है, उसे देखने से साफ प्रतीत होता है कि इस इमारत के निर्माण के लिए नक्शा तक पास नहीं करवाया गया है। अस्पताल की इमारत का निर्माण गलत तरीके से हो रहा है, जिससे भविष्य में मरीजों और उनके तीमारदारों के लिए खतरा उत्पन्न हो सकता है। निर्माण कार्य के दौरान भी सुरक्षा के मानकों का ध्यान नहीं रखा जा रहा है। शहरी क्षेत्र में मुख्य सड़क के पास होने वाले इस निर्माण पर भी जीडीए अधिकारियों की निगाह नहीं पड़ी है। या फिर जीडीए अधिकारियों की सांठ गांठ से बिना नक्शा पास करवाए इस इमारत का निर्माण किया जा रहा है। इस संबंध में जब जीडीए अधिकारियों से बात की गई तो उन्होंने जानकारी होने से ही इनकार कर दिया। जिससे साफ है कि इस अवैध रूप से बन रही इमारत के निर्माण कार्य को जीडीए अधिकारियों की मूक सहमती है। निर्माण के बाद सुविधा शुल्क के जरिए नक्शा पास करवा लिया जाएगा। शहरी क्षेत्र में मुख्य सड़क के पास यह हाल है तो देहात इलाकों में तो अवैध निर्माण होना कोई बड़ी बात नहीं है। अपनी बसाई रिहायसी कॉलोनियों में जन सुविधाएं तक उपलब्ध नहीं करवा पा रहा जीडीए अब इस तरह के अवैध निमार्णों की ओर से भी आंखें मूंदे बैठा है।

राष्ट्रीय पार्टियों को भी धूल चटा दी

सिक्किम विस चुनाव में प्रेम सिंह के नेतृत्व में जीतीं 31 सीटों

32 सीटों वाली विधानसभा में भाजपा, कांग्रेस को एक भी सीट नहीं मिल सकी

सूर्या बुलेटिन

गाजियाबाद। लोकसभा चुनावों के परिणाम के साथ ही सिक्किम विधानसभा को नजीतों ने भी भाजपा को बुरी तरह से झकझोर कर दिया है। सिक्किम विधानसभा चुनाव में भाजपा अपना खाता तक नहीं खोल सकी। यहां तक कि कांग्रेस को भी यहां पैर जमाने की मौका नहीं मिला। 32 विधानसभा सीटों वाले सिक्कम में 31 सीटें सिक्किम क्रांतिकारी मोर्चा ने जीती हैं। सिक्किम क्रांतिकारी मोर्चा के प्रेम सिंह तमांग ने पूरे विपक्ष को एक सीट पर समेट कर रख दिया है।

सिक्किम की जीत का कोई नायक है तो वो हैं प्रेम सिंह तमांग, जिन्होंने सिक्किम में विधानसभा की 32 सीटों में से 31 सीटों पर जीत दर्ज की है। सिक्किम के लोग उन्हें प्रेम सिंह गोले भी कहते हैं। प्रेम सिंह गोले किसी राजनीतिक परिवार से ताल्लुक नहीं रखते हैं, बल्कि उन्होंने तो अपने करियर की शुरूआत एक शिक्षक के तौर पर की थी। 1993 में जब पवन कुमार चामलिंग सिक्किम में एक नई पार्टी बना रहे थे सिक्किम डेमोक्रेटिक फ्रंट, एसडीएफ तो प्रेम सिंह तमांग नौकरी से इस्तीफा देकर राजनीति में उतर गए और पवन कुमार चामलिंग के साथ मिलकर पार्टी बनाने में भूमिका अदा की।

तब उन्हें पार्टी का वाइस प्रेसिडेंट बनाया गया। 1994 में प्रेम सिंह तमांग विधायक बन गए, फिर मंत्री बने और चूंकि एसडीएफ सिक्किम के चुनावों में लगातार जीत दर्ज करती रही, तो पवन कुमार चामलिंग लगातार मुख्यमंत्री भी बनते रहे और 2009 तक प्रेम सिंह तमांग भी चामलिंग सरकार में मंत्री बनते रहे।

सिक्किम क्रांतिकारी मोर्चा बनाया, मिली जीत

4 फरवरी 2013 को प्रेम सिंह गोले ने अपनी नई पार्टी बनाई और नाम दिया सिक्किम क्रांतिकारी मोर्चा। इसी पार्टी से गोले ने 2014 का चुनाव लड़ा। नई-नवेली पार्टी ने 32 में से 10 सीटों पर जीत दर्ज कर ली और प्रेम सिंह गोले नेता प्रतिपक्ष बन गए। हालांकि 2016 में प्रेम सिंह गोले को भ्रष्टाचार के मामले में जेल जाना पड़ा। सजा हुई तो वो सिक्किम के पहले ऐसे नेता बन गए, जिन्हें सजा होने के बाद विधायक पद से अयोग्य घोषित किया गया।

प्रेम सिंह गोले ने विपक्ष को कर दिया धराशाई

गोले ने वापसी की और 2019 के विधानसभा चुनाव में गोले की पार्टी सिक्किम क्रांतिकारी मोर्चा ने 17 सीटें जीत लीं। गोले पहली बार मुख्यमंत्री बने। उन्होंने पवन चामलिंग की करीब 24 साल पुरानी सत्ता को उखाड़ दिया और खुद मुख्यमंत्री बन गए।

अब 2024 के चुनाव हुए, तो गोले ने 32 में से 31 सीटें जीतकर पूरे विपक्ष को ही नेस्तनाबूद कर दिया है। रही बात उस एक शख्स की, जो प्रेम सिंह गोले की इस आंधी में भी डटकर खड़ा रहा, तो उसका नाम है तेनजिंग नोरबू। वो सिक्किम डेमोक्रेटिक फ्रंट के नेता हैं, जो श्यारी विधानसभा से चुनाव लड़े थे। महज 1314 वोटों के अंतर से तेनजिंग नोरबू ने एसकेएम के नेता कुंगा नीमा लेप्चा को मात दी है।

प्रेम सिंह गोले का राजनीतिक सफर

तेनजिंग नोरबू भी उसी लीग से आते हैं, जिस लीग के प्रेम सिंह तमांग या कहिए कि प्रेम सिंह गोले हैं। तेनजिंग नोरबू भी सरकारी नौकरी में थे और सिक्किम सरकार में इंजीनियर थे। 2018 में उन्होंने सक्रिय राजनीति में कदम रखा और अब वो सिक्किम डेमोक्रेटिक फ्रंट से विधायक बन गए हैं। इकलौते विधायक, जो 32 सीटों वाली सिक्किम विधानसभा में विपक्ष की सीट पर बैठेंगे। रही बात बीजेपी और कांग्रेस जैसी राष्ट्रीय पार्टियों की, तो 2024 के विधानसभा चुनाव में उनका खाता भी नहीं खुल पाया है। हालांकि ये कोई नई बात नहीं है। 2019 के विधानसभा चुनाव में भी न तो बीजेपी और न ही कांग्रेस सिक्किम में खाता खोल पाई थी। और अब भी बीजेपी-कांग्रेस के प्रदर्शन में कोई सुधार नहीं हुआ है और उन्हें इस बार भी कोई सीट नहीं मिली है। क्योंकि 32 में से 31 सीटें जीतने वाला वो शिक्षक है, जिसने सरकारी नौकरी छोड़ी, विधायक बने, मंत्री बने, अपने ही नेता के खिलाफ बगावत की, पार्टी बनाई, जेल भी गया और वापस लौटा तो सीधे मुख्यमंत्री बन गया। जिसका नाम है प्रेम सिंह तमांग और जिसे उसके लोग प्रेम सिंह गोले कहते हैं।

जब प्रेम सिंह गोले ने कर दी पवन सिंह से बगावत

21 दिसंबर 2009 की तारीख ने सिक्किम के राजनीतिक इतिहास में एक नया अध्याय जोड़ दिया। तब मुख्यमंत्री पवन सिंह चामलिंग ने प्रेम सिंह गोले को मंत्रीपद देने से इन्कार कर दिया और उन्हें इंडस्ट्री डिपार्टमेंट का चेयरपर्सन बनाने का ऑफर दिया। लेकिन, प्रेम सिंह गोले ने इनकार कर दिया और मुख्यमंत्री पवन सिंह चामलिंग के खिलाफ बगावत कर दी। उन्होंने चामलिंग सरकार पर भ्रष्टाचार और परिवारवाद का आरोप लगाया और रोलू प्लेग्राउंड पर एक बड़ी रैली आयोजित कर दी। उसी दिन यानी कि 21 दिसंबर 2009 को प्रेम सिंह गोले ने बगावत का ऐलान कर दिया। इस कार्यक्रम को रोलू पिकनिक कहा गया, जिसके बाद पवन चामलिंग ने प्रेम सिंह गोले को पार्टी से बाहर का रास्ता दिखा दिया।

जिलाधिकारी इन्द्र विक्रम सिंह का जनता की समस्याओं पर है फोकस

सूर्या बुलेटिन

गाजियाबाद। जिलाधिकारी ऑफिस की कार्य संस्कृति में बदलाव देखने को मिल रहा है। सीधे शब्दों में कहें तो जिलाधिकारी ऑफिस उसी ढर्रे पर लौटता दिख रहा है, जैसी उम्मीद जिले के सबसे बड़े कार्यालय से की जाती है। इस बदलाव कारण जिलाधिकारी इन्द्र विक्रम सिंह बने हैं। वह जनता के लिए कार्यालय में ही उपलब्ध रहते हैं, उनकी समस्याएं सुनते हैं और समाधान के लिए मातहतों को त्वरित दिशा-निर्देश भी जारी कर रहे हैं। जनता के प्रति जिलाधिकारी की सुलभता से मातहत भी जवाबदेह बन रहे हैं। लंबे समय से जिलाधिकारी कार्यालय में सक्रियता का अभाव दिख रहा था। स्वयं जिलाधिकारी जनता के लिए उतने सुलभ नहीं हो पा रहे थे और जनता को अक्सर मायूस लौटना पड़ रहा था। जिलाधिकारी कार्यालय से समाधान न मिल पाने के चलते लोग प्रशासनिक कार्यों के लिए भी प्रतिनिधियों के पास जाने को विवश थे। मगर अब अपनी समस्या के समाधान के लिए उन्हें चक्कर नहीं काटना पड़ रहा है। जनता को अधिक से अधिक समय देने के लिए वह सुबह दस बजे से अपने कार्यालय में मौजूद रहते है और दफ्तर में ही बैठकर प्रशासनिक कामकाज के साथ लोगों की समस्या भी सुनते है। सोमवार को जनसुनवाई के दौरान जिलाधिकारी ने एडीएम एल/ए सौरभ भाटिया, सिटी मजिस्ट्रेट अजय अम्बेष्ठ की मौजूदगी में जनता की शिकायतें सुनी और संबंधित अधिकारियों को निस्तारण के आदेश दिए। उन्होंने कहा कि शिकायतकर्ताओं को शिकायत के निस्तारण के लिए कार्यालय के बार-बार चक्कर ना काटना पड़े, इसका विशेष रूप से अधिकारी ध्यान रखें।

मध्य प्रदेश हाईकोर्ट का ऐतिहासिक फैसला

हाईकोर्ट ने मुस्लिम पुरुष और हिंदू महिला की शादी को बताया गैर-कानूनी

सूर्या बुलेटिन

गाजियाबाद। मध्य प्रदेश की हाईकोर्ट ने मुस्लिम पुरुष और हिन्दू महिला की शादी को लेकर ऐतिहासिक फैसला दिया है। हाईकोर्ट ने ऐसी शादी को गैर कानूनी बताया है। हाईकोर्ट ने एक ऐसे जोड़े को पुलिस सुरक्षा देने से इनकार कर दिया है जो अलग-अलग धर्मों के हैं और स्पेशल मैरिज एक्ट 1954 के तहत शादी करना चाहते थे। कोर्ट का कहना है कि मुस्लिम धर्म के कानून के मुताबिक, एक मुस्लिम लड़के की शादी एक हिंदू लड़की से नहीं हो सकती। ये शादी 'नाजायज रिश्ता' मानी जाएगी।

ये फैसला तब आया जब अलग-अलग धर्म के युवक-युवती ने कोर्ट से पुलिस सुरक्षा की मांग की थी ताकि वो स्पेशल मैरिज एक्ट 1954 के तहत अपनी शादी रजिस्टर करवा सकें। कोर्ट ने कहा कि अगर ये शादी हो भी जाती है तो भी मुस्लिम कानून में ये शादी 'फासिद' मानी जाएगी, यानी सही मायनों में मान्य नहीं होगी। हाईकोर्ट के इस फैसले के बाद एक बार फिर से ये सवाल खड़ा हो गया है कि क्या अलग-अलग धर्मों के लोगों को अपनी मर्जी से शादी करने का हक है या नहीं।

ये है पूरा मामला

मध्य प्रदेश के अनूपपुर जिले में 23 साल की सारिका सेन और सफी खान नाम के एक प्रेमी जोड़े ने अप्रैल 2024 में कोर्ट का रुख किया था। दोनों का कहना है कि वो एक-दूसरे से प्यार करते हैं। उन्होंने स्पेशल मैरिज एक्ट के तहत शादी करने के लिए मैरिज ऑफिसर के सामने पेश होने की कोशिश की थी, लेकिन लड़की के परिवार के विरोध की वजह से वो ऐसा नहीं कर पाए थे। उन्होंने अपनी याचिका में बताया कि इस वजह से उनकी शादी रजिस्टर नहीं हो पा रही है। सारिका और सफी ने स्थानीय पुलिस से सुरक्षा मांगने के अलावा मैरिज ऑफिसर के सामने पेश होने की इजाजत भी मांगी थी। साथ ही उन्होंने कोर्ट से गुजारिश की कि लड़की के परिवार को लड़के के खिलाफ अपहरण का केस दर्ज करने से रोका जाए। इस मामले में कोर्ट ने अपने आदेश में लिखा, याचिकाकर्ता स्पेशल मैरिज एक्ट के तहत शादी करना चाहते हैं, इसलिए निकाह की जरूरत नहीं है। दोनों याचिकाकर्ता इस बात पर सहमत हैं कि याचिकाकर्ता सारिका सेन अपने हिंदू धर्म का पालन करती रहेगी, जबकि याचिकाकर्ता सफी खान अपने इस्लाम धर्म का पालन करता रहेगा और कोई भी एक-दूसरे की धार्मिक भावनाओं में दखल नहीं देगा। याचिकाकर्ता सारिका सेन की इस्लाम धर्म कबूल करने की कोई मंशा नहीं है। प्रेमी जोड़े के वकील ने दलील दी कि स्पेशल मैरिज एक्ट, पर्सनल लॉ से ऊपर होता है। इसलिए एक मुस्लिम लड़के और हिंदू लड़की की शादी को गलत नहीं ठहराया जा सकता, लेकिन हाई कोर्ट ने इस दलील को खारिज करते हुए सुप्रीम कोर्ट के एक फैसले का हवाला दिया. जज ने ये भी कहा कि ये जोड़ा ये नहीं कह रहा है कि अगर शादी नहीं हो पाती है तो वो लोग लिव-इन रिलेशनशिप में रहना चाहते हैं। ये लड़की ये भी नहीं कह रही है कि वो मुस्लिम धर्म अपना लेगी।

» प्रेमी जोड़ा स्पेशल मैरिज एक्ट के तहत करना चाहता था शादी

भारत में कानूनी तौर पर शादी को कैसे दी जाती है मान्यता

भारत में सभी शादियों को संबंधित पर्सनल लॉ जैसे हिंदू मैरिज एक्ट 1955, मुस्लिम मैरिज एक्ट 1954 या फिर स्पेशल मैरिज एक्ट 1954 के तहत रजिस्टर कराया जा सकता है। यह न्यायपालिका का कर्तव्य है कि पति और पत्नी दोनों के अधिकारों की रक्षा करे। स्पेशल मैरिज एक्ट 1954 भारत की संसद का एक अधिनियम है, जो भारत के लोगों और विदेशों में रहने वाले सभी भारतीय नागरिकों के लिए उनकी धर्म या आस्था की परवाह किए बिना सिविल मैरिज (या रजिस्टर्ड मैरिज) का प्रावधान करता है।

इस नए कानून के तीन मुख्य उद्देश्य थे

कुछ मामलों में शादी का एक खास तरीका देना: इसका मतलब ये था कि अलग-अलग धर्मों के लोग या फिर जिनकी शादी उनके पर्सनल लॉ के तहत नहीं हो सकती, उन्हें शादी करने का एक कानूनी रास्ता देना।

कुछ शादियों के रजिस्ट्रेशन का प्रावधान करना: इसका मतलब था कि सभी शादियों का एक सरकारी रिकॉर्ड हो, चाहे वो किसी भी धर्म या जाति के लोगों के बीच हुई हों।

तलाक का प्रावधान करना: यानी अगर कोई शादी टूट जाए, तो उसके लिए कानूनी तरीका देना ताकि पति-पत्नी दोनों को इंसाफ मिल सके।

स्पेशल मैरिज एक्ट 1954 किस पर लागू होता है

इस एक्ट के तहत शादी करने के लिए किसी खास धर्म का होना जरूरी नहीं है। कोई भी दो व्यक्ति, जो कानूनी रूप से शादी के योग्य हों, इस एक्ट के तहत शादी कर सकते हैं। ये एक्ट सिर्फ अंतरधार्मिक शादियों के लिए ही नहीं है। अगर एक ही धर्म के लोग भी अपने पर्सनल लॉ के तहत शादी नहीं करना चाहते, तो वे भी इस एक्ट का इस्तेमाल कर सकते हैं। अगर दोनों शादी करने वाले भारतीय हैं और विदेश में रह रहे हैं, तो वे भी इस एक्ट के तहत शादी कर सकते हैं। वहीं अगर एक व्यक्ति भारतीय है और दूसरा विदेशी है, लेकिन शादी भारत में हो रही है तो भी ये एक्ट लागू होता है।

क्या प्रेमी जोड़े के मामले में शादी वैध मानी जा सकती है

मुस्लिम कानून के तहत, शादी को एक तरह का समझौता माना जाता है जिसमें तीन अलग-अलग श्रेणियां होती हैं। वैध विवाह (सहीह), अनियमित या अमान्य विवाह (फासिद), और शून्य विवाह (बातिल)। किसी देवता या अग्नि पूजक के साथ विवाह शून्य या बातिल नहीं होता, बल्कि केवल अमान्य होता है। वह शादी जिसमें कुछ कतिपय नियमों का उल्लंघन होता है उसे 'अनियमित' या 'फासिद विवाह' कहते हैं।

हाईकोर्ट के फैसले के अनुसार एक मुस्लिम पुरुष न केवल एक मुस्लिम महिला के साथ, बल्कि एक किताबिया (यहूदी या ईसाई) के साथ भी वैध विवाह कर सकता है, लेकिन किसी मूर्ति पूजक या अग्नि पूजक के साथ नहीं। मुस्लिम कानून में शादी को अनियमित या अमान्य मानने की एक वजह ये भी है कि जब धर्म के अंतर के कारण शादी को मना किया गया हो। ऐसी शादी को अनियमित या अमान्य इसलिए कहा जाता है क्योंकि इसका कारण ठीक किया जा सकता है। मतलब अगर दोनों में से कोई एक साथी दूसरे के धर्म को अपना लेता है, तो ऐसी शादी वैध हो सकती है। लेकिन, मध्य प्रदेश के प्रेमी कपल के मामले में हाईकोर्ट ने कहा कि हिंदू महिला का धर्म परिवर्तन करने का कोई इरादा नहीं था और इसलिए यह शादी अनियमित रहेगी। इसे स्पेशल मैरिज एक्ट (एसएमए) के तहत वैध नहीं किया जा सकता क्योंकि मुस्लिम पर्सनल लॉ में ये रिश्ता प्रतिबंधित रहेगा।

क्या है स्पेशल मैरिज एक्ट

स्पेशल मैरिज एक्ट 1954 भारत का एक ऐसा कानून है जो किसी भी धर्म के लोगों को रजिस्टर्ड शादी करने की इजाजत देता है। ये धार्मिक शादी का एक विकल्प है। यानी अगर दो लोग शादी करना चाहते हैं लेकिन मंदिर, मस्जिद, गुरुद्वारा या चर्च में शादी नहीं करना चाहते, तो वो इस कानून के तहत रजिस्टर्ड शादी कर सकते हैं। ये कानून पूरे भारत में लागू होता है और विदेशों में रहने वाले भारतीय नागरिक भी इसका फायदा उठा सकते हैं। इसमें ये कोई मायने नहीं रखता कि दूल्हा-दुल्हन किस धर्म को मानते हैं। ये कानून दरअसल 19वीं सदी के आखिर में बनाए गए एक और कानून की जगह बनाया गया था। उस पुराने कानून को हेनरी सुमनेर मेन नाम के एक शख्स ने लाने की कोशिश की थी। उनका ये कहना था कि लोग अपनी मर्जी से किसी से भी शादी कर सकें और इसके लिए उन्हें किसी धर्म के विशेष नियमों को मानने की जरूरत न हो। मगर बाद में इस कानून में बदलाव कर दिया गया। बदलाव के बाद ये कहा गया कि जो लोग इस कानून के तहत शादी करना चाहते हैं, उन्हें ये कहना होगा कि वो किसी भी धर्म को नहीं मानते। ये कानून उन शादियों पर भी लागू होता है, जहां दूल्हा-दुल्हन अलग-अलग धर्म या जाति के होते हैं।

अदालत ने क्यों ठुकरा दी प्रेमी जोड़े की मांग?

27 मई को जस्टिस जीएस अहलूवालिया ने अपना फैसला सुनाते हुए कहा कि मुस्लिम कानून के मुताबिक एक मुस्लिम लड़के की शादी किसी ऐसी लड़की से नहीं हो सकती जो मूर्ति पूजा करती हो या अग्नि की पूजा करती हो। अगर ऐसी शादी हो भी जाती है और उसे स्पेशल मैरिज एक्ट के तहत रजिस्टर करा लिया जाता है तो भी ये शादी असल में मान्य नहीं मानी जाएगी बल्कि ये एक 'फासिद' शादी मानी जाएगी। जस्टिस अहलूवालिया ने आगे कहा कि हर धर्म के अपने अलग नियम होते हैं। अगर कोई शादी स्पेशल मैरिज एक्ट के तहत होती है तो फिर ये नहीं कहा जा सकता कि ये शादी सिर्फ इसलिए गलत है क्योंकि उसमें वो खास रस्में नहीं हुईं, जो उस धर्म में जरूरी मानी जाती हैं। मगर स्पेशल मैरिज एक्ट के तहत शादी करवा लेने से वो शादी मान्य नहीं हो जाती, जो उस व्यक्ति के धर्म के कानून के हिसाब से पहले से ही गलत मानी जाती है। स्पेशल मैरिज एक्ट की धारा 4 ये साफ कहती है कि अगर दोनों लोग ऐसे रिश्ते में नहीं हैं जिन्हें शादी के लिए मनाही है तभी शादी हो सकती है।

केंद्रीय मंत्रिमंडल में बिहार पर खास तवज्जो

सूर्या बुलेटिन

गाजियाबाद। इस बार पूरे मंत्रिमंडल में देखे तो बिहार से कुल 8 लोग मंत्री बनाए गए हैं। बिहार में मांझी को एक सीट मिली है और उनको सरकार में मौका दिया गया है। जीतनराम मांझी ने कई बार एनडीए के बनाए गए गाइडलाइन से आगे बढ़ कर बयान दिया है। हालांकि, उनके मन में कोई गलत धारणा नहीं रहती बल्कि उनके मन में जो रहता है उसे वो बोल देते हैं। उसके आगे-पीछे वो कुछ भी नहीं सोचते। राम मंदिर के समय उन्होंने गलत बयान दिया, उसके बाद खुद राम मंदिर जाकर दर्शन पूजन किया। नामांकन से पहले भी राम मंदिर में जाकर उन्होंने दर्शन पूजन किया।

अपनी पार्टी से अकेले चुनाव लड़कर चुनाव जीते हैं। उनको मंत्रिमंडल में उनकी वरिष्ठता के आधार पर दिया गया है। बिहार के सीनियर नेताओं में वह शामिल हैं। कांग्रेस के जमाने से वो चुनाव जीतते रहे हैं और कांग्रेस की सरकार में भी मंत्री रह चुके हैं। राजद के अलावा जदयू सरकार में मंत्री के अलावा मुख्यमंत्री तक बने। वो पढ़े-लिखे और सुलझे नेता हैं। जिस जाति से आते हैं वो काफी उपेक्षित समाज है। पूरे देश के मांझी वोट को अपने ओर करने और उनके कार्यों के अनुभव के आधार पर उनको कैबिनेट में शामिल किया गया है। बिहार में हालांकि भाजपा को उनकी उम्मीद के अनुसार सीटें नहीं मिली है।

भाजपा के कई केंद्रीय मंत्री चुनाव इस बार हार गए। राम कृपाल यादव भी चुनाव हार गए। केंद्रीय मंत्री आर के सिंह भी लेफ्ट के उम्मीदवार से हार गए। इससे पहले 1979 के आसपास बिहार से लेफ्ट के सांसद लोकसभा पहुंचे थे। अब दूसरी बार सांसद बिहार से चुनकर पहुंचे हैं। बिहार में केंद्र सरकार की ओर से इतना काम करने और साथ में राज्य सरकार के होने के बावजूद केंद्रीय मंत्री चुनाव हार जा रहे हैं तो भाजपा के लिए ये शर्म का विषय है। इसीलिए बिहार में इस बार उनको मौका दिया गया है जो कुछ बेहतरी के लिए काम कर सकें और एनडीए का प्रभाव बढ़ा सकें। गिरिराज सिंह को भी इस मंत्रालय में मौका दिया गया है, वो भी विवादित बयानों के लिए जाने जाते थे। बेगूसराय में विरोध के बावजूद वो चुनाव में जीतने में सक्षम रहे। नित्यानंद राय भी चुनाव जीते हैं लेकिन इस बार लग रहा है कि उनका डिमोशन किया गया है क्योंकि काफी बाद में उन्होंने शपथ ली। नित्यानंद राय यादव वोट को अपनी ओर कनवर्ट कराने में सक्षम नहीं रहे। पिछली बार केंद्रीय गृह राज्यमंत्री थे। चिराग पासवान युवा नेता हैं और उनको भी मौका दिया गया है। उनकी पार्टी ने पांच में पांच सीटों को जीत लिया है, तो स्ट्राइक रेट उनका सबसे अच्छा है। यह मंत्रिमंडल शायद बिहार के आगामी विधानसभा चुनाव को ध्यान में रखकर भी थोड़ा बहुत बनाया गया है, ऐसा लगता है।

अशोक भारतीय और सौरभ यादव ने पंकज चौधरी को दी बधाई

सूर्या बुलेटिन

गाजियाबाद। केंद्र में मोदी सरकार का गठन हो चुका है। भले ही भाजपा के सांसदों की संख्या पिछली बार के मुकाबले कम है, लेकिन गठबंधन से केंद्र में भाजपा की सरकार बन गई है। इस बार भाजपा के टिकट पर जितने भी सांसद जीते हैं, वे सभी बधाई के पात्र हैं। वरिष्ठ भाजपा नेता पंडित अशोक भारतीय और युवा भाजपा नेता सौरभ यादव ने केंद्रीय वित्त राज्य मंत्री और महाराजगंज से सांसद पंकज चौधरी से उनके दिल्ली स्थित आवास पर मुलाकात की और मोदी सरकार के गठन की पटका पहनाकर, पुष्पगुछ देकर व स्मृति चिन्ह भेंटकर बधाई व शुभकामनाये दी तथा व्यापारिक समस्याओं को हल कराने और जीएसटी में सुधार के लिए निवेदन किया। इस अवसर पर मुख्य रूप से पंडित अशोक भारतीय, सौरभ यादव, राम प्यारे यादव, जितेंद्र त्यागी, रुद्र यादव आदि उपस्थित थे।

मोदी सरकार बनते ही आतंकियों ने दी धमकी

इस्लामिक स्टेट खोरासन प्रोविंस ने बीजेपी सरकार को धमकी दी

सूर्या बुलेटिन

गाजियाबाद। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के नेतृत्व में लगातार तीसरी बार भारत में एनडीए की सरकार बन गई है, जिसके बाद पाकिस्तान समेत उसके आतंकी संगठन बौखला गए हैं। मोदी सरकार के शपथ ग्रहण के दिन ही आतंकवादी संगठन इस्लामिक स्टेट खोरासन प्रोविंस ने अपने मुख पत्र वॉइस ऑफ खुरासन का 36वां अंक जारी किया। इस अंक पहले पेज में ही पोस्टर बनाकर लिखा गया है कि 'इंडियन किंग महमूद गजनवी का एक बार फिर सामना करने के लिए तैयार रहें।

इस्लामिक स्टेट खोरासन प्रोविंस को पाकिस्तान के पिछलग्गू आतंकी संगठन के तौर पर जाना जाता है। नरेंद्र मोदी के तीसरी बार भारत का कमान संभालने पर इसने खुले तौर पर महमूद गजनवी की तरह हमला करने की धमकी दी है। दरअसल, महमूद गजनवी ने 1000 से लेकर 1027 ईस्वी के बीच भारत पर 17 बार आक्रमण किया था। इस दौरान उसने भारत में जमकर कत्लेआम और लूटपाट की थी। ऐसे में आशंका जताई जा रही है कि यह आतंकी संगठन गजनवी की तरह लगातार आतंकी हमले करेगा। आतंकी संगठन ने मोदी सरकार के शपथ ग्रहण समारोह के दिन ही अपना अंक प्रकाशित किया। भाजपा और मोदी सरकार को निशाना बनाया है। मुखपत्र के पेज पर लिखा है कि कुछ समय पहले भाजपा की प्रमुख सदस्य और प्रवक्ता नूपुर शर्मा ने अपनी जीभ बढ़ाकर पैगंबर मोहम्मद का अपनमान किया था, लेकिन पार्टी के वरिष्ठ और निचले स्तर के नेताओं ने उसे कुछ नहीं कहा। आतंकी संगठन इस्लामिक स्टेट खोरासन प्रोविंस ने अपने मुखपत्र में वर्ग विशेष को जमकर भड़काने की कोशिश की है। इसके अलावा नुपुर शर्मा को भी निशाने पर लिया है। साथ ही इस अंक में आतंकवादियों को अपनी पहचान छुपाने के लिए कहा गया है और साइबर सुरक्षा के बारे में भी उपाय सुझाए गए हैं।

» भारत पर महमूद गजनवी जैसे हमले करने की धमकी

» महमूद गजनवी ने 1000 से लेकर 1027 ईस्वी के बीच भारत पर 17 बार आक्रमण किया था

कॉलोनाइजरों के सामने जीडीए का प्रवर्तन महकमा नतमस्तक

जीडीए उपाध्यक्ष की सख्ती का असर अधिकारियों पर बेअसर

सूर्या बुलेटिन

गाजियाबाद। अवैध कॉलोनी काटने और अवैध निर्माण करने का सिलसिला लगातार जारी है। पहले तो लोग अवैध रूप से कॉलोनी काटते हैं या निर्माण करते हैं। यदि गाजियाबाद विकास प्राधिकरण की नजर न पड़े तो बल्ले-बल्ले और यदि पड़ जाए तो ले देकर मामले को रफा दफा कर लेते है। अगर जीडीए अधिकारी समय रहते ही अवैध निर्माण पर अपनी कार्रवाई कर दें तो शायद ही कोई अवैध निर्माण कार्य हो सकें। लेकिन अगर कार्रवाई हो ही जाएगी तो कमाई कैसे होगी। जीडीए उपाध्यक्ष अतुल अवैध कॉलोनियों और अवैध निमाणों पर टेढ़ी नजर बनाए हुए है। जीडीए उपाध्यक्ष की सख्ती के चलते ही पिछले कुछ समय से अवैध कॉलोनियों में हुए निर्माण पर सीलिंग की कार्रवाई की गई और चेतावनी बोर्ड भी लगाए गए। जिसका असर यह था कि अधिकारी से लेकर कर्मचारियों में जीडीए उपाध्यक्ष का खौफ दिखाई दे रहा है। जीडीए उपाध्यक्ष ने सबसे पहले जीडीए अधिकारियों एवं कर्मचारियों को काम करने का सलीका सिखाया। लेकिन जीडीए उपाध्यक्ष की सख्ती का असर कुछ अधिकारियों पर दिखाई नहीं दे रहा है। कुछ समय पहले जीडीए ने गोविंदपुरम स्थित बालाजी एंकलेव में रोड़ पर हो रहे करीब 250 गज के निर्माण कार्य पर रोक लगाते हुए सीलिंग की कार्रवाई कर दी। मगर वहीं दूसरी ओर प्राधिकरण के अधिकारी कुछ अवैध कॉलोनियों पर मेहरबान हैं, जिनपर कार्रवाई करने की बजाय उनको संरक्षण दिया जा रहा है।

» पैसा दो और अवैध निर्माण करो के खेल में अधिकारी एवं कर्मचारियों की मिलीभगत

जीडीए उपाध्यक्ष की सख्ती का असर अधिकारियों पर बेअसर साबित होता नजर आ रहा है। या फिर यूं कहा जाए कि उन्हें इन सबसे बेखबर रखा जा रहा है। क्योंकि जब अधिकारियों ने गोविंदपुरम स्थित बालाजी एंकलेव में अपनी सीलिंग की कार्रवाई की तो उससे कुछ दूरी पर खुलेआम हो रहे अवैध निर्माण को रोकने की जहमत तक नहीं की। गोविंदपुरम स्थित बालाजी एंकलेव में एक समय था कि जब भी कोई निर्माण होता तो जीडीए की टीम कार्रवाई करने पहुंच जाती थी और सीलिंग की कार्रवाई कर देती है। मगर सीलिंग की कार्रवाई के बाद आज भी अगर बालाजी एंकलेव पर नजर डाली जाए तो सैकड़ों अवैध निर्माण बनकर तैयार हो चुके है। जिसमें कुछ पूर्व अधिकारियों की मेहरबानी रही थी। लेकिन आज भी वहीं हाल दिखाई दे रहा है। अधिकारी तो बदल गए, काम आज भी वहीं होता नजर आ रहा है। ऐसा लग रहा है बिल्डरों के आगे अधिकारी नतमस्तक दिखाई दे रहे हैं।

सूत्रों का कहना है कि बालाजी एंकलेव में जीडीए की टीम अपनी नजर बनाए हुए है। लेकिन वह नजर सिर्फ उन पर ही है, जो चढ़ावा नहीं दे रहे है। चढ़ावा नहीं मिलने पर सीलिंग की कार्रवाई के बाद ध्वस्तीकरण की कार्रवाई हो जाती है। अगर कोई अवैध निर्माण की अधिकारी से शिकायत कर भी दें तो उसे ही उल्टा धमका दिया जाता है या फिर ले देकर मामले को वहीं शांत कर दिया जाता है। जीडीए के प्रवर्तन जोन-2, 3, 4, 7 व 8 जोन क्षेत्र में सबसे अधिक निर्माण हो रहे हैं। प्रवर्तन जोन-3 क्षेत्र में रईसपुर-सदरपुर मार्ग, मटियाला, मैनापुर, दुहाई, भिक्कनपुर, भोजपुर, मोदीनगर और मुरादनगर क्षेत्र में धड़ल्ले से अवैध निर्माण व अवैध कॉलोनी काटी जा रही हैं। जीडीए प्रवर्तन जोन-3 क्षेत्र के बालाजी एनक्लेव की गली नंबर-10 ई-55 के सामने अवैध निर्माण कार्य आज भी जारी है। उक्त स्थल पर मानचित्र से हटकर जो निर्माण किया गया है वो अवैध निर्माण की श्रेणी में प्राधिकरण ने भी माना है। जिले में आचार संहिता का फायदा उठाकर बिल्डर ने ग्रांउड प्लस 4 का यह निर्माण महज दो माह में अधिकारियों की नाक के नीचे पूरा कर लिया। बचे हुए काम को छुट्टी के दिन किया जाता है। देखना यह है कि जीडीए अधिकारी इसमें क्या कार्रवाई करते है, या फिर दिखावे के नाम पर सिर्फ खानापूर्ति ही होती रहेगी। सूत्रों के अनुसार, अवैध निर्माण का खेल जीडीए के अफसरों की मिलीभगत से ही होता है। क्योंकि हर निर्माण की जानकारी विभाग को होती है, लेकिन रुपये मिलने के कारण कोई कार्रवाई नहीं होती है। जानकारी के अनुसार हर इलाके में जोन के हिसाब से जेई और सुपरवाइजर तैनात हैं। सुपरवाइजरों को अलग-अलग इलाका दिया जाता है। वे अपने इलाके में होने वाले हर निर्माण की जानकारी इलाके के जेई को देते हैं, जेई मौके पर जाकर उसको चेक करते हैं यदि निर्माण नक्शे के हिसाब से हो रहा होता है तो कोई बात नहीं, पर यदि नक्शे के विपरीत कोई काम हो रहा होता है तो जेई काम बंद करा देता है। इसके बाद काम शुरू करने देने के नाम पर लेन-देन का खेल शुरू होता है।

प्रति लिंटर पर 1-2 लाख रुपये का होता है रेट

बिल्डिंग बनाने वाले कुछ लोगों के अनुसार नक्शे के विपरीत काम कराने के लिए संबंधित विभाग को रुपये देने पड़ते हैं। एक लिंटर पर 1-2 लाख रुपये तक की वसूली अफसर करते हैं। इसके अलावा यदि कोई बेसमेंट या स्टिल्ट पर दुकान आदि बनाना चाहता है तो उसके रेट डबल हो जाते हैं। नक्शे से अधिक बेसमेंट बनाने पर और अधिक रुपये देने होते हैं। इन सबमें सुपरवाइजर की फीस अलग होती है।

कागजों में चलती रहती है कार्रवाई

जानकारी के अनुसार कई इलाकों में अवैध निर्माण की शिकायत मिलने पर जीडीए के अधिकारी वहां जाते हैं, लेकिन रुपये मिलने पर कागजों में ही उसकी सीलिंग कर देते हैं। मौके पर कोई नोटिस नहीं भेजा जाता है, वहां काम चलता रहता है। वहीं इलाके में कुछ अवैध निमार्णों पर जानबूझकर कार्रवाई नहीं की जाती, ताकि ऊपर से दबाव पड़ने के बाद उन पर एक्शन लिया जा सके और दिखाया जा सके कि विभाग कार्रवाई कर रहा है।

सम्पादकीय

चुनाव में जनता से किए गए वादों को पूरा करने की चुनौती

तमाम कयासों पर पानी फेरते हुए राष्ट्रीय जनतांत्रिक गठबंधन के सांसदों ने सर्वसम्मति से नरेंद्र मोदी को तीसरी बार प्रधानमंत्री चुन लिया। यह भारतीय लोकतंत्र के इतिहास में दूसरी बार होगा, जब किसी नेता को लगातार तीसरी बार प्रधानमंत्री पद की शपथ दिलाई जाएगी। निस्संदेह यह प्रधानमंत्री मोदी के व्यक्तित्व का प्रभाव और उनके कामकाज के तरीके पर भरोसे का ही नतीजा है। इस बार बेशक भाजपा को अकेले दम पर पूर्ण बहुमत नहीं मिल पाया, मगर राजग को बहुमत से कुछ अधिक सीटें मिली हैं, इसलिए गठबंधन की सरकार बनने में कोई अड़चन नहीं थी। यह गठबंधन चुनाव पूर्व का है, इसलिए इसके सभी घटक दल पहले से ऐसी स्थिति में समर्थन देने को प्रतिबद्ध थे। मगर चूंकि चंद्रबाबू नायडू और नीतीश कुमार के साथ गठबंधन के पहले के अनुभवों को देखते हुए कयासों को बल मिला था कि वे सरकार बनाते समय अपनी कड़ी शर्तें रख सकते हैं और उनके पूरा न होने पर छिटक भी सकते हैं। मगर अच्छी बात है कि दोनों नेताओं ने अपनी उस पुरानी छवि को इस अवसर पर दुरुस्त करके दिखाया। हालांकि अब भी विपक्षी गठबंधन को लगता है कि गठबंधन की यह सरकार लंबे समय तक चल नहीं पाएगी, मगर फिलहाल तो इसे एक खामखयाली ही माना जाना चाहिए। इस बात से इनकार नहीं किया जा सकता कि तीसरी बार जिम्मेदारी मिलने के बाद प्रधानमंत्री के कामकाज के तरीके में कुछ बदलाव देखा जा सकेगा। केवल इसलिए नहीं कि उन पर लगातार गठबंधन का दबाव बना रहेगा, बल्कि इसलिए भी कि इस लोकसभा का चुनाव भाजपा उनके नाम पर लड़ी थी। प्रधानमंत्री ने खुद अपने नाम से बहुत सारे कामों की गारंटी दी है। उन गारंटियों को पूरा करने का दायित्व उन पर ही है। उन्हें पूरा करने के लिए नए ढंग से रणनीति बनानी होगी। उसमें स्वाभाविक ही सहयोगी दलों को साथ लेकर चलने की जरूरत पड़ेगी। घटक दलों ने सत्ता की बागडोर उनके हाथ में सौंपी है, तो जाहिर है कि उनकी मांगें मान ली गई हैं। विभागों आदि के बंटवारे पर सहमति बन चुकी है। इसलिए जो विभाग भाजपा से इतर दलों को मिलेंगे, वे प्रधानमंत्री की नीतियों और योजनाओं को आगे बढ़ाने में सहयोग करेंगे। कोई भी सरकार तकरार से चल नहीं सकती और न उससे किसी दल को लाभ मिलता है। इसलिए घटक दलों को यह बात अच्छी तरह पता है कि सरकार की उपलब्धियों पर ही उनकी भी सफलता और विफलता निर्भर करती है। यह जरूर है कि पिछली दो सरकारों के समय जिस तरह प्रधानमंत्री और उनके मंत्री फैसले करते, नीतियों का निर्धारण करते रहे हैं, अनेक मौकों पर विधेयकों को बिना उचित बहस के पारित करा लिया गया, अब वैसा संभव नहीं होगा। इसलिए कि सदन में एक मजबूत विपक्ष भी मौजूद रहेगा और उसकी बातों की अनदेखी करना संभव नहीं होगा। इस लिहाज से भी प्रधानमंत्री के पास एक अच्छा अवसर होगा कि वे लोकतांत्रिक ढंग से मुद्दों पर निर्णय कर सकेंगे। ऐसे निर्णयों में स्थायीत्व होगा और किसी प्रकार के विवाद की गुंजाइश कम होगी। जाहिर है, इससे लोगों तक अधिक व्यावहारिक नीतियां और योजनाएं पहुंच सकेंगी। अभी तक कुछ फैसलों पर इसीलिए अंगुलियां उठती रही हैं कि वे एकतरफा और बिना उचित विचार-विमर्श के किए गए थे। उनमें से कुछ फैसलों पर घटक दलों ने सरकार बनने से पहले ही पुनर्विचार की जरूरत भी रेखांकित कर दी है।

मरुस्थल में भूमि पर रेंगती है मौत

भूमि पुनर्स्थापन, मरुस्थलीकरण, और सूखा प्रतिरोधकता। इस महत्वपूर्ण और चुनौती भरे विषय पर केंद्रित इस वर्ष का विश्व पर्यावरण दिवस मनाया गया। इसी वर्ष संयुक्त राष्ट्र कन्वेंशन टू कॉम्बैट डेजर्टीफिकेशन (यूएनसीसीडी) की पार्टियों का 16वां सम्मेलन रियाद में 2 से 13 दिसंबर तक होना है। इन घटनाओं की पृष्ठभूमि में विश्व को भूमि की सुरक्षा व जलवायु परिवर्तन के सामने मरुस्थलीकरण और सूखे से उत्पन्न चुनौतियों का सामना करने के लिए कार्यवाही की तत्काल आवश्यकता को पहचानने का आह्वान किया गया है। मरुस्थलीकरण, भूमि क्षरण और सूखा पारिस्थितिकी तंत्र, जैव विविधता व आजीविका के लिए गंभीर खतरा पैदा करते हैं, जिससे पारिस्थितिक रूप से सुदृढ़ भूमि प्रबंधन प्रथाओं को अपनाना अनिवार्य हो जाता है। प्रत्येक बीते वर्ष के साथ, इन चुनौतियों से निपटने की तात्कालिकता और अधिक स्पष्ट हो जाती है, जिससे हमें उनके प्रभाव को कम करने के लिए सामूहिक प्रयासों के महत्व की अनुभूति होती है। संयुक्त राष्ट्र द्वारा घोषित जितने भी अंतरराष्ट्रीय दिवस हैं, उनमें पर्यावरण दिवस ऐसा है, जिसे उत्साह और चिंतन के साथ मनाया जाता है। हमारे ग्रह के भूमि संसाधनों के लिए मरुस्थलीकरण सबसे घातक खतरों में से एक है, जो चुपचाप पारिस्थितिक तंत्र, जैव विविधता और आजीविका पर अतिक्रमण कर रहा है। मरुस्थलीकरण वास्तव में भूमि पर रेंगती मौत है। एक बार यह जिस भूखंड पर रेंग जाता है, वह भूमि का मृत हिस्सा बनकर रह जाता है, वहां की मिट्टी सांस नहीं ले सकती, वहां कोई पौधा नहीं पनप सकता, वहां जीवन की खाद्य श्रृंखला टूट जाती है। मरुस्थलीकरण कोई यकायक घटी प्रलयंकारी घटना नहीं, वरन भूमि क्षरण की क्रमिक प्रक्रिया है, जिसमें वनस्पति की हानि, मिट्टी का क्षरण और जल संसाधनों की कमी सम्मिलित है। यह शुष्क, अर्ध शुष्क और शुष्क उप-आर्द्र क्षेत्रों में होता है, जहां जलवायु परिवर्तन और अस्थिर भूमि प्रबंधन प्रथाएं और शहरीकरण भूमि के क्षरण में योगदान करते हैं, जिससे मरुस्थलीकरण का प्रसार बढ़ता है। मरुस्थलीकरण प्राकृतिक और मानवीय दोनों प्रणालियों को प्रभावित करते हैं। इससे पारिस्थितिक तंत्रों में जैव विविधता की हानि, मिट्टी की उर्वरता में कमी तथा सूखे और वनों की आग जैसी प्राकृतिक आपदाओं की एक अटूट श्रृंखला शुरू हो जाती है। दुनिया भर के कई क्षेत्रों में मरुस्थलीकरण एक कठोर वास्तविकता बन गया है, जिससे लाखों लोगों की आजीविका को खतरा है और सतत विकास के प्रयास कमजोर हो रहे हैं। विशेष रूप से अफ्रीका में विशाल भूमि मरुस्थलीकरण की निरंतर प्रगति का शिकार हो रही है। मरुस्थलीकरण की गंभीर वास्तविकताओं के बीच कार्यवाही के लिए आशा और अवसर उपलब्ध हैं। अंतरराष्ट्रीय समुदाय ने इस गंभीर चुनौती से निपटने के लिए एकजुट होकर काम करने का प्रयास किया है। 1994 में अपनाया गया यूएनसीसीडी इस दिशा में एक ऐतिहासिक समझौता है, जिसका उद्देश्य स्थायी भूमि प्रबंधन प्रथाओं के माध्यम से मरुस्थलीकरण का मुकाबला करना और सूखे के प्रभावों को कम करना है।

जानिए वैश्विक षड्यंत्रों के बावजूद मोदी का विजय-रथ नहीं रुकने का अर्थ

भारत की 18वीं लोकसभा के चुनाव-परिणाम से पूरी दुनिया विस्मित है, क्योंकि विपक्ष के तमाम अवांछित हथकण्डों-अफवाहों के बावजूद भारतीय राष्ट्रवाद की राजनीति के ध्वजवाहक नरेन्द्र मोदी को सत्ता से बेदखल नहीं किया जा सका और विपक्षी गठबन्धन सत्ता की सुनहरी संडक तक भी नहीं पहुंच पाया। भारतीय जनता पार्टी एवं उसके लोकप्रिय नेता नरेन्द्र मोदी को येन-केण प्रकारेण सत्ता से बेदखल कर देने के बावत इस बार न केवल देश भर के तमाम विपक्षी दलों ने तमाम प्रकार के हथकण्डों के साथ अब तक (सन 1946 से 2024 तक) की चुनावी राजनीति के इतिहास का सबसे बडा अभियान चलाया, बल्कि देश के बाहर की शक्तियों ने भी बढ़-चढ़ कर उनके उस अभियान को सत्ता की मुकाम तक पहुंचाने की सुनियोजित मुहिम चलायी; लेकिन तब भी भाजपाई राष्ट्रवादी गठबंधन का विजय-रथ पर्याप्त बहुमत प्राप्त कर सनसनाता हुआ राजपथ पर पहुंच ही गया, जबकि कांग्रेसी सम्प्रदायवादी गिरोह की गाडी किनारे की पगडण्डी पर ही खडी रह गई।

भाजपा और उसके सहयोगी दलों के 'राजग' (राष्ट्रीय जनतांत्रिक) नामक गठबंधन को सत्ता के लिए पर्याप्त से भी अधिक लगभग 300 सीटें हासिल हो गईं, तो कांग्रेस और उसके सहयोगियों के 'भाराविसग' (भारतीय राष्ट्रीय विकासवादी समावेशी) नामक गठबंधन तो नहीं, (क्योंकि सभी कहीं अलग-अलग हैं, तो कहीं एकजुट हैं और कार्यक्रम तो सबके भिन्न-भिन्न हैं) 'गिरोह' कहिए, उसे मात्र 232 सीटें प्राप्त हो सकीं, जो अकेली भाजपा को मिली सीटों से भी कम है। इस गिरोह की यह सामूहिक उपलब्धि तब है, जब उक्त समूह के सभी दलों ने साम्प्रदायिक तुष्टिकरण के आपत्तिजनक व घिनौने खेल का खुला प्रदर्शन किया एवं मतदाताओं को रिश्वत के तौर पर नकदी का प्रलोभन भी दिया और सबसे बडी बात कि उनके पक्ष में बडी-बडी कुख्यात वैश्विक शक्तियों ने भी भाजपा-मोदी विरोधी अभियान चलाया।

जी हां वैश्विक रिलीजियस मजहबी शक्तियों ने धर्म (सनातन) व धर्मधारी राष्ट्र (भारत) के पुनरुत्थान से घबरा कर धर्मध्वजवाहक भाजपा-मोदी की राह रोकने के बावत उनके विरुद्ध नकारात्मक जनमत निर्मित करने एवं कृत्रिम असंतोष उत्त्पन्न करने और वृहतर धार्मिक समाज की राष्ट्रीय एकता को बनावटी जातीय वैमनस्यता से विखण्डित करने का ऐसा अभियान चलाया, जैसा आज तक अन्य किसी देश की सरकार को अपदस्थ करने के लिए नहीं चलाया गया था। तभी तो चुनाव-परिणाम के बाद भारत-सरकार के राष्ट्रीय सुरक्षा-सलाहकार और विभिन्न गोपणीय कार्यक्रमों के सूत्रधार अजित डोभाल को भी कहना पडा कि 'इस बार भाजपा की चुनावी लडाई 'कांग्रेस' 'आआपा' 'सपा' व 'ममता' से नहीं थी, अपितु उस 'ग्लोबल पावर' से थी, जो भारत को कमजोर करने के बावत मोदी जी को सत्ता से बेदखल करने हेतु हिन्दुओं को विभाजित करने का अभियान चला रही थी।'

आपको याद होगा कि ऐन चुनाव के मौके पर ही 'यूएससीआईआरएफ' (यूएस कमिशन फॉर इण्टरनेशनल रिलीजियस फ्रिडम) नामक एक अमेरिकी आयोग और 'न्यूयॉर्क टाइम्स' नामक अमेरिकी अखबार ने एक रिपोर्ट प्रकाशित किया था, जिसमें यह कहा गया था कि 'भारत में भाजपा-मोदी के सत्तासीन रहने से भारत का लोकतंत्र कमजोर हुआ है।' अब तो यह खुलासा भी हो चुका है कि 'धर्म (सनातन)-विरोधी' विस्तारवादी रिलीजियस-मजहबी शक्तियों के वैश्विक मुख्यालय- वेटिकन सिटी से संचालित चर्च-मिशनरी संस्थानों तथा उनसे पोषित विभिन्न स्वैच्छिक संगठनों (एनजीओ) एवं शैक्षिक-आर्थिक संस्थानों और मीडिया घरानों का एक व्यापक अंतर्जाल इस षड्यंत्रकारी अभियान के क्रियान्वयन में पिछले पांच वर्षों से सक्रिय था (है)। 'हेनरी लुईस फाउण्डेशन', 'जॉर्ज सोरोस ओपेन सोसाइटी फाउण्डेशन' तथा 'बर्कले सेंटर फॉर रिलिजन व पीस एंड वर्ल्ड अफेयर्स' (Berkley Center for Religion, Peace and World Affairs) एवं 'कानेर्गी इंडॉमेंट फॉर इंटरनेशनल पीस' (Carnegie Endowment for International Peace) और 'ह्यूमन राइट्स वाच' व 'साउथ एशिया एक्टिविस्ट कलेक्टिव' (एसएएसएसी) ऐसी ही कुछ संस्थायें हैं, जिन्होंने अपने भारी-भरकम संसाधनों और भारतीय एजेण्टों के सहारे जनमत को नकारात्मक दिशा में रिझाने का काम युद्ध-स्तर पर किया।

'डिसइंफो लैब' नामक एक भारतीय खुफिया एजेन्सी ने अपनी रिपोर्ट में इस तथ्य और सत्य का विस्तार से खुलासा किया हुआ है। लैब की रिपोर्ट के अनुसार 'भारतीय मतदाताओं को भाजपा-मोदी के विरुद्ध उकसाने-भडकाने के लिए 'हेनरी लुइस फाउंडेशन' और 'जॉर्ज सोरोस ओपन सोसाइटी फाउंडेशन' ने अपने-अपने विभिन्न कारिन्दों को कडोरों डॉलर की 'फण्डिंग' करते हुए उनके जरिये भिन्न-भिन्न माध्यमों से खुल कर हस्तक्षेप किया। केवल विदेशी मीडिया के माध्यम से ही नहीं, बल्कि कतिपय भारतीय मीडिया संस्थानों के द्वारा भी फर्जी तथ्यों-मुद्दों-सूचनाओं के आधार पर जनमत निर्मित कर चुनाव को प्रभावित करने की कोशिश की गई। इस बावत किसिम-किसिम के लेखों, शोध-पत्रों और आंकडों के माध्यम से आम-चुनाव को प्रभावित करने सम्बन्धी टिप्पणियां प्रकाशित-प्रसारित कीं गईं।' डिसइंफो लैब ने अपनी रिपोर्ट में 'हेनरी लुइस फाउंडेशन' (एचएलएफ) और 'जॉर्ज सोरोस ओपन सोसाइटी फाउंडेशन' (ओएसएफ) के अतिरिक्त जिन समूहों और व्यक्तियों का नाम उजागर किया गया है, उनमें कनाडा के रिकन पटेल की संस्था- 'नामती' और फ्रांस के एक राजनीतिक विश्लेषक- क्रिस्टोफ जॉफरलॉट प्रमुख हैं।

लैब की रिपोर्ट में दावा किया गया है कि भारतीय मतदाताओं के रुझान की दिशा बदलने के लिए 'एचएलएफ ने 'नामती' को तीन लाख डॉलर और 'ओएसएफ' ने 13.85 करोड़ डॉलर से वित्त-पोषण किया। डिसइंफो लैब ने यह भी दावा किया है कि 'चुनाव के दौरान भाजपा-मोदी को क्षति पहुंचाने वाला वातावरण निर्मित करने के बावत 'एचएलएफ' द्वारा कट्टरपंथी इस्लामी संगठनों और पाकिस्तान की 'आईएसआई' को भी आर्थिक सहयोग दिया गया था।'

लैब ने अपनी रिपोर्ट में आरोप लगाया है कि 'क्रिस्टोफ और उसके सहयोगी-साथी गाइल्स वर्नियर्स ने भारत के सोनीपत-स्थित अशोक विश्वविद्यालय में 'त्रिवेदी सेंटर फॉर पॉलिटिकल डेटा' (टीसीपीडी) के माध्यम से भाजपा-मोदी-विरोध पर आधारित जातीय वैमान्यस्यता की एक फर्जी कहानी को जबरन बढ़ावा दिया और उसके द्वारा शोसल मीडिया और अन्य माध्यमों से यह प्रचारित किया कि भारतीय राजनीति में निचली जातियों का प्रतिनिधित्व बहुत कम है।' रिपोर्ट में आगे बताया गया है कि क्रिस्टोफर ने वर्ष 2021 में ही 'भारत में जातीय जनगणना की आवश्यकता' पर एक सामग्री तैयार की थी, जिसे भारत में चुनावी मुद्दा बनवाने हेतु उसे अमेरिकी 'हेनरी लुइस फाउंडेशन' (एचएलएफ) ने अत्यधिक धनराशि दी थी।

बंगाल में मोदी-शाह गलतियां करते रहे और ममता बनर्जी उनका लाभ उठाती रहीं

लोकसभा चुनाव में जिन राज्यों के परिणामों ने पूरे देश को चौंकाया है उनमें पश्चिम बंगाल भी शुमार है। पश्चिम बंगाल में तृणमूल कांग्रेस सरकार के खिलाफ जिस स्तर की नाराजगी देखी जा रही थी। जिस तरह ममता सरकार के कई मंत्रियों और विधायकों पर घोटाले के आरोप लगे थे। जिस प्रकार संदेशखाली की महिलाओं पर हुआ अत्याचार देश भर में बड़ा मुद्दा बन गया था। जिस प्रकार मुख्यमंत्री ममता बनर्जी के भतीजे अभिषेक बनर्जी के इर्दगिर्द ईडी का शिकंजा कसा हुआ था। जिस प्रकार ममता बनर्जी को सनातन विरोधी बताया जा रहा था। जिस प्रकार तृणमूल कांग्रेस के कई बड़े नेताओं ने चुनावों से ऐन पहले पाला बदल लिया था। जिस प्रकार मीडिया की सुर्खियों में ममता बनर्जी सरकार के खिलाफ समाचार रिपोर्टें छाई हुई थीं। जिस प्रकार सभी एक्जिट पोलों ने तृणमूल कांग्रेस को भारी नुकसान की संभावना जताई थी, उस सबको देखते हुए कहा जा सकता है कि लोकसभा चुनाव परिणाम बेहद अप्रत्याशित हैं। प्रधानमंत्री मोदी और गृहमंत्री अमित शाह 30 सीटों का लक्ष्य लेकर अपना चुनाव अभियान आगे बढ़ा रहे थे लेकिन उसका आधा भी हासिल नहीं कर पाये।

यह चुनाव परिणाम दर्शा रहे हैं कि पश्चिम बंगाल विधानसभा चुनावों की तरह इस बार के लोकसभा चुनावों में भी भाजपा पूरी तरह हवा में ही रही। भाजपा ने मीडिया में हवा बना ली लेकिन जमीनी स्थिति का आकलन नहीं कर पाई। भाजपा ने 2019 के लोकसभा चुनावों में 18 सीटें और 2021 के विधानसभा चुनावों में 75 सीटें तो जीत लीं लेकिन पार्टी के नेता जमीन पर लोगों से जुड़ने की बजाय आपस में ही उलझे रहे। दिलीप घोष जैसे वरिष्ठ नेता को लगता रहा कि सुकांत मजूमदार जैसे युवा नेता को पार्टी की कमान क्यों सौंप दी गयी है? कई नेताओं को यह लगता रहा कि तृणमूल कांग्रेस से आये शुभेंदु अधिकारी को विधानसभा में विपक्ष के नेता जैसा अहम पद तथा तमाम अन्य जिम्मेदारियां क्यों सौंप दी गयी हैं? देखा जाये बंगाल में भाजपा के पुराने और नये नेताओं के बीच सामंजस्य कभी बन ही नहीं पाया और इस दूरी को पार्टी का आलाकमान भी पाट नहीं पाया जिससे भाजपा को बड़ा नुकसान हो गया। इसके अलावा पार्टी का आलाकमान दिल्ली में बैठ कर बंगाल में पार्टी को चलाता रहा जिसका सीधा असर भाजपा के प्रदर्शन पर दिख रहा है। इसके अलावा, भाजपा ने लोकसभा चुनावों से पहले सीएए के नियम अधिसूचित कर दिये, यही नहीं बंगाल में मतदान से पहले सीएए के तहत लोगों को नागरिकता भी प्रदान कर दी लेकिन उसका कोई असर नहीं हुआ। जिन क्षेत्रों में भाजपा को सीएए का फायदा मिलने की उम्मीद थी वहां भी तृणमूल कांग्रेस जीत गयी।

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी और केंद्रीय गृह मंत्री अमित शाह की रैलियों में अपार भीड़ तो उमड़ी लेकिन वह वोटों में परिवर्तित नहीं हो पाई तो इसका एक बड़ा कारण भाजपा की सांगठनिक कमजोरी भी है। भाजपा ने कहने को पार्टी महासचिव सुनील बंसल समेत तमाम वरिष्ठ नेताओं को बंगाल में लगा रखा था लेकिन परिणाम दर्शा रहे हैं कि यह सभी नेता जनता की नब्ज नहीं पकड़ पाये। पिछले साल पश्चिम बंगाल में हुए पंचायत चुनावों में भी भाजपा का प्रदर्शन अच्छा नहीं रहा था लेकिन उसके बावजूद पुरानी टीम को बरकरार रखा गया था। इसके अलावा, ममता बनर्जी जिस तरह सीएए और एनआरसी को लेकर लोगों के बीच भय का वातावरण बनाती रहीं उसकी भी काट भाजपा नहीं कर पाई।

देखा जाये तो ममता बनर्जी की छवि फाइटर नेता की रही है और वह अपनी पार्टी को जिताने के लिए जी-जान लगा देती हैं। चुनाव प्रचार के दौरान खुद पर होने वाले राजनीतिक हमलों को वह अपने पक्ष में मोड़ लेने में माहिर हैं। इस बार के चुनावों में भी उन्होंने ऐसा कई बार किया। इसके अलावा, इंडिया गठबंधन के तमाम नेताओं ने विभिन्न राज्यों में सीटों का बंटवारा कर आपस में समन्वय बनाकर चुनाव लड़ा लेकिन ममता बनर्जी ने बंगाल में अकेले ही सारी चुनौती झेली।

उनके तमाम नेता भ्रष्टाचार के आरोपों के घेरे में थे, भाजपा जैसी साधन संपन्न पार्टी से मुकाबला करना था, इसके बावजूद ममता ने किसी दल का सहयोग नहीं लिया और अपने बलबूते चुनाव प्रचार में उतर गयीं। चुनाव प्रचार की शुरूआत में ही उनको चोट भी लगी लेकिन इसकी परवाह किये बिना उन्होंने प्रचार में एड़ी चोटी का जोर लगा दिया और आखिरकार प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की अजेय नेता की छवि उन्होंने तोड़ डाली। मोदी की गारंटी के साथ शुरू हुए भाजपा के प्रचार को ममता के वादों ने धो डाला और बंगाल की जनता ने दिखा दिया कि वह अपनी दीदी के साथ खड़ी है। इसके अलावा, इन परिणामों ने ममता बनर्जी की क्षेत्रीय नेता की छवि को तो पुख्ता किया ही है साथ ही राष्ट्रीय राजनीति में भी उनका महत्व काफी बढ़ा दिया है।

ममता बनर्जी ने जब लोकसभा चुनावों के दौरान एकला चलो का फैसला किया था तब उनको इंडिया गठबंधन के कई नेताओं ने मनाने का प्रयास किया था लेकिन वह नहीं मानी थीं क्योंकि संभवतः उन्हें अपने कामकाज और चुनावी रणनीति पर भरोसा था। आखिरकार ममता का फैसला तब सही साबित हुआ जब लोकसभा चुनाव के परिणाम सामने आये। हम आपको बता दें कि इस बार तृणमूल कांग्रेस के खाते में 29 सीटें गयी हैं जबकि भाजपा के हाथ मात्र 12 सीटें लगी हैं और कांग्रेस को महज एक सीट से संतोष करना पड़ा है जबकि वामपंथी दल एक बार फिर खाली हाथ रह गये हैं। यह परिणाम इस बात के भी संकेत दे रहे हैं कि आगामी बंगाल विधानसभा चुनावों के दौरान भी तृणमूल कांग्रेस को चुनौती देना किसी भी दल के लिए आसान नहीं होगा। साथ ही इन परिणामों ने जनता के बीच यह संदेश भी दिया है कि तृणमूल कांग्रेस फिलहाल अजेय है। दूसरी ओर, इस चुनाव परिणाम ने ममता बनर्जी के भतीजे और सांसद अभिषेक बनर्जी का भी कद बढ़ाया है। चुनाव प्रचार के दौरान अभिषेक बनर्जी ने भी सघन चुनाव प्रचार किया था और ममता के एजेंडे को वह बंगाल में जिस तरीके से आगे बढ़ा रहे हैं उससे वही टीएमसी प्रमुख के सही राजनीतिक उत्तराधिकारी के रूप में नजर आ रहे हैं। चुनाव के दौरान अभिषेक बनर्जी और उनकी टीम जिस तरह भाजपा के आरोपों की काट तुरंत-तुरंत करती रही और जोरदार पलटवार करती रही उससे सोशल मीडिया पर खासकर तृणमूल कांग्रेस को बढ़त मिलती रही।

बहरहाल, इस चुनाव परिणाम का पूरा दोष मोदी-शाह या नड्डा पर नहीं डाला जा सकता। स्थानीय नेताओं को इस खराब प्रदर्शन की जिम्मेदारी लेनी होगी खासकर शुभेंदु अधिकारी को। अधिकारी के भाजपा में आने से पहले पार्टी ने 2019 के लोकसभा चुनावों में रिकॉर्ड जीत हासिल की थी और उसके बाद पंचायत चुनावों में भी कमाल दिखाया था। यही नहीं विधानसभा चुनावों में भी भाजपा 3 से 75 सीटों पर पहुँच गयी थी। लेकिन शुभेंदु अधिकारी के कमान संभालने के बाद से पार्टी संगठन में जो खिंचाव रहने लगा है उसका असर चुनाव नतीजों पर भी दिखने लगा है। पिछले साल हुए पंचायत चुनाव हों या अभी हुए लोकसभा चुनाव, दोनों में ही भाजपा का प्रदर्शन अपेक्षा के अनुरूप नहीं रहा है। भाजपा आलाकमान को भी सोचना होगा कि पार्टी को पुराने, प्रतिबद्ध और विश्वसनीय नेता आगे बढ़ा सकते हैं या पाला बदल कर आने वाले और केंद्र में किन्हीं नेताओं के प्रति वफादार रह कर काम करने वाले नेता पार्टी को ज्यादा आगे ले जा सकते हैं।

18 वीं लोकसभा चुनाव में मिले जनादेश के मायने

18 वीं लोकसभा के चुनाव परिणामों ने एक बार फिर सिद्ध कर दिया है कि मतदाता के मन को समझना इतना आसान नहीं हैं। इसी तरह से एक्जिट पोल के परिणामों और धरातलीय परिणामों में अंतर से साफ हो जाता है कि मतदाता खुलता भी नहीं है तो किसके पक्ष में मतदान करके आया है उसे वह मुखर होकर बताता भी नहीं है। चुनाव परिणामों से सट्टा बाजार की भी पोल खुल कर रह गई है। ऐसे में सवाल यह हो जाता है कि मतदाता इस जनादेश के माध्यम से आखिर संदेश क्या देना चाहते हैं? लोकसभा चुनाव परिणामों से यह तो साफ हो गया है कि मतदाता ने एनडीए को तीसरी बार सरकार चलाने या यों कहें कि कंटिन्यूटी का अवसर दे दिया है क्योंकि एनडीए को स्पष्ट बहुमत दिया है। ऐसा नहीं है कि परिणाम के बाद किसी बाहरी दल के सहयोग की आवश्यकता हो। बहुमत के 272 की तुलना में एनडीए को 293 सीटें मिली हैं वहीं पिछले दो चुनावों की तरह इस बार भाजपा को अकेले स्पष्ट बहुमत के आंकड़ें से दूर अवश्य रखा है पर सबसे बड़े दल के रुप में भाजपा सामने आई है। देखा जाए तो 10 साल बाद किसी भी एक दल को स्पष्ट बहुमत नहीं मिला है। इससे यह भी तो स्पष्ट हो जाता है कि सत्ता विरोधी लहर उतनी नहीं रही जितनी दस साल के शासन के बाद सामान्यतः आ जाती है पर उत्तर प्रदेश, महाराष्ट्र, राजस्थान, हरियाणा आदि के माध्यम से मतदाता ने अपनी नाराजगी जाहिर करने में किसी तरह का संकोच भी नहीं किया है। दरअसल जनआंकाक्षाओं और सरकार की परफारमेंस के बीच अंतर को पाटने में सरकार पूरी तरह से सफल नहीं रही। हांलाकि परफारमेंस के पेरामीटर्स या यों कहें कि मापदण्ड बदलते रहते हैं। एक बात यह भी स्पष्ट हो जाना चाहिए कि यह मेंडेंट केन्द्र सरकार की वर्तमान नीतियों का नकार नहीं हैं अपितु मतदाता सरकार द्वारा नेपथ्य में ड़ाले हुए विषयों को सामने लाकर आगे बढ़ने की दिषा में दिया गया संदेश है। और साफ है कि सरकार की प्राथमिकता में इन विषयों को लेना ही होगा।

दरअसल जनता कहीं ना कहीं संतुलन चाहती हैं। सरकारों को जहां एग्रेसिव होना अच्छा लगता हैं वहीं जनता कहीं ना कहीं डिलीवरी सिस्टम को लेकर भी चिंतित रहती है। केवल उज्जवल और एग्रेसिव छवि, सफल विदेश नीति, राष्ट्रीयता और राष्ट्रवाद, धर्म, आर्थिक विकास या यों कहें कि इकोनोमिक ग्रोथ के साथ ही बहुत से ऐसे कारक है जिन्हें नकारा नहीं जा सकता। इसमें कोई दो राय नहीं कि दुनिया का सबस बड़ा और सफलतम लोकतंत्र हमारे यहां है। लोकतांत्रिक देषों में सर्वाधिक राजनीतिक दलों वाला भी हमारा ही देश है। हमारी लोकतांत्रिक व्यवस्था व चुनाव व्यवस्था की सारी दुनिया कायल है। पर इसके साथ ही अब आमजन का मनोभाव यह है कि राजनीतिक दलों के बीच स्वस्थ्य प्रतिस्पर्धा होनी चाहिए ना कि मण्डी बाजार जैसी एक दूसरे पर छिंटाकशी के हालात। वास्तविकता तो यह है कि प्रमुख राजनीतिक दलों के बीच स्वस्थ्य प्रतिस्पर्धा तो रही ही नहीं है अपितु दिन प्रतिदिन एक दूसरे पर आरोप प्रत्यारोप लगाना ही एकमात्र काम रह गया। मानों या ना मानों पर आज हालात यह हो गए हैं कि राजनीतिक शालिनता तो रही ही नहीं। दूसरी बात धर्म की करें तो उत्तर प्रदेष में अयोध्या की सीट पर बीजेपी उम्मीद्वार की हार और यूपी के परिणाम बीजेपी के लिए घोर निराशाजनक होने से साफ संकेत हैं कि केवल श्रीराम लला या धर्म के नाम पर ज्यादा दिन नहीं चला जा सकता। लोगों का मानना है कि अब राम मंदिर बन गया वह सबके सामने हैं तो अब उसे जनमानस की आस्था का केन्द्र रहने दो नाकि उसे राजनीतिक रुप से भुनाना। हिन्दी बेल्ट के परिणाम इसे साफ कर देते हैं। लोग आतंकवादी गतिविधियों व असामाजिक गतिविधियों के खिलाफ सख्त कदम को तो उचित मानते हैं पर अब इसमें धर्म का प्रयोग कुछ अति ही लगने लगा है।

एक अन्य बिंदु आर्थिक एजेण्डा को लेकर है। कहीं भी मतदाता ने आर्थिक एजेण्डें को नकारा नहीं हैं। पर लोग अब महंगाई से त्रस्त हो रहे हैं तो बाजार पर सरकार के नियंत्रण कम होने से परेशान है। जनमानस जहां आर्थिक क्षेत्र में हाई ग्रोथ चाहने लगा है तो सबसे बड़ी समस्या रोजगार के अवसरों को लेकर है। पक्ष व विपक्ष सभी का प्रिय मुद्दा नौकरियां है। सरकार जहां कहती है कि लाखों की संख्या में नौकरी के अवसर विकसित किए हैं वहीं विपक्ष नौकरियां नहीं मिलने की बात करता रहा है। इन चुनावों में भी हिंदी बेल्ट में नौकरियों की कमी का अण्डर कंरट अवश्य रहा है। इसलिए नौकरियों के अवसर विकसित करने के साथ ही नौकरियां उपलब्ध कराने और उसका प्रोपेगेंडा करने की आवश्यकता है। इसके साथ ही आम आदमी का जीवनयापन आसानी से हो सके, इसके लिए सरकार को विजिलेंट रहना ही होगा। इसी तरह से आधारभूत संरचनाओं के विस्तार पर जोर देना होगा।

स्वत्वाधिकारी, स्वामी, मुद्रक एवं प्रकाशक सीमा यादव द्वारा मै0 सुभाषिनी ऑफसैट प्रिन्टर्स एप-10 पटेल नगर तृतीय, गाजियाबाद से मुद्रित करवाकर प्राचीन देवी मंदिर डासना, गाजियाबाद उ.प्र. से प्रकाशित किया।

Tital Code : UPHIN40005

संपादक - अनिल यादव

Mo. 93111 39274

www.suryabulletin.com
suryabulletin@gmail.com

जम्मू क्षेत्र में अशांति फैलाने की नापाक साजिश: उपराज्यपाल

जम्मू। जम्मू-कश्मीर के उपराज्यपाल मनोज सिन्हा ने सोमवार को कहा कि रियासी जिले में एक बस पर हुआ आतंकवादी हमला जम्मू क्षेत्र में अशांति फैलाने की नापाक साजिश का हिस्सा है। जम्मू-कश्मीर के रियासी जिले में रविवार को आतंकवादियों ने तीर्थयात्रियों की एक बस पर गोलीबारी की, जिससे नौ लोगों की मौत हो गयी और 41 अन्य लोग घायल हो गये। बस शिव खोड़ी मंदिर से कटरा स्थित माता वैष्णो देवी मंदिर जा रही थी और इसी दौरान पोनी इलाके के तेरयाथ गांव के पास हमला किया गया और 53 सीट वाली बस गोलीबारी के बाद गहरी खाई में गिर गई।

उपराज्यपाल ने यहां सरकारी मेडिकल कॉलेज में भर्ती 18 घायलों से मिलने के बाद संवाददाताओं से कहा कि कल शाम एक दुर्भाग्यपूर्ण घटना हुई, जब आतंकवादियों ने एक बस के चालक को निशाना बनाया जिसके कारण उसने वाहन पर से नियंत्रण खो दिया और बस खाई में गिर गई। इसके परिणामस्वरूप नौ लोगों की मौत हो गई। घटना के लिए जिम्मेदार लोगों को दंडित करने के लिए पुलिस, सीआरपीएफ और सेना ने एक संयुक्त अभियान चलाया है। उन्होंने बताया कि पुलिस महानिदेशक आर आर स्वैन अपनी

टीम के साथ घटनास्थल पर मौजूद हैं और आतंकवाद विरोधी अभियान की निगरानी कर रहे हैं।

सिन्हा ने कहा कि हमारी तत्काल प्राथमिकता घायलों की जान बचाना है। हम जानते हैं कि किसी की जान जाने की भरपाई किसी भी तरह से संभव नहीं है लेकिन परिवारों की मदद के लिए प्रशासन ने मृतकों के परिजनों के लिए 10-10 लाख रुपये और घायलों के लिए 50-50 हजार रुपये की अनुग्रह राशि मंजूर की है। उपराज्यपाल ने कहा कि प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी और केंद्रीय मंत्री अमित शाह स्थिति पर निकटता से नजर रख रहे हैं और हमले के तुरंत बाद उन्होंने उनसे बात की थी। सिन्हा ने कहा कि इस हमले के लिए जिम्मेदार लोगों को बख्शा नहीं जाएगा। यह हमला किसी तरह जम्मू क्षेत्र में अशांति फैलाने की नापाक साजिश का हिस्सा है, लेकिन हम इस तरह के प्रयास को विफल करने के लिए दृढ़ हैं। उपराज्यपाल ने कहा कि वह रियासी जिले के कटरा इलाके में नारायण अस्पताल का भी दौरा करेंगे और वहां भर्ती 14 अन्य घायलों से मुलाकात करेंगे।

वहीं, अलगाववादी संगठन हुर्रियत कॉन्फ्रेंस ने आतंकवादी हमले की निंदा की और कहा कि वह मानवता के खिलाफ सभी प्रकार की हिंसा की निंदा करता है और करता रहेगा। इस बीच, कटरा, डोडा शहर और कठुआ जिले सहित पूरे जम्मू क्षेत्र में पाकिस्तान विरोधी प्रदर्शन हुए। प्रदर्शन में ऐसी घटनाओं को रोकने के लिए सुरक्षा इंतजाम बढ़ाने की मांग की गई। प्रदर्शनकारियों ने पाकिस्तान पर जम्मू कश्मीर में आतंकवाद को प्रायोजित करने का आरोप लगाते हुए पड़ोसी देश के खिलाफ कार्रवाई की मांग की।

जम्मू कश्मीर बस हमला: आतंकवादियों की खोजबीन के लिए अभियान जारी

जम्मू। जम्मू कश्मीर के रियासी जिले में एक बस पर हुए हमले के लिए जिम्मेदार तीन विदेशी आतंकवादियों को पकड़ने के लिए व्यापक अभियान जारी है। घटना की जांच में शामिल अधिकारियों ने सोमवार को यह जानकारी दी। ये तीनों विदेशी आतंकवादी संभवतः लश्कर-ए-तैयबा के हैं। रविवार को हुए इस हमले में दो वर्षीय एक बच्चे सहित नौ लोगों की मौत हो गई और 41 अन्य घायल हैं। हमले में घायल लोगों के बयानों के आधार पर अधिकारियों ने इस संभावना से इनकार नहीं किया है कि मौके पर एक चौथा व्यक्ति भी मौजूद था जिसने तीनों आतंकवादियों की मदद की। आतंकवादियों ने बस पर उस वक्त गोलीबारी की, जब यह शिव खोड़ी मंदिर से कटरा स्थित माता वैष्णो देवी मंदिर जा रही थी। हमले के चलते बस रियासी के पोनी इलाके में तेरयाथ गांव के निकट सड़क से फिसल कर गहरी खाई में गिर गई। बस में उत्तर प्रदेश, राजस्थान और दिल्ली के तीर्थयात्री सवार थे। हमले के बाद, पुलिस, सेना, एनआईए और केंद्रीय खुफिया एजेंसियों ने एक संयुक्त जांच अभियान शुरू किया। अधिकारियों ने बताया कि हमले में जीवित बचे यात्री अपने बयान दर्ज करा रहे हैं जबकि इस कृत्य को अंजाम देने वालों का पता लगाने के लिए खोजबीन अभियान जारी है। प्रतिबंधित आतंकी संगठन लश्कर-ए-तैयबा से संबद्ध समूह 'द रेसिस्टेंस फ्रंट' ने शुरुआत में हमले की जिम्मेदारी ली थी लेकिन अपने बयान को बाद में वापस ले लिया। हमले में जान गंवाने वालों में राजस्थान का टीटू साहनी और उसकी मां पूजा भी हैं। वे हमले में जान गंवाने वाले राज्य के चार लोगों में शामिल हैं। मृतकों में तीन उत्तर प्रदेश से हैं। मृतकों में शामिल बस के चालक और संवाहक, दोनों रियासी से थे। अधिकारियों ने कहा कि हमले में नौ में से पांच लोगों को गोली लगी थी। उन्होंने बताया कि हमले में 41 लोग घायल हुए हैं, जिनमें से 10 को गोली लगी है। घायलों में से कुछ का जम्मू और रियासी जिलों के अस्पतालों में इलाज चल रहा है। सुरक्षा बलों को संदेह है कि आतंकवादी राजौरी और रियासी के पर्वतीय इलाकों में छिपे हुए हैं और उन्होंने क्षेत्र में खोजबीन अभियान तेज कर दिया है। रियासी के वरिष्ठ पुलिस अधीक्षक मोहित शर्मा ने कहा कि इलाके में तलाश अभियान शुरू किया गया है।

मणिपुर सीएम के सुरक्षा काफिले पर संदिग्ध उग्रवादियों ने किया हमला, एक जवान घायल

इंफाल। संदिग्ध उग्रवादियों ने मणिपुर के मुख्यमंत्री एन बीरेन सिंह के अग्रिम सुरक्षा काफिले पर कांगपोकपी जिले में घात लगाकर सोमवार को हमला कर दिया, जिसमें एक जवान घायल हो गया। पुलिस ने यह जानकारी दी। पुलिस ने बताया कि काफिला हिंसा प्रभावित जिरीबाम जिले की ओर जा रहा था, तभी राष्ट्रीय राजमार्ग 53 पर कोटलेन गांव के पास सुबह करीब साढ़े दस बजे उस पर हमला हुआ।

एक पुलिस अधिकारी ने बताया कि सुरक्षा बलों के वाहनों पर कई गोलियां दागी गईं, जिसके बाद सुरक्षा बलों ने भी जवाबी कार्रवाई की। अधिकारी ने बताया कि काफिले के एक वाहन के चालक के दाहिने कंधे पर गोली लगी है और उसे इंफाल के एक अस्पताल में ले जाया गया है। उन्होंने कहा कि सुरक्षा बल राज्य की राजधानी से करीब 36 किलोमीटर दूर घात लगाकर किए गए हमले की जगह पर पहुंच गए हैं और बंदूकधारियों का पता लगाने के लिए तलाश अभियान शुरू कर दिया गया है।

एक अधिकारी ने कहा कि मुख्यमंत्री बीरेन सिंह अभी दिल्ली से इंफाल पहुंचे हैं। वह जिले में स्थिति का जायजा लेने के लिए जिरीबाम जाने की योजना बना रहे थे। संदिग्ध उग्रवादियों ने शनिवार को जिरीबाम में दो पुलिस चौकियों, वन विभाग के कार्यालय और कम से कम 70 मकानों में आग लगा दी थी।

सीएम ने काफिले पर हमले को 'बेहद दुर्भाग्यपूर्ण, कायरतापूर्ण' बताया, कड़ी कार्रवाई की घोषणा

मुख्यमंत्री एन बीरेन सिंह ने अग्रिम सुरक्षा काफिले पर हमले को 'बहुत दुर्भाग्यपूर्ण, कायरतापूर्ण' बताते हुए इसकी कड़ी निंदा की। आज दिल्ली से लौटने के बाद मुख्यमंत्री ने दृढ़तापूर्वक घोषणा की कि हमलावरों के खिलाफ सख्त कार्रवाई की जाएगी, सरकार चुप नहीं बैठेगी। मुख्यमंत्री बीरेन सिंह आगामी कल मणिपुर के जिरीबाम जिले के विभिन्न गांवों की स्थिति का जायजा लेने के लिए संबंधित जिले का दौरा करने वाले थे। सोमवार को दिल्ली से इंफाल पहुंचते ही मुख्यमंत्री शिजा अस्पताल गये और आतंकी हमले में घायल सुरक्षाकर्मी का हालचाल लिया। वहां मौजूद पत्रकारों से मुखातिब होते हुए मुख्यमंत्री बीरेन सिंह ने घटना की कड़ी निंदा की और कहा कि यह घटना बेहद दुर्भाग्यपूर्ण, कायरतापूर्ण और बेहद निंदनीय है। मुख्यमंत्री ने कहा कि मैं इस घटना की कड़ी निंदा करता हूं। राज्य के लोगों और सुरक्षा बलों पर होने वाले हमले न केवल मेरे नेतृत्व पर हैं, बल्कि मणिपुर के लोगों पर भी हैं। इसलिए राज्य सरकार हाथ पर हाथ धरे नहीं बैठी रह सकती, कुछ तो करना ही होगा। उन्होंने कहा कि हिंसा फैलाने वालों के खिलाफ पहले ही सख्त रुख अपनाने का निर्देश संबंधित लोगों को दिया जा चुका है। उन्होंने कहा कि मैं तत्काल आधार पर अपने सभी सहयोगियों से बात करूंगा। अंतिम निर्णय लेना होगा। मुख्यमंत्री ने कहा कि वह रणनीतिक प्रक्रिया तैयार करने के लिए अपने मंत्रिमंडल के साथ बैठक करेंगे।

संक्षिप्त खबरें

चुनावी हिंसा को लेकर शुभेंदु अधिकारी ने किया हाई कोर्ट का रुख

कोलकाता। पश्चिम बंगाल विधानसभा में विपक्ष के नेता शुभेंदु अधिकारी ने सोमवार को कलकत्ता उच्च न्यायालय का रुख किया है। उन्होंने लोकसभा चुनाव बीतने के बाद राज्य भर में भाजपा कार्यकर्ताओं के खिलाफ हो रही राजनीतिक हिंसा रोकने के लिए तत्काल हस्तक्षेप की मांग की है। अधिकारी ने दावा किया कि लोकसभा चुनाव के बाद राज्य में चुनाव के बाद हिंसा की कई घटनाएं हो रही हैं। मुख्य न्यायाधीश टी.एस. शिवगणनम की अध्यक्षता वाली खंडपीठ ने कहा कि अदालत बुधवार को भाजपा नेता की याचिका पर सुनवाई करेगी। अधिकारी के वकील बिलवादल भट्टाचार्य ने न्यायमूर्ति हिरणमय भट्टाचार्य की पीठ के समक्ष कहा कि हाई कोर्ट को राज्य भर में भाजपा कार्यकर्ताओं की सुरक्षा सुनिश्चित करने का ठोस निर्देश पुलिस को देना चाहिए। बुधवार को मामले की सुनवाई हो सकती है।

प्रज्वल रेवन्ना को 14 दिन की न्यायिक हिरासत में भेजा गया

बेंगलुरु। बेंगलुरु की एक अदालत ने कई महिलाओं से बलात्कार और यौन शोषण के आरोपों का सामना कर रहे जद (एस) के पूर्व सांसद प्रज्वल रेवन्ना को सोमवार को 14 दिन की न्यायिक हिरासत में भेज दिया। रेवन्ना को एसआईटी की हिरासत समाप्त होने पर सोमवार को 42वें अतिरिक्त मुख्य मेट्रोपोलिटन मजिस्ट्रेट (एसीएमएम) की अदालत में पेश किया गया। अदालत ने 31 मई को रेवन्ना को छह जून तक के लिए एसआईटी की हिरासत में भेज दिया था और बाद में हिरासत 10 जून तक बढ़ा दी थी। एसआईटी ने हिरासत के दौरान साक्ष्य जुटाने और गवाहों से पूछताछ करने समेत विस्तृत जांच की तथा आरोपों के बारे में रेवन्ना से व्यापक पूछताछ की। अदालत ने आरोपों की गंभीरता और एसआईटी की ओर से प्रस्तुत साक्ष्यों को ध्यान में रखते हुए रेवन्ना को 24 जून तक के लिए न्यायिक हिरासत में भेजने का फैसला किया।

सीबीएसई ने फर्जी पाठ्यक्रम, नमूना प्रश्न पत्र को लेकर चेतावनी जारी की

नई दिल्ली। केंद्रीय माध्यमिक शिक्षा बोर्ड (सीबीएसई) ने सोमवार को एक परामर्श जारी कर छात्रों और अभिभावकों को 2024-25 सत्र के पाठ्यक्रम, संसाधनों और नमूना प्रश्न पत्रों के बारे में भ्रामक जानकारी के प्रति आगाह किया। बोर्ड ने विद्यार्थियों से असत्यापित खबरें फैलाने वाले ऑनलाइन पोर्टलों का शिकार न बनने का आग्रह किया। परामर्श में कहा गया है, हमें पता चला है कि कुछ ऑनलाइन पोर्टल और वेबसाइट नमूना प्रश्न पत्रों, पाठ्यक्रम, सीबीएसई संसाधनों और गतिविधियों से संबंधित पुराने लिंक और असत्यापित समाचार प्रसारित कर रहे हैं। ये लिंक और समाचार सत्र 2024-25 की अद्यतन जानकारी प्रदान करने का झूठा दावा करते हैं। परामर्श में कहा गया है, जनहित में, हम जोर देकर कहना चाहते हैं कि अनधिकृत स्रोतों से प्राप्त जानकारी भ्रामक हो सकती है और स्कूलों, छात्रों, अभिभावकों व अन्य हितधारकों के बीच अनावश्यक भ्रम पैदा कर सकती है।

बंगाल में अवैध पटाखा फैक्टरी में धमाका, एक व्यक्ति घायल

कोलकाता। पश्चिम बंगाल के पूर्व मेदिनीपुर जिले में एक अवैध पटाखा फैक्टरी में हुए धमाके में एक व्यक्ति गंभीर रूप से घायल हो गया। पुलिस ने सोमवार को यह जानकारी दी। बताया जा रहा है कि यह फैक्टरी एक घर में संचालित की जा रही थी और रविवार देर रात हुए धमाके के कारण उस घर की छत उड़ गई। पुलिस अधिकारी ने बताया कि कोलाघाट इलाके के प्रयाग गांव में कम से कम चार से पांच अन्य घर भी क्षतिग्रस्त हो गए। उन्होंने बताया कि आनंद मैती के घर में एक अवैध पटाखा बनाने की फैक्टरी संचालित की जा रही थी। विस्फोट के कारण घर की छत उड़ गई और दीवारें तथा खिड़कियां क्षतिग्रस्त हो गईं। एक व्यक्ति घायल हो गया। उन्होंने बताया कि धमाके की जांच की जा रही है ऐसे में घर के आसपास पुलिसकर्मियों को तैनात किया गया है। पिछले साल भी मई में इसी जिले के खादिकुल गांव में एक घर के अंदर अवैध रूप से संचालित की जा रही पटाखा फैक्टरी में धमाका हो गया था जिसमें 12 लोग मारे गए थे।

भाजपा की केरल इकाई में कोई बदलाव नहीं होगा: सुरेंद्रन

नई दिल्ली/तिरुवनंतपुरम। भाजपा की केरल इकाई के अध्यक्ष के. सुरेंद्रन ने सोमवार को उन खबरों को खारिज कर दिया, जिनमें कहा गया था कि पार्टी की प्रदेश इकाई में बदलाव होगा। सुरेंद्रन ने त्रिशूर लोकसभा सीट जीतने वाले अभिनेता-राजनीतिक नेता सुरेश गोपी के बारे में उन खबरों को भी फर्जी बताया जिनमें कहा गया है कि वह नरेंद्र मोदी के नेतृत्व वाली सरकार में कैबिनेट या राज्य मंत्री (स्वतंत्र) प्रभार नहीं बनाए जाने से नाराज हैं। गोपी ने रविवार को राजग सरकार में राज्य मंत्री पद की शपथ ली थी।

नई दिल्ली में मीडिया के साथ बातचीत में सुरेंद्रन ने केरल मीडिया का मजाक उड़ाया और कहा कि पत्रकारों का एक तबका भाजपा की प्रदेश इकाई के खिलाफ फर्जी खबरें फैला रहा है। उन्होंने दावा किया कि मीडिया ने खबर फैलाई थी कि भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) की प्रदेश इकाई त्रिशूर लोकसभा सीट से गोपी को हराने के लिए काम कर रही है। सुरेंद्रन ने कहा कि शुरुआत में, आपने (मीडिया) आरोप लगाया कि भाजपा की केरल इकाई ने सुरेश

गोपी को सत्यजीत रे फिल्म इंस्टिट्यूट का अध्यक्ष बनाकर उनसे बचने की योजना बनाई थी। आपने दावा किया था कि सुरेश गोपी त्रिशूर से चुनाव नहीं लड़ेंगे। जब चुनाव की घोषणा हुई तो मीडिया और कुछ तथाकथित पर्यवेक्षकों ने दावा किया कि प्रदेश भाजपा इकाई सुरेश गोपी को हराने की कोशिश कर रही है। गोपी ने त्रिशूर लोकसभा सीट पर 74,686 मतों के अंतर से जीत दर्ज की थी। सुरेंद्रन ने कहा कि लोगों ने फर्जी खबरों को खारिज कर दिया है। उन्होंने कहा कि मीडिया के एक तबके ने यह भी दावा किया कि मैं प्रदेश प्रमुख के पद से इस्तीफा दे दूंगा।

समाज के सेवक हैं, शासकीय अधिकारी-कर्मचारी: मुख्यमंत्री

भोपाल। मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने कहा है कि शासकीय अधिकारी-कर्मचारी इस भावना से कार्य करें कि वे सरकार के नहीं समाज के सेवक हैं। उनकी कार्यशैली में मानवीयता व संवेदना का सदैव प्रकटीकरण होना चाहिए। शासकीय अधिकारियों-कर्मचारियों को प्राप्त अधिकार जन-आकांक्षाओं और जनहित की पूर्ति के लिए हैं और उनकी जनता के प्रति जबावदारी है। शासकीय सेवा बहुमुखी प्रतिभा का प्रदर्शन करने का अवसर प्रदान करती है साथ ही यह परीक्षा भी लेती है।

सामान्यतः व्यक्ति जब अधिकार संपन्न होता है तो उसमें ठहराव और स्थिरता का भाव आ जाता है, जबकि हमें निरंतर सचेत और सक्रिय रहना है। शासकीय सेवा केवल नौकरी नहीं अपितु समाज के लिए सर्वश्रेष्ठ करने की बड़ी जिम्मेदारी है। हमें जो भी भूमिका मिल रही है उसे हम पूर्ण आत्मविश्वास के साथ बेहतर से बेहतर तरीके से निभाने का प्रयत्न

करें। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने सोमवार को प्रशासन अकादमी भोपाल में भारतीय प्रशासनिक सेवा, भारतीय वन सेवा, राज्य सेवा अधिकारियों के संयुक्त आधारभूत प्रशिक्षण कार्यक्रम के उद्घाटन सत्र को नई दिल्ली से ऑनलाइन संबोधित करते हुए यह बात कही। आर.सी.पी.वी. नरोन्हा प्रशासन एवं प्रबंधकीय अकादमी भोपाल में भारतीय प्रशासनिक सेवा 2023 बैच का राज्य प्रशिक्षण कार्यक्रम, भारतीय वन सेवा 2022 बैच का आधारभूत प्रशिक्षण कार्यक्रम और राज्य सिविल सेवा 2019-20 बैच का संयुक्त आधारभूत प्रशिक्षण कार्यक्रम 10 जून से आरंभ हो रहा है। प्रशासन अकादमी में कार्यक्रम का शुभारंभ अपर मुख्य सचिव सामान्य प्रशासन तथा महानिदेशक प्रशासन अकादमी विनोद कुमार, अपर मुख्य सचिव वन जे.एन. कंसोटिया, सचिव सामान्य प्रशासन जी.वी. रश्मि तथा संचालक प्रशासन अकादमी मुजीबुर्रहमान ने दीप प्रज्वलित कर किया। प्रशासन अकादमी के संकल्प गीत का गायन भी हुआ। शुभारंभ अवसर पर सभी प्रशिक्षुओं ने अपना परिचय दिया। मुख्यमंत्री ने कहा कि शासकीय अधिकारियों-कर्मचारियों से सुशासन के लिए कार्य करने की अपेक्षा है। उन्होंने सुशासन की व्याख्याता करते हुए कहा कि लोकहित में किया गया कार्य ही सुशासन है। भगवान श्री राम का रामराज्य तथा सम्राट विक्रमादित्य व सम्राट अशोक का कार्यकाल प्रशासनिक दक्षता और सुशासन का पर्याय माना जाते हैं।

उन्होंने से कहा कि वे समय का सदुपयोग सर्वश्रेष्ठ रूप में करें और अपनी क्षमता व योग्यता के दम पर निरंतर आगे बढ़ने का प्रयास करें। डॉ. यादव ने प्रशिक्षुओं को निर्भिक और निस्वार्थ रहते हुए कर्मयोगी की तरह काम करते हुए अपनी पहचान बनाने और कार्यशैली में पारदर्शिता, ईमानदारी व कर्तव्यनिष्ठा के बल पर अपनी आभा समाज में बिखेरने तथा नई विधाओं, नवाचारों को अपनाने के लिए प्रेरित करते हुए सभी के उज्जवल भविष्य की कामना की।

सोनिया, राहुल और प्रियंका ने की बांग्लादेश की प्रधानमंत्री शेख हसीना से मुलाकात

नई दिल्ली। कांग्रेस संसदीय दल की प्रमुख सोनिया गांधी, पार्टी के पूर्व अध्यक्ष राहुल गांधी और महासचिव प्रियंका गांधी वाद्रा ने सोमवार को बांग्लादेश की प्रधानमंत्री शेख हसीना से मुलाकात की तथा दोनों देशों के संबंधों को और मजबूत बनाने तथा कुछ अन्य विषयों पर चर्चा की।

राहुल गांधी ने अपने 'व्हाट्सएप' चैनल पर इस मुलाकात का वीडियो जारी किया। इसमें गांधी परिवार के तीनों सदस्य शेख हसीना से गलते मिलते और उनके साथ बातचीत करते देखे जा सकते हैं। राहुल गांधी ने कहा कि हमने भारत और बांग्लादेश के बीच विश्वास, सहयोग और आपसी विकास की प्रतिबद्धता पर आधारित स्वाभाविक संबंध को और मजबूत करने के लिए कई

विषयों पर चर्चा की। हसीना प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के शपथ ग्रहण समारोह के लिए रविवार को नई दिल्ली पहुंची थीं। गांधी परिवार और शेख हसीना के परिवार के बीच लंबे समय से निकट संबंध रहे हैं। हसीना के पिता बंगबंधु शेख मुजीबुर्रहमान की अगुवाई में जब बांग्लादेश पाकिस्तान से अलग होकर एक स्वतंत्र राष्ट्र के रूप में अस्तित्व में आया था तो उस समय इंदिरा गांधी भारत की प्रधानमंत्री थीं और मुक्ति संग्राम में भारत ने मुक्ति वाहिनी का खुलकर सहयोग किया था।

जयशंकर ने मुइज्जु, शेख हसीना और रानिल विक्रमसिंघे के साथ कीं द्विपक्षीय बैठकें

नई दिल्ली। केंद्रीय मंत्री एस जयशंकर ने मालदीव के राष्ट्रपति मोहम्मद मुइज्जू, बांग्लादेश की प्रधानमंत्री शेख हसीना और श्रीलंका के राष्ट्रपति रानिल विक्रमसिंघे के साथ सोमवार को द्विपक्षीय बैठकें कीं।

जयशंकर ने नेपाल के प्रधानमंत्री पुष्प कमल दाहाल 'प्रचंड', मॉरीशस के प्रधानमंत्री प्रविंद जगन्नाथ, भूटान के प्रधानमंत्री शेरिंग तोबगे और सेशेल्स के उपराष्ट्रपति अहमद अफीफ से भी मुलाकात की। भारत के पड़ोसी और हिंद महासागर क्षेत्र के सात नेता रविवार को प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी और केंद्रीय मंत्रिपरिषद के शपथ ग्रहण समारोह में भाग लेने के लिए दिल्ली में थे।

जयशंकर ने सोशल मीडिया मंच 'एक्स' पर लिखा, नई दिल्ली में आज मालदीव के राष्ट्रपति डॉ. मोहम्मद मुइज्जु से मिलकर खुशी हुई। भारत और मालदीव के मिलकर काम करने की उम्मीद करता हूं। जयशंकर

मोदी की पूर्ववर्ती कैबिनेट में विदेश मंत्री थे। उन्होंने रविवार को केंद्रीय मंत्री के तौर पर फिर से शपथ ली। मुइज्जु के पिछले साल 17 नवंबर को मालदीव का राष्ट्रपति बनने के बाद यह उनकी पहली भारत यात्रा है। ऐसा माना जाता है कि मुइज्जु का रुख चीन समर्थक है। उनके मालदीव के राष्ट्रपति पद पर आसीन होने के बाद से भारत और मालदीव के संबंधों में भारी तनाव पैदा हो गया है। उन्होंने शपथ लेने के कुछ ही घंटों बाद अपने देश से भारतीय सैन्यकर्मियों को वापस बुलाए जाने की मांग की थी। इस महीने की शुरुआत में भारतीय सैन्यकर्मियों की जगह आम नागरिकों को तैनात किया गया था।

पीएलएफआई एरिया कमांडर सहित पांच उग्रवादी हथियार के साथ गिरफ्तार

रांची। रांची में विवादित जमीन पर हथियार के बल पर कब्जा दिलाने वाले पीएलएफआई एरिया कमांडर सहित पांच उग्रवादी को नगड़ी थाना पुलिस ने गिरफ्तार किया है।

गिरफ्तार उग्रवादियों में गुमला निवासी एरिया कमांडर विजय बक्शी उर्फ रोहित बड़ाईक, लापुंग निवासी नीरज पाईक उर्फ छोटू , लापुंग निवासी अनमोल बड़ाईक, गुमला निवासी रोहित सिंह और नगड़ी निवासी काली टोप्पो शामिल है। इनके पास से दो देशी पिस्टल,चार जिंदा गोली, 22 पीस खाली खोखा, 1.50 लाख रुपया नकद, एक थार और एक स्कॉर्पियो वाहन, सात मोबाईल फोन, दो वॉकी-टॉकी और दो लोहे का फाइटर बरामद हुआ है।

एसएसपी चंदन कुमार सिन्हा ने सोमवार को संवाददाता सम्मेलन में बताया कि गुप्त सूचना मिली थी कि रांची -गुमला एनएच 43 मुख्य सड़क से रांची से होकर नगड़ी की तरफ एक काले रंग का महिन्द्रा थार वाहन और एक काले रंग का स्कॉर्पियो से प्रतिबंधित उग्रवादी संगठन पीएलएफआई के सदस्य एवं उसके सहयोगी अवैध हथियार के साथ रगदारी मांगने को लेकर आपराधिक घटना को अंजाम देने के फिराक में जा रहे है। सूचना के बाद थाना प्रभारी नगड़ी अभिषेक राय के नेतृत्व मे एक छापेमारी टीम का गठन किया गया। टीम ने ललगुटवा ओवर ब्रिज के पास रांची- गुमला मुख्य मार्ग पर वाहन चेकिंग शुरु किया। इसी दौरान रांची की तरफ से एक काले रंग की महिन्द्रा थार और एक महिन्द्रा स्कॉर्पियो तेजी से आते हुए दिखाई दिया, जिसे टीम ने रोकवा कर घेर लिया। जांच के दौरान हथियार बरामद किया गया।

पीएलएफआई का एरिया कमांडर विजय बक्सी उर्फ रोहित बडाईक उर्फ राहुल बडाईक सहित पांच को गिरफ्तार किया गया। एरिया कमांडर वर्तमान में राजधानी रांची क्षेत्र में जमीन के करोबार करता है। साथ ही अपने अन्य सहयोगी के माध्यम से जमीन कब्जा करने और जमीन कारोबारियों से पैसा लेकर विवादित जमीन को हथियार के बल पर कब्जा दिलाने का काम करता है।

3 नक्सलियों ने किया आत्मसमर्पण

दंतेवाड़ा। जिले में चलाये जा रहे नक्सल उन्मूलन अभियान लोन वर्राटू (घर वापस आईये) के तहत विगत कुछ माह में जिला पुलिस बल और सीआरपीएफ के द्वारा भटके हुए नक्सलियों को समाज की मुख्यधारा में जोड़ने के लिए लगातार संपर्क एवं संवाद किया जा रहा है । साथ ही प्रशासन की नक्सल पुनर्वास नीति का व्यापक प्रचार-प्रसार किया जा रहा है। इसी कड़ी में आज सोमवार को नक्सलियों के गंगालूर, भैरमगढ़ एवं कटेकल्याण एरिया कमेटी सक्रिय तीन नक्सलियों ने आत्मसमर्पण किया है।

सोमवार को नक्सलियों के गंगालूर, भैरमगढ़ एवं कटेकल्याण एरिया कमेटी सक्रिय तीन नक्सलियों मनकेली/पेद्दाकोरमा पंचायत जनमिलिशिया सदस्य संजय बारसे पिता स्व. बुधराम बारसे निवासी तिमेनार कारमपारा थाना मिरतुर जिला बीजापुर ,कुन्ना पंचायत कमेटी सदस्य सुकड़ा मड़कामी पिता स्व. मुक्का मड़कामीर निवासी कुन्ना तराई टिकरापारा थाना कूकानार जिला सुकमा एवं तथा ग्राम फुलगट्टा संघम सदस्या रिना कोरसा पति बुड़ता

वेको निवासी फुलगट्टा (हाल पनेड़ा कोलूपारा थाना गीदम) थाना मिरतुर जिला बीजापुर ने डीआरजी कार्यालय दंतेवाड़ा में आत्मसमर्पण कर दिया है। उपरोक्त नक्सलियों को आत्मसमर्पण कराने में आसूचना शाखा आरएफटी रेंज दन्तेवाड़ा, डीआरजी दंतेवाड़ा एवं 230वीं वाहिनी सीआरपीएफ दंतेवाड़ा का विशेष योगदान रहा। जिला पुलिस बल और सीआरपीएफ सभी भटके हुए माओवादियों से अपील की है कि हिंसा की धारा छोड़कर समाज की मुख्यधारा से जुड़ने के लिए निकटतम थाना अथवा कैंप में सम्पर्क करें और क्षेत्र के विकास में अपना अमूल्य योगदान दे।

शेयर बाजार रिकॉर्ड ऊंचाई पर पहुंचने के बाद फिसला, सेंसेक्स 203 अंक टूटा

मुंबई, 10 जून (भाषा) बड़ी सूचना प्रौद्योगिकी (आईटी) कंपनियों और एचडीएफसी बैंक के शेयर में बिकवाली के बीच प्रमुख शेयर सूचकांक सेंसेक्स और निफ्टी सोमवार को शुरुआती कारोबार में रिकॉर्ड ऊंचाई पर पहुंचने के बाद गिरकर बंद हुए। दिन में कारोबार के दौरान 30 शेयरों वाला बीएसई सेंसेक्स 77,000 अंक के स्तर को पार कर गया।

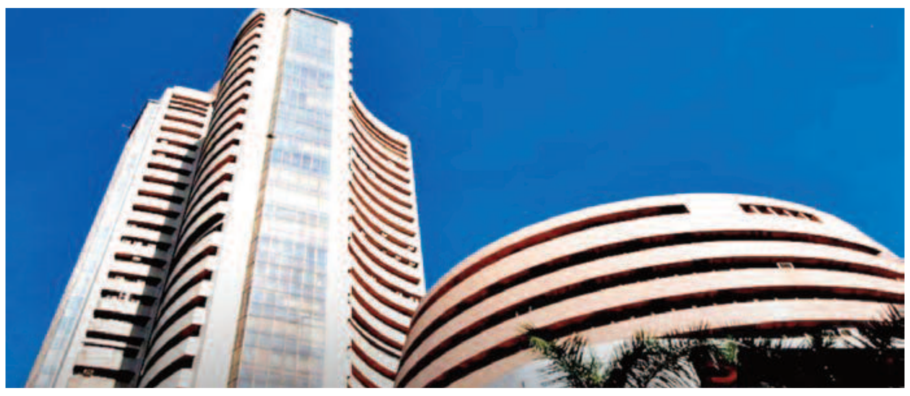

हालांकि, कारोबार के अंत में सूचकांक बिकवाली के दबाव में आ गया और 203.28 अंक या 0.27 प्रतिशत टूटकर 76,490.08 अंक पर बंद हुआ। इससे पहले दिन में सेंसेक्स 385.68 अंक या 0.50 प्रतिशत उछलकर 77,079.04 अंक के नए रिकॉर्ड पर पहुंच गया था। इसी तरह नेशनल स्टॉक एक्सचेंज का निफ्टी 30.95 अंक या 0.13 प्रतिशत गिरकर 23,259.20 अंक पर बंद हुआ। दिन में कारोबार के दौरान यह 121.75 अंक या 0.52 प्रतिशत चढ़कर 23,411.90 अंक के सर्वकालिक उच्चस्तर पर पहुंचा था। नरेन्द्र मोदी ने रविवार को तीसरे कार्यकाल के लिए प्रधानमंत्री पद की शपथ ली। उनके मंत्रिमंडल में 72 सदस्य शामिल हैं। माना जा रहा है कि तीसरे कार्यकाल में सरकार निरंतरता कायम रखने पर ध्यान देगी।

सेंसेक्स की कंपनियों में टेक महिंद्रा, इन्फोसिस, विप्रो, बजाज फाइनेंस, महिंद्रा एंड महिंद्रा, एचडीएफसी बैंक, एचसीएल टेक्नोलॉजीज और टाटा कंसल्टेंसी सर्विसेज में उल्लेखनीय गिरावट हुई। दूसरी ओर अल्ट्राटेक सीमेंट, पावर ग्रिड, नेस्ले, एनटीपीसी, टाटा स्टील और एक्सिस बैंक के शेयर लाभ में रहे। मेहता इक्विटीज लिमिटेड के वरिष्ठ उपाध्यक्ष (शोध) प्रशांत तापसे ने कहा कि सेंसेक्स के अपने नए उच्चस्तर से फिसलने के कारण बाजार में अस्थिरता लौट आई है। आईटी, धातु तथा तेल एवं गैस शेयरों में मुनाफावसूली के बीच कारोबार के अंत में सूचकांक तेजी से गिरा।

उन्होंने कहा कि अमेरिका के आंकड़ों से संकेत मिलता है कि ब्याज दरों में कटौती जल्द नहीं होगी, जिसके बाद कमजोर वैश्विक संकेतों के कारण भी बाजार में सुस्ती रही। व्यापक बाजार में, बीएसई स्मॉलकैप सूचकांक 1.04 प्रतिशत चढ़ा और मिडकैप 0.56 प्रतिशत के लाभ में रहा। क्षेत्रवार बात करें तो सेवाओं में 1.61 प्रतिशत, रियल्टी में 1.34 प्रतिशत, जिंस में 1.28 प्रतिशत, यूटिलिटी में 1.11 प्रतिशत, स्वास्थ्य सेवा में 0.77 प्रतिशत और औद्योगिक क्षेत्र में 0.49 प्रतिशत की तेजी आई। दूसरी ओर आईटी, वाहन, धातु और प्रौद्योगिकी क्षेत्र में गिरावट रही। शेयर बाजार के आंकड़ों के मुताबिक, विदेशी संस्थागत निवेशकों ने शुक्रवार को 4,391.02 करोड़ के शेयर खरीदे। जियोजीत फाइनेंशियल सर्विसेज के शोध प्रमुख विनोद नायर ने कहा कि केंद्र में नई सरकार के गठन के बाद भारतीय बाजार में फिलहाल नए उत्प्रेरकों की कमी है। इससे संकेत मिलता है कि निकट भविष्य में बाजार में कुछ कमजोरी आ सकती है। एशिया के अन्य बाजारों में जापान का निक्की लाभ में बंद हुआ, जबकि दक्षिण कोरिया के कॉस्पी में गिरावट हुई। चीन का शंघाई कम्पोजिट और हांगकांग का हैंगसेंग छुट्टियों के कारण बंद रहे। यूरोपीय बाजार गिरावट के साथ कारोबार कर रहे थे।

राजस्थान में एक जीडब्ल्यूएच बैटरी ऊर्जा भंडारण परियोजना का निर्माण किया शुरू

नई दिल्ली। जेएसडब्ल्यू एनर्जी ने राजस्थान के फतेहगढ़ में एक जीडब्ल्यूएच क्षमता की बैटरी ऊर्जा भंडारण प्रणाली परियोजना का निर्माण शुरू कर दिया है। जेएसडब्ल्यू एनर्जी ने शेयर बाजार को दी जानकारी में बताया कि कंपनी को हाल ही में सोलर एनर्जी कॉरपोरेशन ऑफ इंडिया लिमिटेड से इस परियोजना का ठेका मिला था। इस परियोजना में दो प्रतिष्ठान हैं, जिनमें से प्रत्येक की क्षमता 500 मेगावाट है। परियोजना को बिल्ड ओन ऑपरेट एंड ट्रांसफर तंत्र के तहत विकसित किया जाएगा और 12 साल बाद इसे 'ऑफटेकर' को हस्तांतरित कर दिया जाएगा। जेएसडब्ल्यू एनर्जी ने कहा कि उसका लक्ष्य जून 2025 तक इस परियोजना को चालू करना है। जेएसडब्ल्यू एनर्जी के संयुक्त प्रबंध निदेशक एवं मुख्य कार्यपालक अधिकारी शरद महेंद्र ने कहा कि हमारी बैटरी ऊर्जा भंडारण प्रणाली परियोजना ग्रिड स्थिरता को बढ़ाने और नवीकरणीय ऊर्जा स्रोतों को एकीकृत करने में एक महत्वपूर्ण प्रगति का प्रतिनिधित्व करती है।

सेबी का व्यक्तिगत शेयर को डेरिवेटिव कारोबार में शामिल करने के लिए सख्त नियमों का प्रस्ताव

नई दिल्ली। भारतीय प्रतिभूति एवं विनिमय बोर्ड (सेबी) ने डेरिवेटिव खंड में व्यक्तिगत शेयरों को शामिल करने के लिए सख्त मानदंडों का सोमवार को प्रस्ताव किया। नए प्रस्ताव के तहत शेयर बाजार के वायदा एवं विकल्प (एफएंडओ) खंड से लगातार कम कारोबार वाले शेयरों को बाहर किया जाएगा। सेबी ने इस बारे में जारी परामर्श पत्र में बाजार नियामक ने कहा है कि अंतर्निहित नकदी बाजार में पर्याप्त गहराई के बना बाजार में हेरफेर, अस्थिरता में वृद्धि तथा निवेशक सुरक्षा से समझौता होने का जोखिम बढ़ सकता है।

इन सभी के मद्देनजर सेबी के लिए यह सुनिश्चित करना जरूरी है कि डेरिवेटिव खंड में केवल आकार, नकदी और बाजार गहराई के संदर्भ में उच्च गुणवत्ता वाले शेयर ही उपलब्ध हों। प्रस्ताव के तहत, किसी व्यक्तिगत शेयर को डेरिवेटिव कारोबार में शामिल करने के लिए उसका कुल में से कम से कम 75 प्रतिशत कारोबारी दिवसों में कारोबार होना चाहिए। इसके अलावा कम से कम 15 प्रतिशत

सक्रिय व्यापारियों या 200 सदस्यों (जो भी कम हो) ने इस शेयर में कारोबार किया हो और इसका औसत दैनिक कारोबार 500 करोड़ रुपये से 1,500 करोड़ रुपये के बीच होना चाहिए। सेबी ने प्रस्ताव दिया है कि इसके अलावा अंतर्निहित शेयर के लिए खुले अनुबंधों की अधिकतम संख्या 1,250 करोड़ रुपये और 1,750 करोड़ रुपये होनी चाहिए।

वर्तमान में यह आंकड़ा 500 करोड़ रुपये है। इन प्रस्तावों का मकसद संबंधित शेयर में पर्याप्त कारोबार सुनिश्चित करना है। सेबी ने इस प्रस्ताव पर 19 जून तक सार्वजनिक टिप्पणियां मांगी हैं।

इक्विटी म्यूचुअल फंड में मई में निवेश बढ़कर 34,697 करोड़ रुपये पर पहुंचा

नई दिल्ली। इक्विटी म्यूचुअल फंड में मई में निवेश जोरदार बढ़त के साथ 34,697 करोड़ रुपये के रिकॉर्ड उच्चस्तर पर पहुंच गया। यह आंकड़ा इससे पिछले महीने के मुकाबले 83 प्रतिशत अधिक है। एसोसिएशन ऑफ म्यूचुअल फंड्स इन इंडिया (एम्फी) ने सोमवार को जारी आंकड़ो में बताया कि यह इक्विटी फंड में शुद्ध निवेश का लगातार 39वां महीना है। इसके अलावा, व्यवस्थित निवेश योजना (एसआईपी) से मासिक योगदान बढ़कर मई में 20,904 करोड़ रुपये हो गया, जो अप्रैल में 20,371 करोड़ रुपये था।

इन योजनाओ में मासिक निवेश लगातार दूसरे महीने 20,000 करोड़ रुपये से अधिक है। म्यूचुअल फंड उद्योग ने मई में कुल मिलाकर 1.1 लाख करोड़ रुपये का प्रवाह देखा, जो इससे पहले अप्रैल में 2.4 लाख करोड़ रुपये था। यह प्रवाह इक्विटी के साथ ही ऋण योजनाओं में निवेश के कारण हुआ। इस निवेश के साथ ही उद्योग की प्रबंधन के तहत शुद्ध संपत्तियां (एयूएम) बढ़कर मई के अंत में 58.91 लाख करोड़ रुपये हो गईं, जो

अप्रैल के अंत में 57.26 लाख करोड़ रुपये थीं। आंकड़ों के अनुसार, इक्विटी से जुड़ी योजनाओं में मई में 34,697 करोड़ रुपये का निवेश आया, जो अप्रैल के 18,917 करोड़ रुपये के आंकड़े से काफी अधिक है।

मॉर्निंगस्टार इन्वेस्टमेंट रिसर्च इंडिया के एसोसिएट निदेशक - प्रबंधक शोध हिमांशु श्रीवास्तव ने कहा कि बीच-बीच में होने वाले सुधारों ने निवेशकों को बाजार में कुछ खरीदारी का मौका दिया। इसके अलावा, राष्ट्रीय जनतांत्रिक गठबंधन (राजग) के नेतृत्व वाली सरकार के सत्ता में वापस आने की उम्मीद ने भी निवेशकों की खरीदारी को बढ़ावा दिया।

एक्सिसकेड्स टेक्नोलॉजीज भारतीय सेना को ड्रोन प्रणाली कराएगी उपलब्ध

नई दिल्ली। इंजीनियरिंग समाधान प्रदाता एक्सिसकेड्स टेक्नोलॉजीज ने सोमवार को कहा कि वह 100 करोड़ रुपये के ठेके के तहत भारतीय सेना को ड्रोन प्रणाली उपलब्ध कराएगी। कंपनी की ओर से जारी बयान के अनुसार, मैन पोर्टेबल काउंटर ड्रोन सिस्टम (एमपीसीडीएस) को एक्सिसकेड्स द्वारा विकसित किया गया है। बयान में कहा गया, ''एक्सिसकेड्स टेक्नोलॉजीज ने भारतीय सेना से मिले 100 करोड़ रुपये के ठेके के तहत उन्नत 'काउंटर-ड्रोन' प्रणालियों की आपूर्ति शुरू कर दी है।'' कंपनी ने बिना कोई अतिरिक्त जानकारी दिए कहा कि उसका लक्ष्य 2024 के अंत तक पूरी आपूर्ति करने का है। एक्सिसकेड्स के मुख्य कार्यपालक अधिकारी एवं प्रबंध निदेशक अरुण कृष्णमूर्ति ने कहा कि यह भारतीय रक्षा बलों में 'मैन पोर्टेबल' श्रेणी में शामिल किया जाने वाला पहला 'काउंटर ड्रोन सिस्टम' है। इसको भारतीय सेना द्वारा कई स्थानों पर तैनात किया जा रहा है। हमारा लक्ष्य अपने सशस्त्र बलों की उभरती जरूरतों को पूरा करने के लिए नवाचार करना और उन्नत सुरक्षा समाधान प्रदान करना जारी रखना है।

सोना 71,800 रुपये प्रति 10 ग्राम पर स्थिर, चांदी 200 रुपये मजबूत

नई दिल्ली। राष्ट्रीय राजधानी के सर्राफा बाजार में सोमवार को सोना 71,800 रुपये प्रति 10 ग्राम पर स्थिर रहा। एचडीएफसी सिक्योरिटीज में वरिष्ठ विश्लेषक-जिंस सौमिल गांधी के अनुसार, सोमवार को सोने में सपाट कारोबार हुआ, जबकि शुक्रवार को कॉमेक्स हाजिर सोने में 3.45 प्रतिशत की गिरावट आई थी जो अगस्त, 2021 के बाद सबसे अधिक है। हालांकि, चांदी की कीमत 200 रुपये बढ़कर 92,100 रुपये प्रति किलोग्राम हो गई।

पिछले सत्र में यह 91,900 रुपये प्रति किलोग्राम पर बंद हुई थी। गांधी ने कहा, ₹दिल्ली के बाजारों में, हाजिर सोने (24 कैरेट) की कीमतें पिछले बंद से अपरिवर्तित रहकर 71,800 रुपये प्रति 10 ग्राम पर कारोबार कर रही हैं। अंतरराष्ट्रीय बाजार कॉमेक्स में हाजिर सोना 2,293 डॉलर प्रति औंस पर कारोबार कर रहा था, जो पिछले बंद भाव से एक डॉलर की गिरावट है। हालांकि, चांदी बढ़कर 29.50 डॉलर प्रति औंस पर कारोबार कर रही थी। पिछले कारोबारी सत्र में यह 29.15 डॉलर प्रति औंस पर बंद हुई थी।

रुपया 10 पैसे की गिरावट के साथ 83.50 प्रति डॉलर पर पहुंचा

मुंबई। विदेशी बाजारों में डॉलर के मजबूत होने तथा घरेलू शेयर बाजार में सुस्ती के रुख के बीच सोमवार को अंतरबैंक विदेशी मुद्रा विनिमय बाजार में रुपया अमेरिकी डॉलर के मुकाबले 10 पैसे कमजोर होकर 83.50 (अस्थायी) पर बंद हुआ। विदेशी मुद्रा कारोबारियों ने कहा कि रविवार को नरेन्द्र मोदी द्वारा रिकॉर्ड तीसरी बार प्रधानमंत्री के रूप में शपथ लेने के कारण राजनीतिक अनिश्चितता में कमी आई, जिससे रुपये की गिरावट सीमित रही। अंतरबैंक विदेशी मुद्रा विनिमय बाजार में स्थानीय मुद्रा 83.48 पर खुली और कारोबार के अंत में डॉलर के मुकाबले 10 पैसे की मजबूती के साथ 83.50 प्रति डॉलर (अस्थायी) पर बंद हुई। शुक्रवार को रुपया डॉलर के मुकाबले 13 पैसे मजबूत होकर 83.40 पर बंद हुआ था। शेयरखान बाय बीएनपी पारिबा के शोध विश्लेषक अनुज चौधरी ने कहा, ''हमें उम्मीद है कि अमेरिकी फेडरल रिजर्व द्वारा ब्याज दरों में कटौती में देरी की बढ़ती उम्मीदों के बीच मजबूत अमेरिकी डॉलर के कारण रुपया थोड़ा नकारात्मक रुख के साथ कारोबार करेगा।'' हालांकि, कच्चे तेल की कीमतों में नरमी और स्थिर सरकार को लेकर आशावाद निचले स्तर पर रुपये को सहारा दे सकता है। कारोबारी भारत और अमेरिका से मुद्रास्फीति के आंकड़ों से संकेत ले सकते हैं। निवेशक इस सप्ताह फेडरल ओपन मार्केट कमेटी (एफओएमसी) की बैठक पर भी नज़र रख सकते हैं।

सेबी सात कंपनियों की 22 संपत्तियों की आठ जुलाई को नीलामी करेगा

नई दिल्ली। बाजार नियामक सेबी ने सोमवार को कहा कि निवेशकों से गलत ढंग से पैसा जुटाने वाली सात कंपनियों से वसूली के लिए उनकी 22 संपत्तियों की आठ जुलाई को नीलामी की जाएगी। भारतीय प्रतिभूति एवं विनिमय बोर्ड (सेबी) ने कहा कि निवेशकों से अवैध रूप से धन एकत्र करने के मामले में पाइलन ग्रुप, विबग्योर ग्रुप और जीबीसी इंडसट्रियल कॉर्प समेत सात कंपनियां शामिल हैं। इनमें टावर इन्फोटेक ग्रुप, वारिस ग्रुप, टीचर्स वेलफेयर क्रेडिट एंड होल्डिंग ग्रुप और एनेक्स इन्फ्रास्ट्रक्चर इंडिया लिमिटेड भी शामिल हैं। बाजार नियामक ने कलकत्ता उच्च न्यायालय के आदेश के अनुरूप इन कंपनियों की 22 संपत्तियों की बिक्री की प्रक्रिया शुरू की है। इसके लिए न्यायमूर्ति शैलेंद्र प्रसाद तालुकदार की एक-सदस्यीय समिति बनाई गई है। सेबी ने कहा कि इन संपत्तियों में पश्चिम बंगाल में भूखंड और एक फ्लैट शामिल हैं और इनकी नीलामी 45.47 करोड़ रुपये के आरक्षित मूल्य पर की जाएगी। सेबी ने कहा कि इन संपत्तियों की नीलामी आठ जुलाई को सुबह 11 बजे से दोपहर एक बजे तक ऑनलाइन आयोजित की जाएगी। इन फर्मों ने नियामकीय मानदंडों का पालन किए बगैर निवेशकों से पैसा जुटाया था।

जयप्रकाश एसोसिएट्स के निलंबित बोर्ड ने एनसीएलएटी का किया रुख, दिवालियापन कार्यवाही को चुनौती दी

नई दिल्ली। कर्ज में डूबी जयप्रकाश एसोसिएट्स के निलंबित निदेशक मंडल ने एनसीएलटी के पिछले सप्ताह के आदेश को अपीलीय न्यायाधिकरण एनसीएलएटी में चुनौती दी है। एनसीएलटी ने कंपनी के खिलाफ दिवाला कार्यवाही शुरू करने का निर्देश दिया था।

यह याचिका राष्ट्रीय कंपनी विधि अपीलीय अधिकरण (एनसीएलएटी) की अवकाश पीठ के समक्ष सूचीबद्ध की गई, जिसने एनसीएलटी के आदेश पर अंतरिम रोक लगाने से इनकार कर दिया। एनसीएलएटी की इलाहाबाद पीठ ने तीन जून को आईसीआईसीआई बैंक द्वारा दायर की गई दिवालियापन याचिका को स्वीकार कर लिया। उसने कंपनी के निदेशक मंडल को निलंबित करने के बाद भुवन मदान को जेएएल का अंतरिम समाधान पेशेवर भी नियुक्त किया। सितंबर 2018 में आईसीआईसीआई बैंक ने आईबीसी की धारा 7 के तहत जेएएल के खिलाफ दिवालियापन याचिका दायर की थी। एनसीएलटी ने जेएएल की इस दलील को खारिज कर दिया कि उसे नकदी की कमी का सामना करना पड़ा और वह कर्ज चुकाने में चूक गई, जिसका मुख्य कारण सरकारी मंजूरी में देरी, यमुना एक्सप्रेसवे के लिए भूमि अधिग्रहण से संबंधित लंबी मुकदमेबाजी और सरकारी नीतियों में बदलाव है।

जेनसोल इंजीनियरिंग के निदेशक मंडल ने कुलजीत सिंह पोपली को कंपनी का स्वतंत्र निदेशक किया नियुक्त

नई दिल्ली। जेनसोल इंजीनियरिंग के निदेशक मंडल ने कुलजीत सिंह पोपली को कंपनी के स्वतंत्र निदेशक के रूप में नियुक्त करने को मंजूरी दे दी है। जेनसोल इंजीनियरिंग ने शेयर बाजार को दी सूचना में बताया कि पांच साल की अवधि के लिए स्वतंत्र निदेशक (गैर-कार्यकारी) के रूप में उनकी नियुक्ति कंपनी की आगामी आम बैठक में शेयरधारकों की मंजूरी के अधीन है। पोपली को ऊर्जा क्षेत्र में 40 से अधिक वर्षों का पेशेवर अनुभव है। वे क्लाइम फाइनेंस प्राइवेट लिमिटेड के संस्थापक निदेशक हैं।

इसके अलावा,निदेशक मंडल ने अली इमरान नकवी को पांच साल की अवधि के लिए कंपनी के अतिरिक्त निदेशक (कार्यकारी) के रूप में नियुक्त करने को भी मंजूरी दे दी है। उनकी नियुक्ति भी कंपनी की आगामी आम बैठक में शेयरधारकों की मंजूरी

के अधीन है। नकवी के पास 14 साल से अधिक का पेशेवर अनुभव है। वह जेनसोल इंजीनियरिंग लिमिटेड, सोलर ईपीसी इंडिया के मुख्य कार्यपालक अधिकारी के रूप में भी सेवाएं दे चुके हैं।

कल्पतरु प्रोजेक्ट्स इंटरनेशनल के बोर्ड ने दी एनसीडी के जरिए 300 करोड़ रुपये जुटाने को मंजूरी

नई दिल्ली। कल्पतरु प्रोजेक्ट्स इंटरनेशनल के निदेशक मंडल ने निजी निर्गम के आधार पर गैर-परिवर्तनीय ऋणपत्र (एनसीडी) जारी करके 300 करोड़ रुपये जुटाने के प्रस्ताव को मंजूरी दे दी है। बीएसई को दी गई सूचना के अनुसार, 1,00,000 रुपये अंकित मूल्य वाले कुल 30,000 एनसीडी जारी करने का प्रस्ताव है, जिनका कुल मूल्य 300 करोड़ रुपये होगा। सूचना के अनुसार, निदेशक मंडल की कार्यकारी समिति ने आज आयोजित अपनी बैठक में निजी निर्गम के आधार पर 300 करोड़ रुपये के असुरक्षित, रेटेड, सूचीबद्ध, प्रतिदेय, गैर-परिवर्तनीय ऋणपत्र जारी करने को मंजूरी दे दी है। एनसीडी को बीएसई लिमिटेड के थोक ऋण बाजार खंड में सूचीबद्ध किया जाएगा। आवंटन की अनुमानित तिथि 13 जून 2024 है, जबकि इसका अंतिम प्रतिदान (100 प्रतिशत) 11 जून 2027 तक किया जाएगा।

नई कैबिनेट से नीतियों में निरंतरता जारी रहेगी : नोमुरा

नई दिल्ली। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के नेतृत्व में बनी नई कैबिनेट की संरचना से संकेत मिलता है कि मौजूदा समय में सरकार की नीतियों में निरंतरता जारी रहेगी। वैश्विक ब्रोकरेज और निवेश फर्म नोमुरा की ओर से जारी एक नोट में ये बात कही गई है। मोदी सरकार के नए मंत्रिमंडल में 30 कैबिनेट मंत्री, 36 राज्य मंत्री और 5 राज्य मंत्री स्वतंत्र प्रभार के साथ बनाए गए हैं।

नोमुरा की ओर से उम्मीद की जा रही है कि नीतियों में निरंतरता जारी रखने के लिए सरकार द्वारा पोर्टफोलियो में शायद बदलाव न किया जाए। ऐसी स्थिति में निफ्टी इस वर्ष के अंत तक 24,860 का आंकड़ा तोड़ सकता है। नोमुरा ने कहा, ₹पिछले हफ्ते उभरी चिंताएं अब दूर हो चुकी हैं। कैबिनेट की संरचना भी दर्शाती है कि मौजूदा समय में नीतियों में निरंतरता जारी रहेगी।₹ ब्रोकरेज फर्म ने आगे कहा कि बड़े फैक्टर के स्थिर होने और आय में वृद्धि के चलते हम इक्विटी पर काफी सकारात्मक हैं। आने वाले बजट पर सभी की निगाहें होंगी, जो दिखाएगा कि सरकारी की नीति क्या है। हमारा मानना है कि नीतियों में कोई बड़ा बदलाव नहीं होगा।

ब्रोकरेज फर्म का कहना है कि सरकार राजकोषीय घाटे को कम करने पर ध्यान देगी और निवेश एवं पूंजीगत व्यय को जारी रखेगी। साथ ही बताया कि भारत की आर्थिक स्थिति काफी मजबूत है। इससे पहले के नोट में नोमुरा ने कहा था कि भारत में सुधार आम तौर पर राजनीति की कसौटी पर खरे उतरे हैं और हम उम्मीद करते हैं कि सरकार प्रशासनिक सुधारों की गति जारी रखेगी। जमीन और लेबर जैसे कठिन सुधारों को राज्यों पर छोड़ दिया जाएगा।

कंपनी में कोई वित्तीय अनियमितता नहीं स्वतंत्र निदेशक के इस्तीफे के बाद सुजलॉन

नई दिल्ली। अक्षय ऊर्जा समाधान प्रदाता सुजलॉन एनर्जी ने सोमवार को कहा कि स्वतंत्र निदेशक मार्क डेसेडेलेर के इस्तीफे के बाद संगठन में कोई वित्तीय अनियमितता या अनुपालन उल्लंघन नहीं हुआ है। बीएसई को दी जानकारी के अनुसार, मार्क डेसेडेलेर ने शनिवार को इस्तीफा दे दिया। आठ जून 2024 को दिए जाने वाले अपने इस्तीफे में कंपनी के भीतर कॉर्पोरेट प्रशासन के मुद्दों को उठाया।

मार्क डेसेडेलेर ने अपने इस्तीफे में कहा कि मैं पिछले 18 महीने में कंपनी द्वारा दर्ज किए गए परिचालन और वित्तीय प्रदर्शन से बहुत खुश हूं। हालांकि इसी अवधि में और हाल ही में, कई ऐसी स्थितियां आईं जहां कंपनी द्वारा लागू किए गए कॉर्पोरेट प्रशासन के मानक मेरी अपेक्षाओं पर खरे नहीं उतरे। इनमें ऐसी स्थितियां भी शामिल हैं, जहां संचार में खुलेपन व पारदर्शिता का अभाव था जिनकी (मामलों की) जानकारी में चाहता था। उन्होंने कहा कि हमने इनमें से कई स्थितियों पर चर्चा की, कुछ को निदेशक मंडल के सदस्यों के साथ साझा किया गया और मैंने हाल ही में आपको इन स्थितियों को लेकर एक पत्र भेजा है। इस उम्मीद के साथ कि इस जानकारी का उपयोग सही तरीके से किया जा सकता है।

उन्होंने कहा कि इसके मद्देनजर मैंने कंपनी के स्वतंत्र निदेशक के रूप में अपने पद और सभी संबद्ध समिति सदस्यता से इस्तीफा देने का फैसला किया। सुजलॉन एनर्जी ने कहा कि कंपनी स्पष्ट रूप से दोहराती है कि संगठन के भीतर कोई वित्तीय अनियमितता या अनुपालन उल्लंघन नहीं है। हम पिछले वर्षों में कंपनी के लिए डेसेडेलेर के योगदान की सराहना करते हैं और आभारी हैं कि उन्होंने पिछले 18 महीनों में कंपनी के परिचालन और वित्तीय प्रदर्शन पर संतोष व्यक्त किया था।

कंपनी ने कहा कि वह सभी नियामक मानदंडों का पालन करने तथा सक्रिय प्रकटीकरण तथा अनुपालन बनाए रखने के प्रति अपनी प्रतिबद्धता पर जोर देती है। कंपनी प्रक्रियागत संवर्द्धन पर डेसेडेलेर के सुझावों को रचनात्मक रूप से लेती है और बेहतर परिचालन प्रदर्शन की दिशा में अपनी यात्रा जारी रखेगी।

भीषण गर्मी व चुनाव से मांग प्रभावित, यात्री वाहन की खुदरा बिक्री मई में एक प्रतिशत घटी

नई दिल्ली। भीषण गर्मी और चुनाव के कारण मांग प्रभावित होने से मई में घरेलू यात्री वाहन खुदरा बिक्री में सालाना आधार पर एक प्रतिशत की गिरावट आई। उद्योग निकाय फाडा ने सोमवार को यह जानकारी दी। यात्री वाहनों का पंजीकरण मई में घटकर 3,03,358 इकाई रह गया, जबकि मई 2023 में यह 3,35,123 इकाई था।

फेडरेशन ऑफ ऑटोमोबाइल डीलर्स एसोसिएशन (फाडा) के अध्यक्ष मनीष राज सिंघानिया ने कहा कि डीलरों ने पिछले महीने बिक्री में गिरावट के लिए चुनाव, भीषण गर्मी और बाजार में नकदी की समस्या को प्रमुख कारण बताया है। उन्होंने कहा कि बेहतर आपूर्ति, कुछ लंबित बुकिंग और छूट योजनाओं के बावजूद नए मॉडल की कमी, तीव्र प्रतिस्पर्धा और मूल उपकरण निर्माताओं (ओईएम) द्वारा खराब विपणन प्रयासों ने भी बिक्री को प्रभावित किया। सिंघानिया ने कहा कि अत्यधिक गर्मी के कारण शोरूम में आने वाले ग्राहकों की संख्या में करीब

18 प्रतिशत की गिरावट आई है। मई में दोपहिया वाहनों की बिक्री दो प्रतिशत बढ़कर 15,34,856 इकाई हो गई, जबकि पिछले साल इसी महीने में यह 14,97,778 इकाई थी। पिछले महीने तिपहिया वाहनों की खुदरा बिक्री सालाना आधार पर 20 प्रतिशत बढ़कर 98,265 इकाई हो गई।

वाणिज्यिक वाहनों की बिक्री पिछले महीने चार प्रतिशत बढ़कर 83,059 इकाई रही, जबकि मई 2023 में यह 79,807 इकाई थी। फाडा 15,000 से अधिक मोटर वाहन डीलरशिप का प्रतिनिधित्व करता है। उसने देश भर के 1,503 आरटीओ में से 1,360 से वाहन खुदरा आंकड़े एकत्र किए हैं।

पेटीएम ने पुनर्गठन के तहत कर्मचारियों की छंटनी की

नई दिल्ली। वित्तीय प्रौद्योगिकी कंपनी वन97 कम्युनिकेशंस ने कर्मचारियों की छंटनी की है। वन97 कम्युनिकेशंस के पास पेटीएम का स्वामित्व है। कंपनी ने एक बयान में दावा किया कि वह कर्मचारियों के सुचारू रूप से स्थानांतरण के लिए उन्हें 'आउटप्लेसमेंट' (कहीं और भर्ती) सहायता उपलब्ध करा रही है। हालांकि, बयान में कितने कर्मचारियों की छंटनी की गई है इसकी संख्या उजागर नहीं की गई।

जनवरी-मार्च 2024 तिमाही में पेटीएम के कर्मचारियों (बिक्री) की संख्या तिमाही आधार पर करीब 3,500 घटकर 36,521 रह गई, जिसका मुख्य कारण भारतीय रिजर्व बैंक द्वारा पेटीएम पेमेंट्स बैंक की सेवाओं पर प्रतिबंध लगाना था। कंपनी ने सोमवार को एक बयान में कहा, ''कंपनी के मानव संसाधन दल 30 से अधिक कंपनियों के साथ सक्रिय रूप से सहयोग कर रहे हैं जो वर्तमान में कर्मचारियों की भर्ती कर रही हैं। उन कर्मचारियों को सहायता प्रदान कर रही हैं जिन्होंने अपनी जानकारी साझा करने का विकल्प चुना है, जिससे उनके तत्काल दूसरी जगह भर्ती में मदद मिल रही है।

भारतीय रिजर्व बैंक (आरबीआई) ने व्यापारियों सहित ग्राहकों के हित को ध्यान में रखते हुए पेटीएम पेमेंट्स बैंक लिमिटेड (पीपीबीएल) को किसी भी ग्राहक खाते, वॉलेट और फास्टैग में जमा, क्रेडिट लेनदेन या टॉप-अप स्वीकार करने से 15 मार्च से रोक दिया था। फिनटेक कंपनी वन97 कम्युनिकेशंस का वित्त वर्ष 2023-24 की चौथी तिमाही में घाटा बढ़कर 550 करोड़ रुपये हो गया। कंपनी ने जनवरी-मार्च तिमाही में पीपीबीएल में 39 प्रतिशत हिस्सेदारी के लिए 227 करोड़ रुपये के निवेश को बट्टे खाते में डाला है। पेटीएम के संस्थापक एवं मुख्य कार्यपालक अधिकारी (सीईओ) विजय शेखर शर्मा की पीपीबीएल में 51 प्रतिशत हिस्सेदारी है।

टी20 विश्व कप में उम्मीद जीवंत रखने के लिए पाकिस्तान की निगाहें कनाडा के खिलाफ बड़ी जीत पर

न्यूयॉर्क। अमेरिका से उलटफेर का शिकार होने के बाद भारत के हाथों हार से आहत पाकिस्तानी टीम मंगलवार को यहां टी20 विश्व कप में ग्रुप चरण के मैच में कनाडा के खिलाफ मुकाबले में बड़ी जीत दर्ज करना चाहेगी क्योंकि उसके पास खेलने के लिए ज्यादा कुछ नहीं बचा है लेकिन गंवाने के लिए सबकुछ है। ग्रुप ए के शुरूआती मैच में सह मेजबान अमेरिका से सुपर ओवर में पराजित होने के बाद पाकिस्तान को रविवार को चिर प्रतिद्वंद्वी भारत से कम स्कोर वाले मुकाबले में छह रन की हार झेलनी पड़ी।

पाकिस्तान का अब सुपर आठ में क्वालीफाई करने का मौका कनाडा और आयरलैंड के खिलाफ बड़ी जीत पर निर्भर करेगा, लेकिन इसके लिए उसे उम्मीद करनी होगी कि अमेरिकी टीम भारत और आयरलैंड के खिलाफ मुकाबलों में बुरी तरह हार जाये। इस हालत में दोनों टीमों के चार चार अंक होंगे और फैसला बेहतर नेट रन रेट से होगा। पाकिस्तान की टीम इस तरह आंकड़े अपने पक्ष में रहने की बस दुआ ही कर सकती है। अमेरिका का नेट रन रेट दो जीत के बाद +0.626 है और आयरलैंड के खिलाफ जीत उसके लिए काफी होगी। वहीं पाकिस्तान का नेट रन रेट −0.150 है जो निराशाजनक है जिससे उसे जीत नहीं बल्कि बड़े अंतर से जीत की दरकार होगी। अभी तक दोनों मैच में 2009 की चैम्पियन उस तरह की मजबूत नहीं दिखी है जिसके लिए वह कभी मशहूर हुआ करती थी। बाबर आजम की कप्तानी पर भी कोई स्पष्टता नहीं दिखती। टीम में दो गुट हैं जिसमें एक कप्तान की अगुआई में उनके करीबी मित्र मोहम्मद रिजवान और शादाब खान का है जबकि दूसरे में हाल में कप्तानी से हटाये गये शाहीन शाह अफरीदी शामिल हैं। अभी तक दोनों मैच में पाकिस्तान के लिए खेल के किसी भी विभाग में दम नहीं दिखाया और अगर उन्हें थोड़ी उम्मीद बरकरार रखनी है तो मिलकर एकजुट प्रयास करने होंगे। बाबर और शादाब खान की बदौलत पाकिस्तान ने अमेरिका के खिलाफ सात विकेट पर 159 रन का स्कोर बनाया लेकिन इस लक्ष्य का बचाव नहीं कर पाया और सुपर ओवर में हार गया। वहीं भारत के खिलाफ 120 रन के लक्ष्य का पीछा करते हुए कोई भी पाकिस्तानी बल्लेबाज उम्मीदों पर खरा नहीं उतर सका और 59 डॉट गेंद खेलकर सात विकेट पर महज 113 रन ही बना सका। आगे आने वाले मुकाबलों में पाकिस्तान की सबसे बड़ी चिंता उसके बल्लेबाजों का प्रदर्शन है जिसमें फखर जमां, इमाद वसीम, शादाब खान और इफ्तिखार अहमद ने भारत के खिलाफ ढीला शॉट खेलकर अपनी परेशानी बढ़ायी। इस मैच में मोहम्मद रिजवान ने 44 गेंद खेकर 31 रन बनाये जबकि वसीम ने 15 रन बनाने के लिए 23 गेंद खेलीं। रविवार को पाकिस्तान के लिए अच्छी चीज उसके गेंदबाजों का प्रदर्शन रहा जिसमें नसीम शाह ने 21 रन देकर तीन जबकि मोहम्मद आमिर ने 23 रन देकर दो विकेट झटके। लेकिन बचे हुए दो मैचों में उसके मुख्य तेज गेंदबाज शाहीन को और अधिक जिम्मेदारी से गेंदबाजी करनी होगी। वहीं कनाडा ग्रुप ए में दो मैच में एक जीत से तीसरे स्थान पर काबिज है।

इस प्रकार है टीम

कनाडा: साद बिन जफर (कप्तान), आरोन जॉनसन, रविंदरपाल सिंह, नवनीत धालीवाल, कलीम सना, डिलोन हेलिगर, जेरेमी गोर्डन, निखिल दत्ता, परगट सिंह, निकोलस किरटन, रेयानखान पठान, जुनैद सिद्दीकी, दिलप्रीत बाजवा, श्रेयस मोव्वा और ऋषिव जोशी।

पाकिस्तान: बाबर आजम (कप्तान), अबरार अहमद, आजम खान, फखर जमां, हारिस राऊफ, इफ्तिखार अहमद, इमाद वसीम, मोहम्मद अब्बास अफरीदी, मोहम्मद आमिर, मोहम्मद रिजवान, नसीम शाह, सैम अयूब, शादाब खान, शाहीन शाह अफरीदी, उस्मान खान।

मैच भारतीय समयानुसार रात आठ बजे शुरू होगा।

पाकिस्तान 15 ओवर के बाद रणनीति से भटक गया, खिलाड़ी दबाव में आ गए: गैरी कर्स्टन

न्यूयॉर्क। पाकिस्तान के नवनियुक्त मुख्य कोच गैरी कर्स्टन ने कहा कि भारत के खिलाफ टी20 विश्व कप के मैच में उनके बल्लेबाज 15 ओवर के बाद रणनीति के अनुसार नहीं चल पाए और अपना सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन नहीं करने के कारण दबाव में आ गए। अमेरिका और भारत से हार के बाद पाकिस्तान पर ग्रुप चरण से ही बाहर होने का खतरा मंडरा रहा है। भारत के खिलाफ रविवार को खेले गए मैच में 120 रन के लक्ष्य का पीछा करते हुए 15वें ओवर में उसका स्कोर 4 विकेट पर 84 रन था लेकिन आखिर में उसकी टीम 7 विकेट पर 113 रन ही बना पाई। कर्स्टन ने मैच के बाद संवाददाताओं से कहा,'' मेरा मानना है कि इस तरह की पिच पर स्ट्राइक रोटेट करना बेहद महत्वपूर्ण होता है। इसलिए मैं आपसे सहमत हूं कि कभी इस तरह के मैच को देखना मजेदार होता है जिसमें केवल बाउंड्री ही मायने नहीं रखती।'' उन्होंने कहा,'''लेकिन आपको 120 गेंद का वास्तव में अच्छी तरह से उपयोग करना होता है।

संक्षिप्त खबरें

ओमान पर बड़ी जीत से ग्रुप बी में शीर्ष पर पहुंचा स्कॉटलैंड

नॉर्थ साउंड। ब्रैंडन मैकमुलेन के नाबाद अर्धशतक की मदद से स्कॉटलैंड ने टी20 विश्व कप में ओमान को 41 गेंद शेष रहते हुए सात विकेट से हराकर ग्रुप बी में शीर्ष स्थान हासिल कर लिया। ओमान ने पहले बल्लेबाजी करते हुए सात विकेट पर 150 रन बनाए। उसकी तरफ से सलामी बल्लेबाज प्रतीक अठवाले ने 54 और अयान खान नाबाद 41 रन का योगदान दिया। स्कॉटलैंड की तरफ से सैफियान शरीफ सबसे सफल गेंदबाज रहे। उन्होंने 40 रन दे कर दो विकेट लिए। स्कॉटलैंड ने 13.1 ओवर में तीन विकेट पर 153 रन बनाकर आसान जीत दर्ज की। उसकी जीत के नायक मैकमुलेन रहे जिन्होंने 31 गेंद पर नाबाद 61 रन बनाए जिसमें नौ चौके और दो छक्के शामिल हैं।

रंधावा 'लीजेंड्स टूर' में शीर्ष 10 में शामिल रहे

नवारिनो (यूनान)। भारतीय गोल्फर ज्योति रंधावा ने यहां लीजेंड्स टूर यूरोप में पहले सत्र में खेलते हुए कोस्टा नवारिनो लीजेंड्स टूर ट्राफी में शीर्ष 10 स्थान हासिल किया। लीजेंड्स टूर क्वालीफाइंग स्कूल जीतने वाले रंधावा ने अंतिम दौर में इवन पार 72 का कार्ड खेला जिससे वह संयुक्त नौवें स्थान पर रहे। इससे पहले उन्होंने 68 और 66 के कार्ड खेले थे। इससे 54 होल में उनका कुल स्कोर नौ अंडर का रहा। अन्य भारतीयों में जीव मिल्खा सिंह (67-75-71) दो अंडर से संयुक्त 32वें स्थान पर रहे। अब यह भारतीय जोड़ी अगले हफ्ते आयरिश लीजेंड्स टूर्नामेंट में खेलेगी। वहीं अमेरिका के क्लार्क डेनिस ने 66 का कार्ड खेलकर अपने करियर का छठा लीजेंड्स टूर खिताब जीता।

अवनी LET एक्सेस सीरीज टूर्नामेंट में 54वें स्थान पर रहीं

मोंटौबन (फ्रांस)। भारतीय अमेच्योर गोल्फर अवनि प्रशांत ने यहां लेडीज यूरोपीय टूर एक्सेस सीरीज में मोंटौबन लेडीज ओपन में निराशाजनक 54वां स्थान हासिल किया। एक अंडर 71 के कार्ड से अच्छी शुरूआत करने वाली अवनि ने पिछले दो दौर में 78 और 82 के कार्ड खेले। इससे तीन दिन का उनका कुल स्कोर 15 ओवर 231 रहा। इससे पहले इस प्रतियोगिता में भाग ले रही दूसरी भारतीय दुर्गा निट्टूर कट हासिल करने से चूक गयी थीं। अवनि और दुर्गा दोनों 14 जून से शुरू होने वाले अमुंडी चेक लेडीज चैलेंज में खेलेंगी।

शर्मा संयुक्त 59वें स्थान पर रहे

हेल्सिंगबर्ग (स्वीडन)। भारतीय गोल्फर शुभंकर शर्मा यहां 2024 वोल्वो कार स्कैंडिनेवियन मिक्स्ड गोल्फ टूर्नामेंट के अंतिम दौर के आखिरी चार होल में शॉट ड्रॉप करने से निराशाजनक पांच ओवर 77 का कार्ड खेल पाये और संयुक्त 59वें स्थान पर रहे। इससे पहले उन्होंने 69, 69 और 71 के कार्ड खेले थे। इससे उनका कुल स्कोर दो अंडर 286 का रहा जिससे वह शीर्ष 20 से खिसककर संयुक्त 59वें स्थान पर रहे। शर्मा दो बर्डी और दो बोगी से 14 होल के बाद इवन पार के स्कोर पर थे लेकिन इसके बाद शॉट ड्रॉप करने से पहले दो दिन के शीर्ष 20 स्थान से नीचे खिसक गये। भारतीय महिला गोल्फर दीक्षा डागर इससे पहले मिश्रित स्पर्धा में कट हासिल करने से चूक गयी थीं।

बुमराह जीनियस है: रोहित शर्मा

मै चाहता हूं कि बुमराह इसी मानसिकता से आगे भी खेलें: शर्मा

न्यूयॉर्क। भारतीय कप्तान रोहित शर्मा ने जसप्रीत बुमराह को 'जीनियस' करार देते हुए कहा कि वह चाहते हैं कि यह तेज गेंदबाज टी20 विश्व कप में आगे भी इसी तरह का प्रदर्शन जारी रखे। बुमराह की शानदार गेंदबाजी की बदौलत भारत ने अपने कम स्कोर का बचाव करते हुए चिर प्रतिद्वंद्वी पाकिस्तान को 6 रन से हराया। भारतीय टीम पहले बल्लेबाजी करते हुए 119 रन पर आउट हो गई। इसके जवाब में पाकिस्तान की टीम सात विकेट पर 113 रन ही बना पाई। बुमराह ने चार ओवर में 14 रन देकर तीन विकेट लिए। रोहित ने मैच के बाद कहा,''उसके (बुमराह) प्रदर्शन में लगातार निखार आ रहा है। हम सभी जानते हैं कि वह क्या कर सकता है। उसके बारे में बहुत अधिक बात नहीं करूंगा। हम चाहते हैं कि वह पूरे विश्व कप में इसी तरह की मानसिकता के साथ खेले। वह जीनियस है। हम सभी यह जानते हैं।'' भारतीय कप्तान ने कहा कि कम स्कोर बनाने के बावजूद उनको मैच जीतने का विश्वास था क्योंकि पिच बल्लेबाजी के लिए अनुकूल नहीं थी। उन्होंने कहा,'' हमारे पास जिस तरह का गेंदबाजी आक्रमण है उससे हम आश्वस्त थे। जब वे बल्लेबाजी कर रहे थे तो हमने आपस में कहा कि अगर हमारे साथ ऐसा हो सकता है तो उनके साथ भी हो सकता है। '' भारत का स्कोर एक समय तीन विकेट पर 89 रन था लेकिन इसके बाद उसने 30 रन के अंदर सात विकेट गंवा दिए। रोहित ने स्वीकार किया कि उनकी टीम को अच्छी बल्लेबाजी करनी चाहिए थी। उन्होंने कहा,''हमने अच्छी बल्लेबाजी नहीं की। हमारी पारी के आधे भाग तक हम अच्छी स्थिति में थे। हम अच्छी साझेदारी निभाने में नाकाम रहे। हमने बात की की इस तरह की पिच पर प्रत्येक रन मायने रखता है। ईमानदारी से कहूं तो पिछले मैच की तुलना में यह अच्छा विकेट था।'' रोहित ने कहा,''इस तरह के विकेट पर थोड़ा योगदान भी बड़ा अंतर पैदा कर सकता है।'' बुमराह को लगातार दूसरे मैच में मैन ऑफ द मैच चुना गया। उन्होंने कहा कि दूसरी पारी में बल्लेबाजी करना आसान हो गया था लेकिन भारतीय गेंदबाजों ने अनुशासित प्रदर्शन किया। बुमराह ने कहा,''सच में बहुत अच्छा लग रहा है। हमने थोड़ा कम रन बनाए थे और धूप खिलने के बाद बल्लेबाजी करना थोड़ा आसान हो गया था। हमने वास्तव में अनुशासित गेंदबाजी की और इसलिए यह अच्छा लग रहा है।'' पाकिस्तान के कप्तान बाबर आजम ने कहा कि लक्ष्य का पीछा करते हुए 59 गेंद पर रन नहीं बना पाना टर्निंग प्वाइंट साबित हुआ। बाबर ने कहा,''हमने अच्छी गेंदबाजी की लेकिन बल्लेबाजी में हमने लगातार विकेट गंवाए। हमने कई गेंदे खाली जाने दी। हम फिर से पहले छह ओवर में अपेक्षित प्रदर्शन नहीं कर पाए।'' टीम की रणनीति के बारे में पूछे जाने पर बाबर ने कहा,''हमारी रणनीति सहज होकर खेलना था। हमने एक दो रन लेने और बीच में बाउंड्री लगाने की रणनीति बनाई थी लेकिन इस बीच हमने काफी गेंद खाली जाने दी और ऐसे में पुछल्ले बल्लेबाजों से बहुत अधिक उम्मीद नहीं कर सकते।'' उन्होंने कहा,''पिच अच्छी नजर आ रही थी। गेंद बल्ले पर अच्छी तरह से आ रही थी। अब हमें अंतिम दो मैच जीतने होंगे। हमारी निगाह अब अगले दो मैच पर टिकी है।''

पाकिस्तानी टीम में आमूलचूल बदलाव की जरूरत: नकवी

कराची। पाकिस्तान क्रिकेट बोर्ड (पीसीबी) के अध्यक्ष मोहसिन नकवी ने भारत के खिलाफ टी20 विश्व कप में हार के बाद कड़ी प्रतिक्रिया व्यक्त करते हुए कहा कि बाबर आजम की अगुवाई वाली टीम में आमूलचूल बदलाव करने की जरूरत है। भारत के खिलाफ न्यूयॉर्क में खेले गए मैच में पाकिस्तान के सामने 120 रन का लक्ष्य था लेकिन उसकी टीम सात विकेट पर 113 रन ही बना पाई। पाकिस्तानी मीडिया के अनुसार नकवी ने न्यूयॉर्क में कहा, ''मुझे लगता था कि मैच जीतने के लिए टीम में कुछ बदलाव करने की जरूरत है लेकिन अब लगता है कि टीम में आमूलचूल बदलाव करने होंगे।'' नकवी ने इसके साथ कहा कि अब उन खिलाड़ियों पर भी ध्यान देने की जरूरत है जो पिछले कुछ समय से टीम से बाहर हैं।

साल भर पहले तक करियर खत्म होने के बारे में पूछते थे और अब मुझे सर्वश्रेष्ठ कहते हैं: बुमराह

न्यूयॉर्क। भारतीय क्रिकेट के दुर्लभ नगीनों में शुमार तेज गेंदबाज जसप्रीत बुमराह का कहना है कि उन्हें यह बात बड़ी हास्यास्पद लगती है कि एक साल पहले तक लोग उनके करियर के खत्म होने की बातें कर रहे थे और अब उन्हें सर्वश्रेष्ठ बुलाते हैं। बुमराह ने 2022 में पीठ के निचले हिस्से में 'स्ट्रेस फ्रेक्चर' के लिए सर्जरी करायी थी जिसके कारण वह आस्ट्रेलिया में टी20 विश्व कप में नहीं खेल पाये थे। घरेलू सरजमीं पर श्रृंखला में वापसी करने से पहले उन्हें खिंचाव आ गया जिससे वह 10 से ज्यादा महीनों के लिए क्रिकेट से बाहर हो गये। लोग उनके तीनों प्रारूपों में खेलने के कार्यभार से निपटने की काबिलियत पर सवाल उठाने लगे। लेकिन बुमराह ने पिछले एक साल में तीनों प्रारूपों में मिलाकर 67 विकेट झटककर आलोचकों का मुंह बंद कर दिया जिसमें रविवार को पाकिस्तान के खिलाफ कम स्कोर वाले टी20 विश्व कप मुकाबले में 14 रन देकर तीन विकेट चटकाने वाला मैच विजयी प्रदर्शन भी शामिल है। बुमराह ने वापसी करने की उनकी काबिलियत पर शक करने वाले लोगों पर निशाना साधते हुए कहा, ''एक साल पहले तक ये ही लोग कह रहे थे कि मैं शायद फिर दोबारा नहीं खेल पाऊंगा और मेरा करियर खत्म हो गया है। लेकिन अब यह सवाल बदल गया है। '' भारत ने महज 119 रन पर सिमटने के बाद बुमराह के शानदार प्रदर्शन के बूते पाकिस्तान को सात विकेट पर 113 रन के स्कोर पर रोक दिया। बुमराह आलोचकों की 'अदलू बदलू' प्रकृति को बखूबी समझते हैं और जानते हैं कि उनके लिए सर्वश्रेष्ठ यही है कि वह खुद के नियंत्रण वाली चीजों पर काम करें।

टी-20 अंतरराष्ट्रीय में भारत के लिए तीसरे सबसे ज्यादा विकेट लेने वाले गेंदबाज बने जसप्रीत बुमराह

नई दिल्ली। भारतीय तेज गेंदबाज जसप्रीत बुमराह टी-20 अंतरराष्ट्रीय क्रिकेट में भारत के लिए तीसरे सबसे ज्यादा विकेट लेने वाले गेंदबाज बन गए हैं। बुमराह ने इस मामले में हार्दिक को पीछे छोड़ दिया है। बुमराह ने यह उपलब्धि न्यूयॉर्क के नासाउ काउंटी इंटरनेशनल स्टेडियम में आईसीसी टी20 विश्व कप मुकाबले में पाकिस्तान के खिलाफ मैच में हासिल की। भारत ने यह मैच छह रन से जीता। बुमराह ने मैच में 3.50 की इकॉनमी रेट से चार ओवर में सिर्फ 14 रन देकर तीन विकेट लिए। बुमराह ने कप्तान बाबर आजम, मोहम्मद रिजवान और इफ्तिखार अहमद के विकेट लिए। बुमराह ने 64 टी-20 अंतरराष्ट्रीय में 18.67 की औसत और 6.44 की इकॉनमी रेट से 79 विकेट लिए हैं, जिसमें 3/11 का सर्वश्रेष्ठ आंकड़ा है। हार्दिक ने 94 टी-20 अंतरराष्ट्रीय में 4/16 के सर्वश्रेष्ठ आंकड़ों के साथ 78 विकेट लिए हैं। टी-20 प्रारूप में भारत के लिए अग्रणी विकेट लेने वाले स्पिन अनुभवी युजवेंद्र चहल हैं, जिन्होंने 80 खेलों में 25.09 की औसत और 8.19 की इकॉनमी रेट से 6/25 के सर्वश्रेष्ठ आंकड़ों के साथ 96 विकेट लिए हैं। दूसरे स्थान पर भारत के स्विंग विशेषज्ञ भुवनेश्वर कुमार हैं, जिन्होंने 87 मैचों में 23.10 की औसत और 6.96 की इकॉनमी रेट से 90 विकेट लिए हैं, तथा उनका सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन 5/4 रहा है। न्यूजीलैंड के अनुभवी तेज गेंदबाज टिम साउथी टी-20 अंतरराष्ट्रीय क्रिकेट में सर्वाधिक विकेट लेने वाले गेंदबाज हैं, जिन्होंने 123 मैचों में 23.15 की औसत और 8.13 की इकॉनमी रेट से 157 विकेट लिए हैं, जिसमें उनका सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन 5/13 रहा है। मैच की बात करें तो पाकिस्तान ने टॉस जीतकर भारत को पहले बल्लेबाजी के लिए आमंत्रित किया। हालांकि, भारतीय बल्लेबाज इस कठिन सतह पर अच्छा प्रदर्शन नहीं कर पाए और स्टार ओपनर विराट कोहली (4) और रोहित शर्मा (13) बड़ा स्कोर बनाने में विफल रहे। ऋषभ पंत (31 गेंदों में 42 रन, छह चौके) एक अलग पिच पर खेल रहे थे और उन्होंने अक्षर पटेल (18 गेंदों में 20 रन, दो चौके और एक छक्का) और सूर्यकुमार यादव (आठ गेंदों में सात रन, एक चौका) के साथ उपयोगी साझेदारियां कीं। हालांकि, ऐसी कठिन पिच पर रन बनाने के दबाव में निचला मध्य क्रम बिखर गया और भारत 19 ओवर में सिर्फ 119 रन ही बना सका। पाकिस्तान के लिए हारिस राउफ और नसीम शाह ने 3-3, मोहम्मद आमिर ने दो और शाहीन शाह अफरीदी ने एक विकेट लिया।

छेत्री के बिना कतर के खिलाफ महत्वपूर्ण मैच में उतरेगी भारतीय फुटबॉल टीम

दोहा। करिश्माई स्ट्राइकर सुनील छेत्री के संन्यास लेने के बाद बदलाव के दौर में प्रवेश कर चुकी भारतीय फुटबॉल टीम की पहली परीक्षा फीफा विश्व कप क्वालीफाइंग मैच में मंगलवार को यहां कतर जैसी मजबूत टीम के खिलाफ होगी। छेत्री ने पिछले सप्ताह कोलकाता में कुवैत के खिलाफ अपना अंतिम अंतरराष्ट्रीय मैच खेला था। यह मैच गोल रहित ड्रॉ पर समाप्त हुआ था। छेत्री पिछले लगभग दो दशक से भारतीय टीम के महत्वपूर्ण अंग रहे और उनकी जगह भरना आसान नहीं होगा। उन्होंने भारत की तरफ से 151 मैच में 94 गोल किए। भारतीय टीम का नेतृत्व 32 वर्षीय गोलकीपर गुरप्रीत सिंह संधू करेंगे जिन्होंने अभी तक 72 अंतरराष्ट्रीय मैच खेले हैं तथा छेत्री के संन्यास लेने के बाद 23 सदस्यीय टीम में सबसे अनुभवी खिलाड़ी हैं। भारतीय टीम की दो बार के एशियाई चैंपियन कतर के खिलाफ कड़ी परीक्षा होगी। भारत को इस मैच में हर हाल में जीत दर्ज करनी होगी। टीम इस बात को अच्छी तरह से समझती है कि इस मैच में पराजय मिलने पर उसकी विश्व कप क्वालीफायर्स के तीसरे दौर में जगह बनाने की उम्मीद समाप्त हो जाएगी। भारत अभी पांच अंक लेकर तालिका में दूसरे स्थान पर बना हुआ है और उसका गोल अंतर −3 है। अफगानिस्तान तीसरे स्थान पर है और उसका गोल अंतर −10 है। कतर ग्रुप के विजेता के रूप में पहले ही तीसरे दौर में अपनी जगह सुरक्षित कर चुका है। यही वजह है कि भारत के खिलाफ मैच के लिए उसने युवा टीम का चयन किया है। भारतीय कोच इगोर स्टिमक ने कहा,''हमने अफगानिस्तान और कतर के बीच खेले गए मैच को देखा था। उम्मीद है कि हम जितने भी मौके बनाएंगे उनको गोल में तब्दील करने में सफल रहेंगे।'' भारतीय टीम अगर हार जाती है तो विश्वकप क्वालीफायर्स के तीसरे दौर में नहीं पहुंच पाएगी लेकिन अगर वह जीत हासिल करने में सफल रहती है तो विश्व कप के क्वालीफायर में आगे बढ़ने की मजबूत स्थिति में होगी और उसे एशिया कप में भी सीधा प्रवेश मिल जाएगा। भारत अगर कतर से ड्रॉ खेलता है तो वह तभी तीसरे दौर में जगह बना पाएगा जबकि इसी दिन कुवैत सिटी में होने वाला अफगानिस्तान और कुवैत का मैच भी ड्रॉ रहे। ऐसे में भारत 6 अंक लेकर दूसरे स्थान पर रहेगा। अफगानिस्तान के भी इतने ही अंक रहेंगे लेकिन भारत बेहतर गोल अंतर के कारण दूसरे स्थान पर रहेगा। कुवैत चार अंक लेकर अभी सबसे निचले स्थान पर है लेकिन वह भी भारत और अफगानिस्तान की तरह तीसरे दौर में जगह बनाने की दौड़ में बना हुआ है। मैच भारतीय समयानुसार रात 9.15 बजे शुरू होगा।

द. अफ्रीका ने बांग्लादेश को 114 रन का लक्ष्य दिया

न्यूयॉर्क। तंजीम हसन साकिब की अगुआई में गेंदबाजों के उम्दा प्रदर्शन से बांग्लादेश ने आईसीसी टी20 विश्व कप के ग्रुप डी मैच में सोमवार को यहां दक्षिण अफ्रीका को छह विकेट पर 113 रन के स्कोर पर रोक दिया। दक्षिण अफ्रीका तरफ से हेनरिक क्लासेन ने 44 गेंद में दो चौकों और तीन छक्कों से 46 रन की पारी खेलने के अलावा डेविड मिलर (29 रन, 38 गेंद, एक छक्का, एक चौका) के साथ पांचवें विकेट के लिए उस समय 79 रन की साझेदारी की जब टीम 23 रन पर चार विकेट गंवाने के बाद संकट में थी। बांग्लादेश की ओर से तंजीम हसन साकिब ने 18 रन देकर तीन जबकि तास्किन अहमद ने 19 रन देकर दो विकेट हासिल किए। मुस्ताफिजुर रहमान ने किफायती गेंदबाजी करते हुए चार ओवर में 18 रन दिए लेकिन कोई सफलता नहीं मिली। दक्षिण अफ्रीका के कप्तान एडेन मार्कराम ने टॉस जीतकर पहले बल्लेबाजी करने का फैसला किया जिसे तंजीम और तास्किन ने गलत साबित करने में कोई कसर नहीं छोड़ी। टीम ने पांचवें ओवर में 23 रन तक ही चार विकेट गंवा दिए। क्विंटन डिकॉक (18) ने तंजीम के पहले ओवर की लगातार गेंदों पर छक्का और चौका मारा लेकिन इस तेज गेंदबाज ने इसी ओवर में रीजा हैंड्रिक्स (00) को पगबाधा कर दिया। डिकॉक ने तास्किन पर भी छक्का जड़ा लेकिन तंजीम ने अंदर की ओर आती गेंद पर उन्हें बोल्ड कर दिया। मार्कराम भी चार रन बनाने के बाद तास्किन की गेंद पर बोल्ड हो गए।

नागल एटीपी रैंकिंग में 77वें स्थान पर

पेरिस ओलंपिक में भारत का प्रतिनिधित्व करने को तैयार

नई दिल्ली। भारतीय टेनिस खिलाड़ी सुमित नागल सोमवार को जारी एटीपी रैंकिंग में 18 पायदान की छलांग से 77वें स्थान पर पहुंच गये हैं जिससे उनका पेरिस ओलंपिक पुरुष एकल ड्रा में स्थान लगभग पक्का हो गया है। नागल के 713 एटीपी अंक हैं। नागल ने रविवार को जर्मनी में हीलब्रॉन नेकरकप 2024 चैलेंजर टूर्नामेंट में पुरुष एकल खिताब अपने नाम किया जिसकी बदौलत उन्होंने रैंकिंग में इतनी छलांग लगायी। नागल ने रविवार को फाइनल में तीन सेट तक चले मुकाबले में स्विट्जरलैंड के एलेक्जैंडर रिट्सचार्ड को दो घंटे 22 मिनट में 6-1 6(5)-7 6-3 से मात दी। सोमवार को जारी रैंकिंग से ही पेरिस ओलंपिक के लिए प्रविष्टियों पर फैसला होगा। पेरिस ओलंपिक क्वालीफिकेशन मानदंड के अनुसार पुरुष और महिला दोनों ही वर्ग में शीर्ष 56 खिलाड़ी ओलंपिक के लिए स्वतः क्वालीफाई कर लेंगे। लेकिन प्रत्येक देश से अधिकतम चार खिलाड़ी ही ओलंपिक के लिए क्वालीफाई कर सकेंगे और इस नियम से निचली रैंकिंग वाले खिलाड़ियों को ड्रॉ में प्रवेश का मौका मिलेगा। नागल ड्रॉ में अंतिम उपलब्ध रैंकिंग स्थान हासिल करने की अच्छी स्थिति में हैं। भारत के लिए अंतिम बार ओलंपिक के मुख्य ड्रा में जगह बनाने वाले खिलाड़ी सोमदेव देववर्मन थे जिन्होंने वाइल्डकार्ड की बदौलत 2012 ओलंपिक में ऐसा किया था। नागल ने फाइनल में जीत के बाद 'एक्स' पर पोस्ट किया, ''हीलब्रॉन में इस हफ्ते खिातब जीतकर काफी खुश हूं। यह मेरे लिए महत्वपूर्ण हफ्ता था और मुझे गर्व है कि जब सबसे ज्यादा मायने रखता था, तब मैं अपना सर्वश्रेष्ठ टेनिस खेलने में सफल रहा। '' उन्होंने कहा, ''अगर मैं इस तरह के मैच जीत जाता हूं तो मैं खुद पर गर्व कर सकता हूं क्योंकि मुकाबला चुनौतीपूर्ण था। पहला लक्ष्य तो अच्छा टेनिस खेलना है, रैंकिंग का स्थान इसके बाद आता है। '' यह 26 साल का खिलाड़ी इस तरह पेरिस में पुरुष एकल स्पर्धा में क्वालीफाई करने वाल पहला भारतीय होगा। नागल का यह छठा एटीपी चैलेंजर खिताब था। इस साल के शुरू में घरेलू मैदान पर चेन्नई ओपन ट्राफी जीतने के बाद यह साल की उनकी दूसरी ट्राफी थी। नागल इस समय एकल खिलाड़ियों में सर्वश्रेष्ठ रैंकिंग वाले भारतीय हैं। उन्होंने 2023 के बाद चार एटीपी चैलेंजर खिताब जीते हैं और हीलब्रॉन में यह जीत क्लेकोर्ट पर उनका चौथा खिताब है।

नीट रिजल्ट से 23 लाख छात्रों का भविष्य दाव पर

67 छात्रों को मिले पूर्णांक, कई राज्यों में विरोध

सूर्या बुलेटिन

» **ओएमआर शीट फटी मिली, हाईकोर्ट पहुंचा मामला**
» **छात्रों की ओर से सुप्रीम कोर्ट भी लगाई गई गुहार**

गाजियाबाद। नेशनल एलिजिबिलिटी कम एंट्रेंस टेस्ट यानी नीट का रिजल्ट विवादों से घिर गया है। मामला सुप्रीम कोर्ट तक पहुंच गया है। 23 लाख छात्रों को परीक्षा परिणाम पर भरोसा नहीं है। 4 जून को जब देश का नसीब ईवीएम और बैलेट बॉक्स में पड़े वोटों की गिनती से निर्धारित हो रहा था, तब उसी वक्त दूसरी ओर इन छात्रों का नसीब भी ओएमआर शीट के आधार पर तैयार हो रहा था। लेकिन अब इसी ओएमआर शीट की जांच, टॉपरों की संख्या और उन्हें मिले 100 प्रतिशत नंबरों की वजह से 23 लाख छात्रों के भविष्य पर प्रश्नवाचक चिन्ह लग गया है।

नेशनल एलिजिबिलिटी कम एंट्रेंस टेस्ट यानी नीट की इस बार की परीक्षा में 67 ऐसे छात्र हैं जिन्हें पहला स्थान हासिल हुआ है। यानी उन्हें पूरे 100 फीसदी नंबर मिले हैं। 720 में पूरे 720 नंबर। सबसे बड़ी बात कि टॉप करने वाले 67 बच्चों में से 6 बच्चे ऐसे हैं जिन्होंने एक ही परीक्षा केंद्र पर परीक्षा दी है, जो कि हरियाणा के झज्जर में है। वहीं इस परीक्षा में कुछ बच्चों के नंबर 718 और 719 आए हैं, जो परीक्षा की स्कीम के लिहाज से गणितीय रूप से बिल्कुल भी मुमकिन नहीं है।

दरअसल, इस परीक्षा में एक सवाल सही होने पर छात्र को 4 अंक मिलते हैं. वहीं किसी सवाल का गलत जवाब देने पर मिले हुए अंकों में से एक अंक काट लिया जाता है। अब मानिए कि किसी छात्र ने सभी सवालों के जवाब लिखे जिसमें सिर्फ एक जवाब गलत हुआ तो उसे 715 नंबर मिलेंगे। अब ऐसे में सवाल उठ रहा है कि फिर किस आधार पर और किस गणित से कुछ छात्रों को 718 और 719 नंबर मिले हैं। इसके अलावा सवाल इस बात पर भी उठ रहा है कि जब नीट का रिजल्ट 14 जून को घोषित होना था तो इसे 4 जून को क्यों घोषित किया गया? क्या ऐसा जान बूझ कर इसलिए किया गया ताकि लोगों का ध्यान चुनाव के परिणामों पर टिका रहे और नीट के रिजल्ट पर कोई बात ना हो? ये बड़े सवाल हैं, जिनका जवाब शायद भविष्य में मिल जाएगा।

ओएमआर शीट की गलत जांच

ये मामला मध्य प्रदेश की राजधानी भोपाल से सामने आया है। यहां की रहने वाली निशिता सोनी ने जब अपना रिजल्ट देखा तो वो हैरान रह गईं। उन्हें 340 नंबर मिले थे जबकि, निशिता का दावा है कि उन्हें 617 अंक मिलने चाहिए थे। दरअसल, रिजल्ट के साथ अब छात्र की ओएमआर शीट भी आती है, जिससे छात्र अपने अंकों को फिर से जांच सके. निशिता ने जब अपना ओएमआर शीट चेक किया तो पता चला कि उसने कुल 200 सवालों में से 178 सवालों का जवाब दिया था। इसमें 159 सवालों के जवाब सही थे और 19 के गलत। ऐसे में निशिता को कुल 617 नंबर मिलने चाहिए थे। हालांकि, रिजल्ट में निकिता को 340 अंक दिए गए हैं। अब निशिता इस मामले को लेकर जबलपुर हाईकोर्ट पहुंची हैं।

कोचिंग संस्थान भी नाराज

छात्रों के साथ-साथ देश में बड़े-बड़े कोचिंग संस्थान चलाने वाले शिक्षक भी नीट के रिजल्ट से नाराज हैं। फिजिक्स वाला के संस्थापक अलख पांडे ने इस मुद्दे पर मुखरता से अपनी बात रखी है और उन्होंने सोशल मीडिया पर एक वीडियो शेयर करते हुए कहा है कि वह नीट के रिजल्ट की गड़बड़ियों को लेकर अब नेशनल टेस्टिंग एजेंसी को एक लीगल नोटिस भेजेंगे। वहीं मोशन एजुकेशन नाम की संस्था चलाने वाले नितिन विजय भी इस रिजल्ट से नाराज हैं और सोशल मीडिया पर इसके खिलाफ मुहिम चला रहे हैं। इसके अलावा वो सुप्रीम कोर्ट भी जाने की बात कर रहे हैं।

जूनियर डॉक्टर्स की मांग

इंडियन मेडिकल एसोसिएशन (आईएमए) जूनियर डॉक्टर्स नेटवर्क ने नीट में कथित अनियमितताओं की सीबीआई से जांच कराने की मांग की है और एनटीए के अध्यक्ष प्रदीप कुमार जोशी को एक पत्र लिखा है। इसमें डॉक्टरों के संगठन ने सभी छात्रों के लिए एक निष्पक्ष और पारदर्शी मूल्यांकन प्रक्रिया सुनिश्चित करने के लिए दोबारा नीट की परीक्षा कराने का भी अनुरोध किया है।

पेपर लीक का शक क्यों

5 मई 2024 को जब देश भर में नीट की परीक्षा का आयोजन हो रहा था, उसी वक्त पटना पुलिस को जानकारी मिली की नीट यूजी परीक्षा का प्रश्न पत्र लीक कराने की कोशिश की जा रही है। 6 मई को बिहार पुलिस ने इस पर कार्रवाई करते हुए, 13 अभियुक्तों को न्यायिक हिरासत में लिया था और उनसे पूछताछ हुई थी। हालांकि, पेपर लीक को लेकर पुलिस ने कुछ भी स्पष्ट नहीं कहा था। उस वक्त इस पूरे मामले में पटना के एसएसपी राजीव मिश्रा ने कहा था कि पेपर लीक हुआ या नहीं ये संवेदनशील विषय है। इस समय इस पर निष्कर्ष देना सही नहीं होगा, क्योंकि ये 24 लाख परीक्षार्थियों के भविष्य से जुड़ा अति संवेदनशील बिंदु है।

छात्रों का आंदोलन

उत्तर प्रदेश जो हमेशा सही उत्तर देने के लिए जाना जाता है, वहां के छात्रों ने नीट परीक्षा के परिणामों में हुए घालमेल को लेकर प्रदर्शन करना शुरू कर दिया है। वाराणसी से लेकर कानपुर तक छात्रों को हुजूम सड़कों पर धीरे-धीरे निकल रहा है। वहीं दूसरी ओर प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की संसदीय सीट वाराणसी में भी छात्रों ने प्रदर्शन किया। वहां के छात्र नीट परीक्षा के रिजल्ट में गड़बड़ी का आरोप लगाते हुए इसे निरस्त करने की मांग की। छात्रों का साफ कहना है कि नीट परीक्षा के परिणामों में धांधली और गड़बड़ी हुई है, इस वजह से इसकी जांच हो और नीट की परीक्षा फिर से कराई जाए।

एनटीए का जवाब

नेशनल टेस्टिंग एजेंसी ने इन तमाम सवालों का जवाब देते हुए 6 जून को एक प्रेस रिलीज जारी किया। इसमें एनटीए ने कहा कि कुछ छात्रों को 718 या 719 नंबर इसलिए मिले हैं, क्योंकि उन्हें ग्रेस मार्क्स दिए गए हैं। ऐसा इसलिए किया गया क्योंकि उन्हें परीक्षा केंद्र पर कम वक्त मिला था। वहीं जिन छात्रों को 720 में 720 नंबर मिले, उन पर एनटीए ने कहा कि ऐसा इसलिए हुआ क्योंकि इन छात्रों को फिजिक्स के एक प्रश्न के उत्तर के लिए रिविजन मार्क्स दिए गए हैं। जल्दी रिजल्ट जारी करने पर एनटीए ने जवाब दिया कि जल्द से जल्द परिणाम घोषित करना एक तय प्रक्रिया है और इस बार एनटीए ने ये काम 30 दिनों के भीतर किया है। वहीं इसके बाद 8 जून को नेशनल टेस्टिंग एजेंसी ने एक प्रेस कॉन्फ्रेंस की और उसमें एनटीए के डायरेक्टर जनरल सुबोध कुमार सिंह ने कहा कि यूपीएससी के पूर्व अध्यक्षों और शिक्षाविदों की समिति नीट में हुई गड़बड़ी की जांच करेगी और अगले 7 दिनों में ये समिति अपनी रिपोर्ट पेश कर सकती है। हालांकि, ये जांच पूरे मामले की नहीं होगी, बल्कि कथित गड़बड़ी की जांच केवल 6 सेंटर और 1600 उम्मीदवारों तक सीमित रहेगी। हालांकि, एनटीए ने इस पर कोई जवाब नहीं दिया कि आखिर रिजल्ट की घोषणा करने के लिए 4 जून जैसा दिन ही क्यों चुना गया, जब लोकसभा के परिणाम आने थे।

क्या फिर से कराई जा सकती है परीक्षा

ऐसा नहीं है कि नीट की परीक्षा अगर दोबारा कराई जाएगी तो ऐसा पहली बार होगा। साल 2015 में जब एमबीबीएस और बीडीएस एडमिशन के लिए नेशनल लेवल मेडिकल प्रवेश परीक्षा एआईपीएमटी यानी ऑल इंडिया प्री मेडिकल टेस्ट हुआ था, तब उस समय भी पेपर लीक की खबरें आईं थीं। उस वक्त आरोप ये लगा था कि कुछ छात्रों को एग्जाम सेंटर पर इलेक्ट्रॉनिक डिवाइसों से पहले ही प्रश्नों के उत्तर भेज दिए गए थे। जब ये मामला कोर्ट पहुंचा तो सुप्रीम कोर्ट ने कहा कि मेडिकल एंट्रेंस एग्जाम कैंसिल किया जाएं और परीक्षा 4 हफ्ते में दोबारा से ली जाए। अब इस बार सुप्रीम कोर्ट क्या फैसला करेगा ये देखने वाली बात होगी।

सोशल मीडिया पोस्टों से अयोध्या का संत समाज नाराज

सूर्या बुलेटिन

गाजियाबाद। लोकसभा चुनाव के नतीजे आ चुके हैं और भाजपा को अयोध्या सीट पर जोरदार झटका लगा है। यहां से सपा प्रत्याशी अवधेश प्रसाद ने जीत दर्ज की है। उनको 5,54,289 वोट मिले, जबकि बीजेपी के उम्मीदवार लल्लू सिंह को 4,99,722 वोट मिले। सपा उम्मीदवार 54,567 वोट से जीत गए। अयोध्या की सीट पर बीजेपी हार गई। इस बात को लेकर अयोध्या वासियों के लिए देश भर से लोग सोशल मीडिया पर आक्रोश भरे पोस्ट कर रहे हैं।

रामनगरी अयोध्या की फैजाबाद लोकसभा सीट बीजेपी का हारना अयोध्या वासियों के खिलाफ सोशल मीडिया में जबरदस्त लोगों का आक्रोश भरा पोस्ट से अब साधु संतों समेत जनता में नाराजगी देखने को मिल रही है। संत समाज का कहना है कि बीजेपी प्रत्याशी लल्लू सिंह को अयोध्या की विधानसभा से तो जीत हासिल हुई है, लेकिन फैजाबाद लोकसभा में चार अन्य विधानसभा भी है जहां से वह हारे हैं। ऐसे में बीजेपी के वरिष्ठ नेताओं को आत्म मंथन और चिंतन करने की जरूरत है।

अयोध्यावासियों के खिलाफ पोस्ट पर भड़के दिनेशाचार्य

जगतगुरु राम दिनेशाचार्य ने सोशल मीडिया में अयोध्या वासियों के खिलाफ पोस्ट को लेकर नाराजगी व्यक्ति की है। उनका कहना है कि इस तरीके के पोस्ट उचित नहीं हैं। बीजेपी के लल्लू सिंह को अपनी हार का खुद से चिंतन करना बहुत जरूरी है। अयोध्या विधानसभा से तो वह जीते ही हैं, लेकिन फैजाबाद की अन्य विधानसभा से वह क्यों हारे।

इसके लिए आप मंथन चिंतन करना जरूरी है। अयोध्या से उनको चार लाख से ज्यादा वोट मिले हैं। वहीं, बड़ा भक्तमाल मंदिर के महंत अवधेश दास का कहना है कि यह बहुत ही दुर्भाग्यपूर्ण है अयोध्या की जनता ने 1 लाख 4 हजार वोट दिया, 1 लाख 4 हजार वोट अवधेश प्रसाद को मिले। अयोध्या की जनता ने पूरा प्रयास किया है फिर भी कहीं न कहीं कोई कमी रही है, जिसकी वजह से अयोध्या वासियों को ताना सुनना पड़ रहा है।

अयोध्या विधानसभा से जीते भाजपा प्रत्याशी, अन्य विधानसभाओं में हुई हार

महंत अवधेश दास मानते हैं कि वीवीआईपी व्यवस्था ने अयोध्या की जनता को आहत किया है। राम मंदिर की प्राण प्रतिष्ठा के बाद प्रतिदिन वीआईपी लोग आ रहे थे, जिनके आने से रास्ते बंद कर दिए जाते थे, जनता परेशान होती थी, शासन प्रशासन से इस बारे में बात भी की गई लेकिन, कोई हल नहीं निकला।

यू ट्यूब चैनल हिन्दी खबर के खिलाफ मुकदमा दर्ज करने की मांग

पुलिस पर चैनल के दबाव में गलत मुकदमा दर्ज करने और गलत जांच का भी आरोप

सूर्या बुलेटिन

गाजियाबाद। वेव सिटी क्षेत्र में अवैध धन उगाही के प्रयास में यू ट्यूब चैनल की टीम के साथ हुई घटना के मामले को लेकर नगर निगम पार्षद परमोश यादव ने अपर पुलिस आयुक्त दिनेश पी को ज्ञापन देकर मामले में उच्चस्तरीय जांच की मांग की है। परमोश यादव का आरोप है कि इस मामले में पुलिस ने यू ट्यूब चैनल के दबाव में निराधार मुकदमा दर्ज किया है और मामले की जांच में भी फजीर्वाड़ा कर रही है। परमोश यादव ने अपर पुलिस आयुक्त से इस निराधार मुकदमे को रद्द करने या उच्चस्तरीय जांच के साथ ही ग्रामीणों से अवैध धन उगाही का प्रयास करने वाले यू ट्यूब चैनल हिन्दी खबर के खिलाफ जांच मांग की है। ऐसा नहीं होने पर परमोश यादव ने नगर निगम के अन्य पार्षदों और सैकड़ों महिलाओं के साथ मुख्यमंत्री आवास पर जाकर न्याय मांगने की बात भी कही है।

» **नगर निगम पार्षद परमोश यादव ने अपर पुलिस आयुक्त को सौंपा ज्ञापन**
» **मांगें नहीं मानने पर अन्य पार्षदों और सैकड़ों महिलाओं के साथ सीएम आवास पहुंचेगीं परमोश यादव**

परमोश यादव नगर निगम के वार्ड संख्या 42 से निर्वाचित (भाजपा) पार्षद हैं। परमोश यादव ने का कहना है कि उनके पति राजेश यादव और अन्य के खिलाफ वेव सिटी थाने में पुलिस ने एक यू-ट्यूब चैनल हिंदी खबर जो लोगों को ब्लैकमेल करते हैं, के दबाव में निराधार मुकदमा दर्ज कर लिया है। इस मामले में पुलिस की कार्यशैली भी सवालों के घेरे में है। पुलिस ने सीसीटीवी फुटेज के आधार पर मुकदमा दर्ज करने की बात कही है,जबकि सीसीटीवी फुटेज में मेरे पति राजेश यादव और उनके भाई अनिल यादव किसी भी तरह की मारपीट करते नजर नहीं आ रहे हैं। बल्कि मारपीट कर रहे स्थानीय लोगो से उन्हें छुड़ाने के प्रयास कर रहे है। इसके अलावा वेव सिटी पुलिस ने पप्पन यादव के खिलाफ मोबाइल लूट का मामला बनाया है और उसे घटना स्थल पर झाड़ियों से बरामद भी दिखाया है। यदि मोबाइल लूटा गया होता तो क्या घटनास्थल पर ही पड़ा होता। इसमें भी पुलिस की कार्यशैली सवालों के घेरे में है। पुलिस ने इस मामले में जबरन धारा 354 लगाई है जबकि सीसीटीव फुटेज से साफ हो रहा है कि महिला पत्रकार को किसी ने हाथ तक नही लगाया है और उन्ही कपड़ो में वो अपने आप पुलिस चौकी गयी वहां का सीसीटीवी फुटेज भी साफ बता रहा है कि महिला के कपड़े बिल्कुल साफ और सही हैं, उसके बाद अपने चैनल पर पहुंच कर शाम तक उन्ही कपड़ो में दिखाई पड़ रही है और बाद में कहती है कि मेरे कपड़े फाड़ दिए थे। जिसके बाद पुलिस ने अपनी जीडी रिपोर्ट में पहले 354 की 354 क कर दी फिर 354 ख की वृद्धि की है। यह पूरी तरह से अन्याय है। हमारी मांग है कि इस मामले की निष्पक्ष जांच की जाए। ब्लैक मेलिंग करने वाले यू-ट्यूब चैनल हिंदी खबर की पत्रकार ने आवास निर्माण की वीडियो बनाकर अवैध धन की मांग की थी। जब स्थानीय लोगो ने रुपए देने से इनकार कर दिया तो महिला पत्रकार ने निर्माण को तुड़वाने की धमकी दी। जिसके बाद स्थानीय लोग आक्रोशित हो गए थे और उन्होंने ब्कैल मेलिंग करने वाले यू ट्यूब चैनल की टीम को घेर लिया था। मेरे पति का ऑफिस घटना स्थल के पास में ही है। जब उन्हें इस घटना की जानकारी हुई तो वह अपने चचेरे भाई अनिल यादव के साथ मौके पर पहुंचे और यू ट्यूब चैनल हिंदी खबर की टीम को लोगो से बचाकर पुलिस को बुलाकर वहां से सुरक्षित निकाला। चूंकि मेरे पति क्षेत्र के संभ्रांत और सम्मानित व्यक्ति हैं और जनसेवा में कार्यरत रहते हैं, इसलिए उन्होंने मुसीबत में फंसे लोगों को (जो अवैध धन उगाही की मांग के कारण लोगों के आक्रोश का शिकार होने वाले थे) वहां से सुरक्षित निकालना अपनी फर्ज समझकर कार्य किया। इसके उलट ब्लैक मेल करने वाले यू ट्यूब चैनल हिंदी खबर की पत्रकार ने मेरे पति के खिलाफ ही फर्जी तहरीर थाने पर दे दी और पुलिस ने भी चैनल के दबाव में निराधार रिपोर्ट दर्ज करके कार्रवाई कर दी। परमोश यादव ने ब्लैक मेलिंग करने वाले यू ट्यूब चैनल हिंदी खबर के दबाव में निराधार रूप से दर्ज की गई इस रिपोर्ट को रद्द किए जाने या फिर मामले की निष्पक्ष जांच की मांग की है। इसके साथ ही यू ट्यूब चैनल हिंदी खबर की पत्रकार की ओर से की गई अवैध धन उगाही की मांग की भी जांच की जाए, जो उसने स्थानीय लोगो से की थी। परमोश यादव ने अवैध धन उगाही का प्रयास करने वाली रिपोर्टर और उसके संरक्षकों के खिलाफ उचित धाराओं में रिपोर्ट दर्ज करके कार्रवाई की मांग की है। परमोश यादव का कहना है कि मांगों पर संज्ञान लेकर कार्रवाई नहीं करने पर अन्य नगर निमग पार्षदों और 200 से ज्यादा महिलाओं के साथ अपनी इन्हीं मांगों को लेकर लखनऊ में मुख्यमंत्री आवास पर जाकर अपने लिए न्याय मांगने के लिए वह विवश हो जाएंगी।

100-बात की बात

अनिल यादव

सूर्या बुलेटिन

अब देश में नहीं बचेंगे गुस्ताख ए नबी

केंद्र में एक बार फिर से नरेंद्र मोदी की सरकार बन गई है। लगातार तीसरी बार बनी मोदी सरकार के पहले दो कार्यकालों में जिहादी मानसिकता वालों को लेकर न तो कोई ठोस योजना बनाई गई और न ही कोई कार्रवाई की गई। हालात ऐसे हैं कि केंद्र सरकार ने मुस्लिमों को कई तरह के लाभ दिए, उन्हें फ्री राशन दिया, फ्री मकान दिए इसके बावजूद मुस्लिमों ने भाजपा को वोट तक नहीं दिया। साफ है, देश में रहने वाले 90 फीसदी से ज्यादा मुसलमानों के दिमाग में गजवा-ए-हिन्द का ही सपना पल रहा है। तमाम सुविधाएं मिलने के बाद भी देश का मुसलमान देश की सरकार को अपना नहीं मानता और किसी भी तरह से सरकार का सहयोग करने को तैयार नहीं है। बात केवल वोट की ही नहीं है, केंद्र सरकार की किसी भी योजना में मुस्लिमों की भागीदारी न के बराबर ही रहती है। स्वच्छ भारत अभियान से लेकर सरकार को टैक्स देने तक में मुसलमानों की भागीदारी न्यूनतम है। जबकि केंद्र सरकार की प्रत्येक योजना का लाभ मुसलमान लेना चाहता है, लेकिन देश के लिए, सरकार के लिए कुछ भी करने को तैयार नहीं है। मुसलमान देश में इस्लामिक कानून लागू करवाना चाहते हैं और इसके लिए पूरी दुनिया के मुसलमानों से जुड़े हैं, फिर भले ही वे आतंकवादी ही क्यों न हो। देश के मुसलमानों की इस मानसिकता के चलते ही देश में तीसरी बार मोदी सरकार बनते ही इस्लामिक स्टेट खुरासान प्रोविंस ने अपने मुख पत्र वॉइस ऑफ खुरासान का 36वां अंक जारी किया। इस अंक के पहले पेज में ही पोस्टर बनाकर लिखा गया है कि 'इंडियन किंग महमूद गजनवी का एक बार फिर भारत को सामना करने के लिए तैयार रहें। आतंकी संगठन की ओर से अपने मुखपत्र में एक कथित महिला का भी जिक्र किया है, जिस पर गुस्ताख ए नबी का आरोप लगाया गया है। जो कि भाजपा नेत्री हैं। गुस्ताख एक नबी की सजा मौत निर्धारित की गई है। देश में ऐसे सैकड़ों गुस्ताख ए नबी है, जिन्हें जिहादी मानसिकता वाले सजा ए मौत देना चाहते हैं और भारत के मुसलमानों के भरोसे पर उन्हें सजा ए मौत दे भी सकते हैं। इस संगठन को पूरा भरोसा है कि उनके इस आतंकी अभियान में भारत का मुसलमान उनका पूरा साथ देगा। देश के मुसलमानों के इसी रवैये के कारण आतंकी संगठन भारत के खिलाफ आतंकी कार्रवाई करते हैं। जम्मू कश्मीर में श्रद्धालुओं से भरी बस पर आतंकी हमला इसी बात का प्रमाण है कि इस्लामिक स्टेट खुरासान प्रोविंस कभी भी अपनी कही हुई बात पर अमल करते हुए देश में हमला कर सकता है। 100 बात की एक बात यह है कि पिछले एक दशक के दौरान बतौर प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने मुसलमानों को बुनियादी सुविधाएं प्रदान की हैं, या यूं कहे कि उन्हें मजबूत करने का काम किया है। इसके बावजूद मुसलमानों ने मोदी का साथ नहीं दिया। अब तीसरे कार्यकाल में उन्हें कठोर निर्णय लेने चाहिए, वरना वह दिन दूर नहीं जब भारत सिविल वार के मुहाने पर खड़ा हो जाएगा। लेकिन, अब सरकार इतनी कमजोर है कि कठोर निर्णय नहीं ले पाएगी, जिसका जिम्मेदार कौन होगा। यदि इस्लामिक स्टेट खुरासान प्रोविंस देश में 100 करोड़ हिन्दुओं का कत्ल करने के लिए हमला करता है तो उसाक जिम्मेदार कौन होगा। देश को इस्लामिक गर्त में झोंकने का जिम्मेदार कौन होगा। जनसंख्या के आधार पर जिहादी मानसिकता वाले देश पर कब्जा करने का प्रयास करेंगे। ऐसे में देश में रहने वाले हिन्दुओं का हाल कश्मीरी पंडितों जैसा ही होगा। उन्हें मार दिया जाएगा या फिर उन्हें इस्लाम अपनाना पड़ेगा। इस्लाम अपनाने पर भी उनकी मुश्किलों कम नहीं होंगी। अब जरूरी है कि देश के सिविल वार से बचाने के लिए कठोर निर्णय लिए जाएं और इस्लामिक स्टेट खोरासन प्रोविंस और इसके जैसे संगठनों को सहयोग करने वालों को खींचकर बाहर निकाला जाए। देश में फैल चुकी इस्लामिक आतंक की जड़ों को खोदकर खत्म करने की जरूरत है।